विक्रम संवत् 2080 ▪ भाद्रपद/आश्विन (क्वॉर) मास(7) ▪ 01 सितंबर 2023 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आज़ादी का अमृत महोत्सव
G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

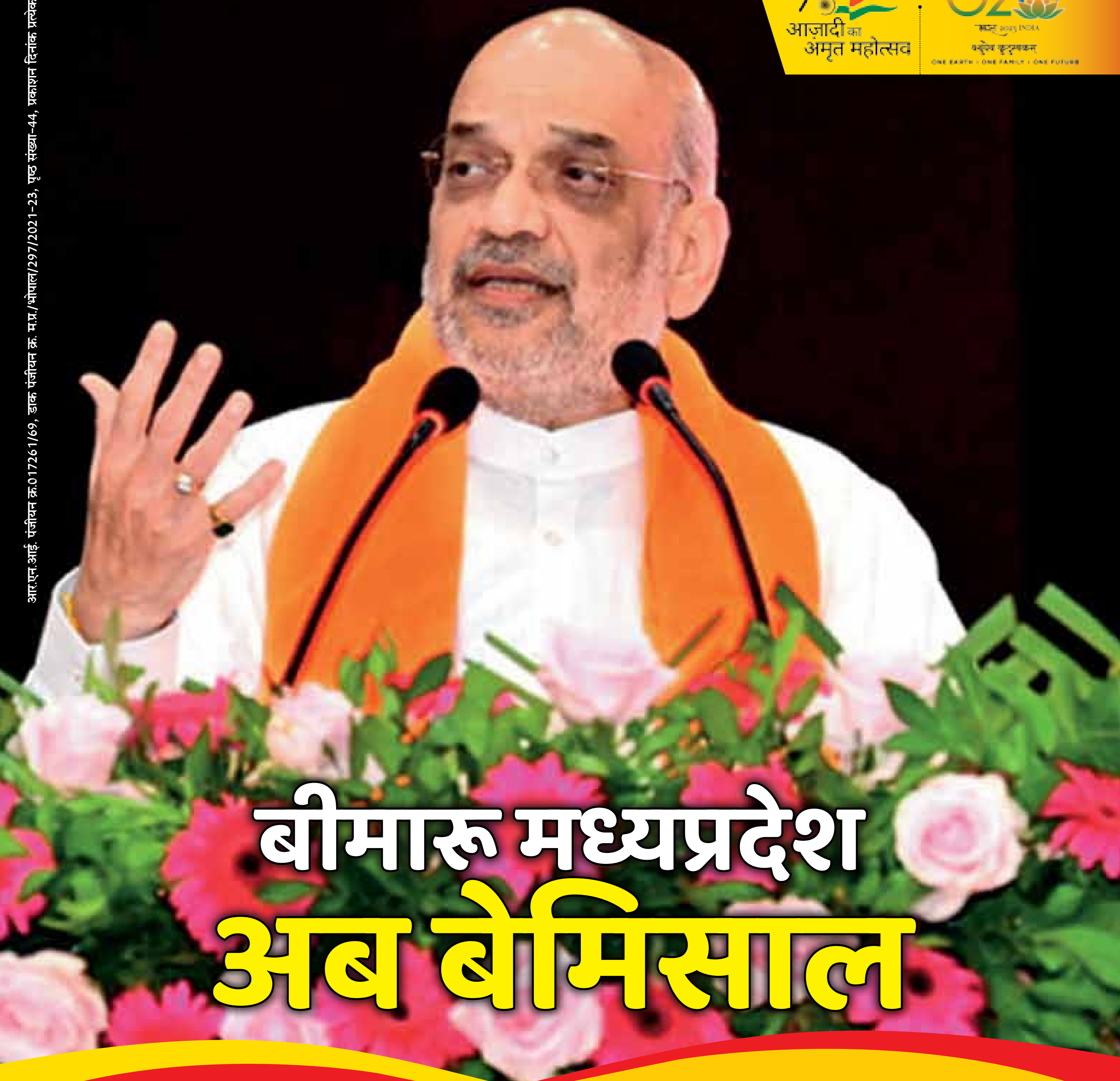

बीमारू मध्यप्रदेश अब बेमिसाल

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मध्य प्रदेश रोजगार मेले को संबोधित किया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने 77वें स्वतंत्रता दिवस पर भाजपा मुख्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बच्चों के साथ रक्षा बंधन का त्योहार मनाया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को ग्रीस की राष्ट्रपति सुश्री कतेरीना एन. सकेलारोपोलू द्वारा ग्रैंड क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ ऑनर से सम्मानित किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वतंत्रता दिवस पर महात्मा गांधी जी की समाधि की परिक्रमा की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की पुण्य तिथि पर सदैव अटल स्थित उनकी समाधि पर परिक्रमा की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने चंद्रयान 3 की सफल लैंडिंग का अवलोकन किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

■ जनता भाजपा के विकास के साथ

कवर स्टोरी 05

■ बीमारू मध्यप्रदेश अब बेमिसाल : अमित शाह

05

07

33

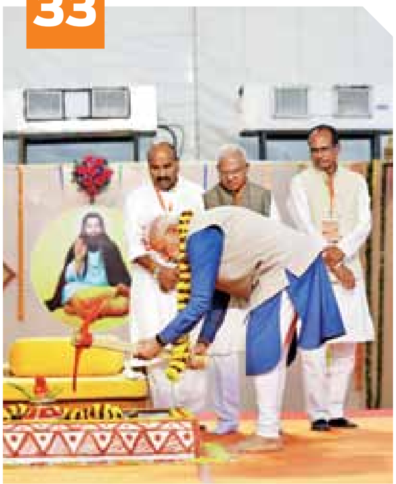

■ **सपने संकल्प बनाने हैं :** 07
» भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण के खिलाफ पूरे सामर्थ्य...

■ **प्रदेश कार्यसमिति की बैठक :** 16
» भाजपा का भगवा लहराना है- अमित शाह...

■ **विकसित भारत की मजबूत नींव :** 18
» 2047 में विकसित हिन्दुस्तान होगा- नरेन्द्र मोदी...

■ **प्रदेश कार्यसमिति :** 28
» राजनीतिक-प्रस्ताव...

■ **प्रदेश कार्यसमिति :** 32
» विजय संकल्प लेकर निकलें कार्यकर्ता - शिवराज सिंह चौहान...

■ **सामाजिक समरसता :** 33
» रविदास जी की शिक्षाएं एकजुट करती रहेंगी...

■ **मन की बात :** 36
» आत्मनिर्भर भारत हर देशवासी का अभियान है...

■ **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 40
» आज सिन्धु में ज्वार उठा है...

■ **विचार प्रवाह :** 41
» राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना...

■ मुख्य व्रत-त्यौहार

2. कजरी तीज 3. बहुला, गणेश चतुर्थी व्रत 4. गोगा पंचमी, भाई-मिन्ना 5. हरछठ व्रत 7. श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत 10. जया एकादशी 11. गोवत्स द्वादशी 12. प्रदोष व्रत 13. शिव चतर्दशी व्रत 14. कुशग्रहणी स्नानदान श्रा. अमा. 15. स्ना. दा. अमावस 18. हरितालिका तीज व्रत,विनायकी चतुर्थी व्रत 19. ऋषि पंचमी 21. मोरयाई छठ, संतान सांते 22. दूर्वाष्टमी, राधाष्टमी 25. जलझूलनी / डोल एकादशी 27. प्रदोष व्रत 28. अनंत चौदस, भ. गणेश विसर्जन 29. स्नानदान व्रत पूर्णिमा 30. पितृपक्ष प्रारम्भ

■ मुख्य जयंती-दिवस

5. शिक्षक दिवस, डॉ. राधाकृष्णन ज. 7. महर्षि नवल, संत ज्ञानेश्वर जयंती 8. माँ वेलांकनी पर्व 13. स्वामी ब्रह्मानंद लोधी निर्वाण दि. 14. राष्ट्रीय हिन्दी दिवस 15. इं. मोक्षगुंडम विश्वश्वैरिया जयंती अभियंता दिवस 18. राजा शंकरशाह, रघुनाथशाह ब.दि., गुरू रामदास पुण्यतिथि 25. पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती 27. विश्व पर्यटन दिवस 28. लता मंगेशकर जयंती, सद्गुरू धनीदेव परमधाम वास दिवस 29. गुरू अमरदास पुण्यतिथि

वर्ष-55, अंक : 07, भोपाल, सितंबर 2023

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

श्रेष्ठ आदर्शों की ऐसी अखण्ड संस्कार परंपरा से ही समाज जीवित व एकात्म रहकर अपनी प्रगति करता है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

जनता भाजपा के विकास के साथ

म. प्र. और देश की जनता ने ठान लिया है कि वह श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा के विकास के साथ है। आगामी 2023 के विधानसभा चुनाव और 2024 के लोकसभा चुनाव में निश्चित ही भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी।

आगामी नवम्बर में म.प्र. में विधान सभा के चुनाव होने वाले हैं। चुनाव को लेकर के प्रदेश के भाजपा कार्यकर्ताओं में अपूर्व उत्साह है। म. प्र. के ऊर्जावान मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा, श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं अन्य वरिष्ठ नेतागण लगातार चुनाव को लेकर के प्रवास व कार्य कर रहे हैं। आधुनिक राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले श्री अमित शाह जी समय-समय पर मार्गदर्शन देने म. प्र. में लगातार आ रहे हैं। इतिहास में दृष्टि डालें तो म.प्र. में आजादी के बाद से लगातार कई वर्षों तक कॉंग्रेस का शासन रहा। म.प्र. अनादिकाल से खनिज व प्राकृतिक धन सम्पदा से भरपूर रहा है। यहां की युवा शक्ति ऊर्जा से भरपूर है। अन्य राज्यों की अपेक्षा म. प्र. सदैव से शांति का टापू रहा है। इतना सब होने के बाद और लगातार कॉंग्रेस का शासन होने के बाद भी म. प्र. विकास की दौड़ में कॉंग्रेस के शासनकाल में हमेशा अन्तिम पायदान पर ही खड़ा रहा। उसका नतीजा यह हुआ कि म. प्र. को कॉंग्रेस के शासनकाल के दौरान बीमारू प्रदेश की श्रेणी में डाल दिया गया। उस समय म. प्र. में सड़कों का बहुत ज्यादा खराब होना सामान्य सी बात होती थी। बिजली की हालत इतनी दयनीय थी कि बिजली का जाना सामान्य प्रक्रिया थी और बिजली का आना खबर बन जाया करती थी। अव्यवस्था और कुशासन से म. प्र. त्रस्त था। म. प्र. के हालात बदतर थे। इसीलिए उस समय के कॉंग्रेस के एक पूर्व मुख्यमंत्री को आज भी प्रदेश की जनता श्रीमान बंटाढार के सम्बोधन से सुशोभित करती है।

उस समय हमारा म. प्र. देश के उन राज्यों में आता था जो देश के विकास में बाधक थे। इतना खराब शासन कॉंग्रेस ने म. प्र. को दिया था। इसके बाद कॉंग्रेस के कुशासन, भ्रष्टाचार,भाई-भतीजावाद, परिवारवाद और तुष्टीकरण से तंग आकर 2003 में प्रदेश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को सत्ता की बागडोर सौंपी। तब से आज तक म. प्र. में बीच के थोड़े से समय को छोड़ दें तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। जब से म. प्र. में और केन्द्र में श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है तब से पुराना बीमारू कहा जाने वाला म. प्र. आज तेजी से आगे बढ़ता हुआ विकसित और बेमिसाल म. प्र. बन गया है। डबल इंजन वाली म. प्र. व केन्द्र की सरकार ने म. प्र. में विकास के अनेकों काम किये। पहले जहां सड़कें समस्या थीं आज समाधान हैं। बिजली व पानी की समस्या अब म. प्र. में दूर-दूर तक नहीं है। समाज में हर क्षेत्र में प्रदेश में चहुँमुखी विकास के कार्य हुए हैं। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या स्वास्थ्य का, नौकरी का क्षेत्र हो या स्वरोजगार का हर क्षेत्र में म. प्र. आज कीर्तिमान बना रहा है।

कॉंग्रेस ने जब प्रदेश मे शासन छोड़ा था तब म. प्र. शासन का बजट मात्र 23 हजार करोड़ रूपये था। आज यह बजट 3 लाख 14 हजार करोड़ रूपये तक पहुँच गया है। भारतीय जनता पार्टी के सुशासन के कारण शिक्षा,स्वास्थ्य,खेती-किसानी हर क्षेत्र मे विकास की नई-नई उपलब्धियां म. प्र. सरकार के खाते में हैं। पहले की कॉंग्रेस की सरकारें रूक-रूक कर छोटे-छोटे टुकड़ों में विकास के काम करती थीं पर आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में विकास के कार्य पूर्णता के आधार पर होते हैं। पहले म. प्र. में कुछ ही मेडीकल कॉलेज थे आज म. प्र. में 24 मेडीकल कॉलेज हैं। इतना ही नहीं मेडीकल और तकनीकि शिक्षा के क्षेत्र में म. प्र. ने अत्यंत ही क्रांतिकारी कार्य किया है, यहां इन विषयों में पढ़ाई अब हिन्दी माध्यम से भी हो रही है। इसी का परिणाम है कि आज छोटे से गाँव का होनहार छात्र अंग्रेजी न आने के कारण उच्च शिक्षा से वंचित नहीं होता। म. प्र. के बड़े शहर अब विकास के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। भोपाल व इन्दौर में जल्दी ही मेट्रो ट्रेन की सुविधा शुरू हो जावेगी। संस्कृति के क्षेत्र में भी म. प्र. उल्लेखनीय गति से लगातार काम कर रहा है। भारत की सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर उसे वैभवशाली रूप देने का काम प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की सरकार मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में लगातार अनवरत कार्य कर रही है।

उज्जैन में वैभवशाली भगवान श्री महाकाल जी का महाकाल लोक बन कर तैयार हो चुका है और अब इसी कड़ी में ओंकारेश्वर में श्री आदि शंकराचार्य अद्वैत स्मारक बनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी के नेतृत्व में म.प्र. में आदिवासियों के विकास के लिए कई कार्य किये गये हैं। म. प्र. की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने आदिवासियों को उनका अधिकार देने के लिए पेसा एक्ट लागू किया है। म. प्र. के उच्च जनजातीय गौरवशाली इतिहास को संजोने के लिए म. प्र. में संग्रहालय बनाये जा रहे हैं ताकि म. प्र. एवं देश की युवा पीढ़ी उनके द्वारा किये गये कार्यों से प्रेरणा ले सके। इसी क्रम में जनजातीय क्रांतिवीरों के नाम पर कई रेल्वे स्टेशनों के नाम रखे गये हैं और भविष्य में भी रखे जायेंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत जल्दी ही दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। भारत में हो रही जी-20 समिट पूरे विश्व में भारत की संस्कृति, भविष्य और विकास के प्रसार का माध्यम बन रही है। म. प्र. और देश की जनता ने ठान लिया है कि वह श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा के विकास के साथ है। आगामी 2023 के विधानसभा चुनाव और 2024 के लोकसभा चुनाव में निश्चित ही भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

बीमारू मध्यप्रदेश अब बेमिसाल : अमित शाह

1956 में मध्यप्रदेश के गठन के बाद से 2003 तक ज्यादातर समय कांग्रेस की ही सरकारें रही हैं। इन सरकारों ने प्रदेश को बीमारू राज्य बना दिया। इसका मतलब था मध्यप्रदेश देश के उन राज्यों में शामिल था, जो देश के विकास में बाधक थे। 2003 में प्रदेश में उमा भारती जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनी। बाद में श्री बाबूलाल गौर और श्री शिवराजसिंह चौहान ने उस सरकार का नेतृत्व किया। भाजपा की सरकार ने प्रदेश को 20 सालों में बीमारू से बेमिसाल राज्य बनाया, बंटाढार से बुलंदियों पर पहुंचाया, पिछड़े से अग्रणी बनाया, समृद्ध और खुशहाल राज्य बनाया। मि. बंटाढार और कमलनाथ इस बात का जवाब दें कि 53 सालों में उनकी सरकारों ने प्रदेश के लिए क्या किया? क्यों प्रदेश की जनता के साथ अन्याय किया? क्यों मध्यप्रदेश का काफिला लूटा?

अमृतकाल में मध्यप्रदेश बनेगा देश का अग्रणी राज्य

2003 से पहले मध्यप्रदेश बीमारू राज्य हुआ करता था। 2003 में आई भाजपा की सरकार ने प्रदेश को बीमारू राज्य के कलंक से मुक्ति दिलाई। 2003 से 2023 तक के 20 साल प्रदेश में गरीबी से मुक्ति का स्वर्णकाल रहे हैं और इन सालों में आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश की नींव डाली गई। 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार बनी और प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने मध्यप्रदेश की दिल खोलकर मदद की। डबल इंजन वाली सरकार ने प्रदेश में विकास के नए प्रतिमान गढ़े। न सिर्फ सड़क, बिजली और पानी की समस्या दूर हुई, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सुशासन और विकास के सभी मापदंडों पर प्रदेश को आगे बढ़ाया और राजधानी भोपाल से गांव की चौपाल तक विकास और खुशहाली बयार चलाई। इसका प्रति उत्तर देते हुए प्रदेश की जनता ने भी दिल खोलकर वोट दिये। 2019 में 29 में से 28 सीटें भाजपा को दीं और 2024 में जो एक सीट की कमी रह गई है, वो भी जनता पूरी कर देगी। मैं प्रदेश की जनता को विश्वास दिलाता हूं कि देश के अमृतकाल में मध्यप्रदेश देश का अग्रणी राज्य बनेगा। आने वाला चुनाव प्रदेश को विकसित और सर्वोच्च राज्य बनाने तथा गरीबी से संपूर्ण मुक्ति दिलाने वाला चुनाव है और पूरा विश्वास है कि प्रदेश की 9 करोड़ जनता का आशीर्वाद हमें मिलेगा।

मध्यप्रदेश को मिला मोदी सरकार की योजनाओं का लाभ

2014 में सत्ता में आने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने 60 करोड़ गरीबों का जीवन स्तर ऊपर उठाया। 14 करोड़ लोग गरीबी की सीमा रेखा से बाहर हुए। लगभग 10 सालों में देश की आबादी 10 प्रतिशत लोगों को गरीबी रेखा से बाहर करके मोदी जी गरीब कल्याण के पुरोधा बन गए और उनकी योजनाओं का लाभ मध्यप्रदेश को भी मिला। बंटाढार सरकार ने राज्य के बजट को 23000 करोड़ पर छोड़ दिया था, जिसे शिवराज जी की सरकार ने 3.14 लाख करोड़ तक पहुंचाया है। बंटाढार के समय शिक्षा का बजट 2456 करोड़ था, जिसे 38000 करोड़ तक पहुंचाया। स्वास्थ्य का बजट 580 करोड़ था, जिसे 16 हजार करोड़ तथा सर्व शिक्षा अभियान का बजट जो 844 करोड़ था, उसे 66 हजार करोड़ तक पहुंचाया। मि. बंटाढार और कमलनाथ को यह बताना चाहिए कि प्रदेश की आबादी का बड़ा हिस्सा एससी, एसटी और ओबीसी का है, इनके बजट को क्यों 1056 करोड़ पर छोड़ दिया था? भाजपा सरकार ने इसे 64390 करोड़ तक पहुंचाया। प्रति व्यक्ति आय 11700 से बढ़कर 1.40 लाख रुपये हो गई। बंटाढार सरकार के समय प्रदेश की सड़कें बदनाम थीं, भाजपा की सरकार ने 5.10 लाख कि.मी. अच्छी क्वालिटी की सड़कें बनाईं और राष्ट्रीय राजमार्ग जो सिर्फ 4800 किलोमीटर थे, उन्हें 13000 किलोमीटर तक पहुंचाया। कमलनाथ जैसे जिन नेताओं ने कभी हाथों में हल नहीं पकड़ा, वो हमारी सरकार पर सवाल उठाते हैं। जबकि उनकी सरकार के समय समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी सिर्फ 4.38 लाख थी, जिसे हमारी सरकार ने 77.96 लाख मीट्रिक टन तक पहुंचाया। धान की खरीदी सिर्फ 95 हजार मीट्रिक टन होती थी, जिसे 46.30 लाख टन तक पहुंचाया। प्रदेश में हुए इस रिकॉर्ड तोड़ विकास के लिए शिवराज जी को साधुवाद।

मोदी जी के संपूर्ण सेचुरेशन के कांसेप्ट पर हो रहा मध्यप्रदेश में काम

पहले की सरकारें टुकड़े-टुकड़े विकास पर विश्वास करती थीं। 20 हजार घर, 30 हजार शौचालय जैसे लक्ष्य हुआ करते थे। लेकिन प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने देश में पहली बार संपूर्ण सेचुरेशन का कांसेप्ट दिया। हर घर में शौचालय, हर जरूरतमंद माता-बहन को गैस कनेक्शन,

हर घर में नल से जल जैसी योजनाएं संपूर्ण सेचुरेशन की ही उदाहरण हैं। संपूर्ण सेचुरेशन को हासिल करने के लिए ही मोदी सरकार ने प्रदेश के 80 लाख घरों में शौचालय बनाए हैं, तो 1.2 करोड़ प्रधानमंत्री अन्न योजना के कॉर्ड बनाए हैं। 10.87 लाख गैस सिलेंडर बांटे गए हैं। 42 लाख प्रधानमंत्री आवास बनाए गए हैं। 4000 कि.मी. नए राजमार्ग बनाए जा रहे हैं। रीवा, ग्वालियर और जबलपुर एयरपोर्ट का विकास हो रहा है, 35 रेल्वे स्टेशन विश्वस्तरीय बनाए जा रहे हैं। प्रदेश की विकास दर 16 प्रतिशत हो गई है और सिंचाई क्षमता 47 लाख हेक्टेयर पर पहुंच गई है। प्रदेश की 46 लाख बेटियां लाड़ली लक्ष्मी बन चुकी हैं। प्रदेश में 24 मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं और मेडिकल, इंजीनियरिंग तथा पॉलीटेक्निक की पढ़ाई हिंदी में शुरू कराई जा रही है। भोपाल और इंदौर शहरों में मेट्रो रेल का काम तेजी से चल रहा है। ओंकारेश्वर में 2400 करोड़ की लागत से आदि शंकराचार्य अद्वैत स्मारक बनाया जा रहा है, तो उज्जैन में महाकाल महालोक बनकर तैयार हो चुका है। मध्यप्रदेश सरकार ने आदिवासियों को उनके अधिकार देने के लिए पेसा एक्ट लागू किया है तथा जनजातीय इतिहास को संजोने के लिए संग्रहालय बनाए जा रहे हैं। जनजातीय क्रांतिवीरों और जननायकों की स्मृतियों को संजोने के लिए रेलवे स्टेशनों के नाम उनके नाम पर रखे जा रहे हैं।

कांग्रेस में हिम्मत है तो 53 सालों का रिकॉर्ड दे

भारतीय जनता पार्टी ने जवाबदेही की एक नई परंपरा शुरू की है, जिसके अंतर्गत हर सरकार अपने कार्यकाल में किए गए कामों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। हमने अपना रिपोर्ट कॉर्ड प्रस्तुत किया है और गलत आरोप लगाकर जनता को गुमराह करने वाली कांग्रेस को इस रिपोर्ट कॉर्ड का जवाब देना चाहिए। कांग्रेस ने प्रदेश की जनता के साथ जो अन्याय किया है, उसका जवाब देना चाहिए और अगर उसमें हिम्मत है, तो अपने 53 सालों के शासन का रिपोर्ट कॉर्ड प्रस्तुत करे। मध्यप्रदेश में 15 महीनों के लिए कमलनाथ की सरकार बनी थी, जिन्हें करप्शन नाथ कहा जाता है। बंटाढार और कमलनाथ की उस सरकार ने भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई गरीब कल्याण की सारी योजनाएं बंद कर दीं थी और गरीब कल्याण अभियान को अपाहिज बना दिया था। उस सरकार ने सहरिया, भारिया और बैगा बहनों को मिलने वाला पोषण अनुदान बंद कर दिया था। इस्तीफा देते समय कोई मुख्यमंत्री काम नहीं करता, लेकिन करप्शननाथ ने अपने इस्तीफे से 15 मिनट पहले मोबाइल घोटाले से संबंधित दस्तावेजों पर साइन किए। करप्शन नाथ ने 350 करोड़ का मोजर बेयर घोटाला किया और 2400 करोड़ के अगस्ता वेस्टलैंड घोटाले से उनका संबंध है। करप्शन नाथ ने 600 करोड़ का इफ्को घोटाला, कर्जमाफी में 25000 करोड़ का हेरफेर किया। उस सरकार ने 800 ट्रांसफर करके नया तबादला उद्योग शुरू कर दिया था। कमलनाथ को अपनी सरकार के डेढ़ सालों में हुए घोटालों का जवाब देना चाहिए।

जनता तय करे, वह घोटालों के साथ है या विकास के साथ

मोदी जी ने देश के प्रधानमंत्री बनते ही भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का बीड़ा उठाया। देश को दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था, 5 ट्रिलियन इकॉनॉमी और आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया। आज भारत क्लाइमेट चेंज और आतंकवाद पर जीरो टालरेंस के मामले में दुनिया का नेतृत्व कर रहा है।

जी-20 समिट सारी दुनिया में भारत की संस्कृति, विकास और उसके भविष्य के प्रसार का माध्यम बन रही है। पहली बार जी-20 समिट देश के सभी राज्यों के 59 स्थानों पर हो रही है। 14 देशों ने प्रधानमंत्री मोदी जी को अपना सर्वोच्च सम्मान दिया है। भारत आज डिजिटल लेनदेन, एलईडी वल्ब के वितरण, स्वच्छता, टीकाकरण तथा दाल, दलहन, दूध,जूट और रेल इंजन के उत्पादन में दुनिया में पहले स्थान पर है। मोबाइल, सीमेंट, स्टील, कॉटन, चाय के उत्पादन में दूसरे स्थान पर तथा स्टार्टअप और वाहन उद्योग में तीसरे स्थान पर है। दूसरी तरफ कांग्रेस अपने शासन में सिर्फ घोटाले करती रही। बोफोर्स घोटाला, टूजी घोटाला, सत्यम घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला, कोयला घोटाला, चॉपर घोटाला, टेट्रा ट्रक घोटाला, वोट के बदले नोट घोटाला, आदर्श हाउसिंग घोटाला, डीएलएफ घोटाला, नेशनल हेराल्ड घोटाला, खाद्य सुरक्षा बिल घोटाला, शेयर बाजार घोटाला, आईपीएल घोटाला, एलआईसी हाउसिंग घोटाला, मधु कोड़ा कांड, राफेल खरीदी घोटाला, सबमरीन घोटाला, मंदिर कलेक्शन घोटाला और वॉक्स वैगन इक्विटी घोटाले जैसे 24 से अधिक घोटालों में लिप्त रही है। अब यह मध्यप्रदेश की जनता को तय करना है कि वह विकास के साथ है या घोटालों के साथ। अगर वो विकास के साथ है, तो उसे 2023 के विधानसभा चुनाव और 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को अपना समर्थन देना है।

मोदी सरकार आने के बाद मिली प्रदेश के विकास को नई गति: शिवराजसिंह चौहान

2003 से पहले मध्यप्रदेश बीमारू राज्यों में शामिल था और यहां डकैतों, नक्सलियों का आतंक था। हमारी सरकार ने प्रदेश को बीमारू राज्य के ठप्पे से मुक्ति दिलाई। वर्ष 2002-03 में प्रदेश की अर्थव्यवस्था का आकार 71000 करोड़ रुपये हुआ करता था, वह अब 13.5 लाख करोड़ रुपये के पार हो गया है।

देश की जीडीपी में पहले प्रदेश का योगदान सिर्फ 3.6 प्रतिशत था, जो अब 4.8 प्रतिशत हो गया है। हमने प्रदेश में सड़कों का जाल बिछाया है और सिंचाई के क्षेत्र में तो चमत्कार हो गया है। 2014 में श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद प्रदेश की प्रगति को नई दिशा और गति मिली है।

डबल इंजन वाली सरकार ने विकास के नए प्रतिमान गढ़ दिए हैं। पहले जहां एक पंचायत को गिनती के ही आवास मिला करते थे, वहीं अब हर पंचायत को औसत 122-23 प्रधानमंत्री आवास मिल रहे हैं।

महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में प्रदेश में अभूतपूर्व काम हुआ है। प्रदेश की विकास दर 16 प्रतिशत से ऊपर है, लेकिन हम इससे संतुष्ट नहीं हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2047 तक देश को दुनिया का सबसे समृद्ध, गौरवशाली, वैभवशाली और शक्तिशाली राष्ट्र बनाने तथा देश को पांच ट्रिलियन इकॉनॉमी बनाने का संकल्प लिया है। इसे पूरा करने में मध्यप्रदेश कोई कसर नहीं छोड़ेगा और हमने भी इसमें भागीदारी करते हुए प्रदेश को 550 बिलियन की इकॉनॉमी बनाने का लक्ष्य तय किया है।

हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास एक सशक्त सरकार है: विष्णुदत्त शर्मा

प्रदेश के लिए यह गर्व की बात है कि भाजपा सरकार के 20 सालों के गरीब कल्याण के रिपोर्ट कॉर्ड का लोकार्पण केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के हाथों किया जा रहा है, मैं प्रदेश की जनता की ओर से तथा पार्टी कार्यकर्ताओं की ओर से उनका स्वागत करता हूं, आभार जताता हूं। भाजपा की डबल इंजन वाली सरकार देश और प्रदेश को लगातार विकास के रास्ते पर आगे बढ़ा रही है और यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास ऐसी सशक्त सरकार है, जो अपने निर्णयों को लागू करने में सक्षम है। ▪

काम करने वाली, लक्ष्यों को पार करने वाली सरकार है

भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टिकरण के खिलाफ पूरे सामर्थ्य के साथ लड़ना है - नरेन्द्र मोदी

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और अब बहुत लोगों का अभिप्राय है कि जनसंख्या की दृष्टि से भी हम विश्व में नंबर एक पर हैं। इतना बड़ा विशाल देश, 140 करोड़ देशवासी, मेरे परिवारजन आजादी का पर्व मना रहे हैं। पूज्य बापू के नेतृत्व में असहयोग का आंदोलन, सत्याग्रह की मूवमेंट और भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू जैसे अनगिनत वीरों का बलिदान, उस पीढ़ी में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसने देश की आजादी में अपना योगदान न दिया हो।

15 अगस्त महान क्रांतिकारी और अध्यात्म जीवन के प्रणेता श्री अरविंदों की 150वीं जयंती पूर्ण हो रही है। ये वर्ष स्वामी दयानंद सरस्वती के 150वीं जयंती का वर्ष है। ये वर्ष रानी दुर्गावती के 500वीं जन्मशती का बहुत ही पवित्र अवसर है जो पूरा देश बड़े धूमधाम से मनाने वाला है। ये वर्ष मीराबाई भक्ति योग की सिरमौर मीराबाई के 525 वर्ष का भी ये पावन पर्व है। इस बार जब हम 26 जनवरी मनाएंगे वो हमारे गणतंत्र दिवस की 75वीं वर्षगांठ होगी। अनेक प्रकार से अनेक अवसर, अनेक संभावनाएं राष्ट्र निर्माण में जुटे रहने के लिए पल-पल नई प्रेरणा, पल-पल नई चेतना, पल-पल सपने, पल-पल संकल्प, शायद इससे बड़ा कोई अवसर नहीं हो सकता।

15 अगस्त महान क्रांतिकारी और अध्यात्म जीवन के प्रणेता श्री अरविंदों की 150वीं जयंती पूर्ण हो रही है। ये वर्ष स्वामी दयानंद सरस्वती के 150वीं जयंती का वर्ष है।

ये वर्ष रानी दुर्गावती के 500वीं जन्मशती का बहुत ही पवित्र अवसर है जो पूरा देश बड़े धूमधाम से मनाने वाला है। ये वर्ष मीराबाई भक्तियोग की सिरमौर मीराबाई के 525 वर्ष का भी ये पावन पर्व है।

इस बार प्राकृतिक आपदा ने देश के अनेक हिस्सों में अकल्पनीय संकट पैदा किए।

मणिपुर में और हिन्दुस्तान के अन्य कुछ भागों में, लेकिन विशेषकर मणिपुर में जो हिंसा का दौर चला, कई लोगों को अपना जीवन खोना पड़ा, मां-बेटियों के सम्मान के साथ खिलवाड़ हुआ, लेकिन कुछ दिनों से लगातार शांति की खबरें आ रही हैं, देश मणिपुर के लोगों के साथ है। देश मणिपुर के लोगों ने पिछले कुछ दिनों से जो शांति बनाई रखी है, उस शांति के पर्व को आगे बढ़ाए और शांति से ही समाधान का रास्ता निकलेगा।

राज्य और केंद्र सरकार मिलकर के उन समस्याओं के समाधान के लिए भरपूर प्रयास

कर रही है, करती रहेगी। जब हम इतिहास की तरफ नजर करते हैं तो इतिहास में कुछ पल ऐसे आते हैं जो अपनी अमिट छाप छोड़कर के जाते है। और उसका प्रभाव सदियों तक रहता है और कभी-कभी शुरूआत में वो बहुत छोटा लगता है, छोटी सी घटना लगती है, लेकिन वो अनेक समस्याओं की जड़ बन जाती है। हमें याद है 1000-1200 साल पहले इस देश पर आक्रमण हुआ। एक छोटे से राज्य के छोटे से राजा का पराजय हुआ। लेकिन तब पता तक नहीं था कि एक घटना भारत को हजार साल की गुलामी में फंसा देगी। और हम गुलामी में जकड़ते गए, जकड़ते गए, जकड़ते गए, जो आया लूटता गया, जो जिसका मन चाहा, हम पर आकर सवार हो गया। कैसा विपरीत काल रहा होगा, वो हजार साल का।

घटना छोटी क्यों न हो, लेकिन हजार साल तक प्रभाव छोड़ती रही है। लेकिन इस बात का जिक्र इसलिए करना चाहता हूं कि भारत के वीरों ने इस कालखण्ड में कोई भू-भाग ऐसा नहीं था, कोई समय ऐसा नहीं था, जब उन्होंने देश की आजादी की लौ को जलता ना रखा हो, बलिदान की परंपरा न बनाई हो। मां भारती बेड़ियों से मुक्त होने के लिए उठ खड़ी हुई थी, जंजीरों को झकझोर रही थी और देश की नारी शक्ति, देश की युवा शक्ति, देश के किसान, देश के गांव के लोग, मजदूर, कोई हिन्दुस्तानी ऐसा नहीं था, जो आजादी के सपने को लेकर के जीता न हो। आजादी को पाने के लिए मर-मिटने के लिए तैयार होने वालों की एक बड़ी फौज तैयार हो गई थी। जेलों में जवानी खपाने वाले अनेक महापुरूष हमारी देश की आजादी को, गुलामी के बड़ियों को तोड़ने के लिए लगे हुए थे।

जनचेतना का वो व्यापक रूप, त्याग और तपस्या का वो व्यापक रूप जन-जन के अंदर एक नए विश्वास जगाने वाला वो पल, आखिरकार 1947 में देश आजाद हुआ, हजार साल की गुलामी में संजोये हुए सपने देशवासियों ने पूरे करते हुए देखे।

हजार साल पहले की बात इसलिए कह रहा हूं, देख रहा हूं फिर एक बार देश के सामने एक मौका आया है, हम ऐसे कालखण्ड में जी रहे हैं, ऐसे कालखण्ड में हमने प्रवेश किया है और यह हमारा सौभाग्य है कि भारत के ऐसे अमृतकाल में, यह अमृतकाल का पहला वर्ष है या तो हम जवानी में जी रहे हैं या हम मां भारती की गोद में जन्म ले चुके हैं। और ये कालखण्ड मेरे शब्द लिखकर के रखिए, इस कालखण्ड में जो हम करेंगे, जो कदम उठाएंगे, जितना त्याग करेंगे, तपस्या करेंगे। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय, एक के बाद एक फैसले लेंगे, आने वाले एक हजार साल का देश का स्वर्णिम इतिहास उससे अंकुरित होने वाला है। इस कालखंड में होने वाली घटनाएं आगामी एक हजार साल के लिए इसका प्रभाव पैदा करने वाली हैं।

गुलामी की मानसिकता से बाहर निकला हुआ देश पंचप्राण को समर्पित हो, एक नए आत्मविश्वास के साथ आज आगे बढ़ रहा है। नए संकल्पों को सिद्ध करने के लिए वो जी-जान से जुड़ रहा है। भारत माता जो कभी ऊर्जा का सामर्थ्य था, लेकिन राख के ढेर में दबी पड़ी थी। वो भारत माँ 140 करोड़ देशवासियों के पुरुषार्थ से, उनकी चेतना से, उनकी ऊर्जा से, फिर एक बार जागृत हो चुकी है। मां भारती जागृत हो चुकी है और मैं साफ देख रहा हूँ यही कालखंड है, पिछले 9-10 साल हमने अनुभव किया है। विश्व भर में भारत की चेतना के प्रति, भारत के सामर्थ्य के प्रति एक नया आकर्षण, नया विश्वास, नई आशा पैदा हुई है और ये प्रकाश पुंज जो भारत से उठा है वो विश्व को उसमें अपने लिए ज्योति नजर आ रही है। विश्व को एक नया विश्वास पैदा हो रहा है। हमारा सौभाग्य है कुछ ऐसी चीजें हमारे पास हैं जो हमारे पूर्वजों ने हमें विरासत में दी है और वर्तमान कालखंड ने गढ़ी है। आज हमारे पास डेमोग्राफी है, आज हमारे पास डेमोक्रेसी है, आज हमारे पास डाइवर्सिटी है। डेमोग्राफी, डेमोक्रेसी और डाइवर्सिटी की ये त्रिवेणी भारत के हर सपने को साकार करने का सामर्थ्य रखती है। आज पूरे विश्व में वहां देशों की उम्र ढल रही है, ढलाव पर है तो भारत यौवन की तरफ ऊर्जावान हो करके बढ़ रहा है। कितने बड़े गौरव का कालखंड है कि आज 30 साल की कम आयु की जनसंख्या दुनिया में सर्वाधिक कहीं है तो ये मेरे भारत मां की गोद में है। ये मेरे देश में है और 30 साल से कम उम्र के नौजवान हों, मेरे देश के पास हो, कोटि-कोटि भुजाएं हों, कोटि-कोटि मस्तिष्क हों, कोटि-कोटि सपने, कोटि-कोटि संकल्प हों तो हम इच्छित परिणाम प्राप्त करके रह सकते हैं।

देश का भाग्य ऐसी घटनाएं बदल देती है। ये सामर्थ्य देश के भाग्य को बदल देता है। भारत 1 हजार साल की गुलामी और आने वाले 1 हजार साल के भव्य भारत के बीच में पड़ाव पर हम खड़े हैं। एक ऐसी संधि पर खड़े हैं और इसलिए अब हमें न रुकना है, न दुविधा में जीना है।

हमें खोई हुई उस विरासत का गर्व करते हुए, खोई हुई समृद्धि को प्राप्त करते हुए हमें फिर एक बार और ये बात मान कर चलें, हम जो भी करेंगे, हम जो भी कदम उठाएंगे, हम जो भी फैसला लेंगे वो अगले 1 हजार साल तक अपनी दिशा निर्धारित करने वाला है। भारत के भाग्य को लिखने वाला है, देश के नौजवानों को, देश की बेटे-बेटियों को ये जरूर कहना चाहूँगा, जो सौभाग्य आज युवाओं को मिला है, ऐसा सौभाग्य, शायद ही किसी को नसीब होता है, जो आपको नसीब हुआ है। और इसलिए हमें ये गंवाना नहीं है। युवा शक्ति में मेरा भरोसा है, युवा शक्ति में सामर्थ्य है और हमारी नीतियां और हमारी रीतियां भी उस युवा सामर्थ्य को और बल देने के लिए है।

युवाओं ने दुनिया के पहले तीन स्टार्टअप इकोनॉमी सिस्टम में भारत को स्थान दिला दिया है। विश्व के युवाओं को अचंभा हो रहा है। भारत के इस सामर्थ्य को लेकर के, भारत की इस ताकत को देखकर के।

आज दुनिया टेक्नोलॉजी ड्रिवेन है और आने वाला युग टेक्नोलॉजी से प्रभावित रहने वाला है और तब टेक्नोलॉजी में भारत की जो टेलेंट है, उसकी एक नई भूमिका रहने वाली है।

मैं पिछले दिनों जी-20 समिट में बाली गया था और बाली में दुनिया के समृद्ध से समृद्ध देश, दुनिया के विकसित देश भी, उनके मुखिया, मुझे भारत की डिजिटल इंडिया की सफलता के लिए, उसकी बारिकियों को जानने के लिए इच्छुक थे। हर कोई इसका सवाल पूछता था और जब मैं उनको कहता था कि भारत ने जो कमाल किया है ना वो दिल्ली, मुंबई, चेन्नई तक सीमित नहीं है, भारत जो कमाल कर रहा है, मेरे टियर-2, टियर-3 सिटी के युवा भी आज मेरे देश का भाग्य गढ़ रहे हैं। छोटे-छोटे स्थान के मेरे नौजवान, और मैं आज बड़े विश्वास से कहता हूं कि देश का ये जो सामर्थ्य नया नजर आ रहा है, और इसलिए मैं कहता हूं हमारे छोटे शहर आकार और आबादी में छोटे हो सकते हैं। ये हमारे छोटे-छोटे शहर, हमारे कस्बे आकार और आबादी में छोटे हो सकते हैं, लेकिन आशा और आकांक्षा, प्रयास और प्रभाव वो किसी से कम नहीं है, वो सामर्थ्य उनके अंदर है। नए एप, नए सोल्यूशन, टेक्नोलॉजी डिवाइस। अब खेलों की दुनिया देखिए, कौन बच्चे हैं, झुग्गी झोंपड़ी से निकले हुए बच्चे आज खेलों की दुनिया में पराक्रम दिखा रहे हैं। छोटे-छोटे गांव, छोटे-छोटे कस्बे के नौजवान, हमारे बेटे-बेटियां आज कमाल दिखा रहे हैं। अब देखिए, मेरे देश के सौ स्कूल ऐसे हैं, जहां के बच्चे सेटेलाइट बना करके सेटेलाइट छोड़ने की तैयारियां कर

रहे हैं। आज हजारों टिंकरिंग लैब नये वैज्ञानिकों का गर्भाधान कर रही है। आज हजारों टिंकरिंग लैब लाखों बच्चों को साइंस और टेक्नोलॉजी के राह पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा दे रही है।

मैं मेरे देश के नौजवानों को कहना चाहता हूं कि अवसरों की कमी नहीं है, आप जितने अवसर चाहेंगे, ये देश आसमान से भी ज्यादा अवसर आपको देने का सामर्थ्य रखता है।

मैं आज लालकिले की प्राचीर से मेरे देश की माताओं, बहनों, मेरे देश की बेटियों का हृदय से अभिनंदन करना चाहता हूं। देश आज जहां पहुंचा है, उसमें विशेष शक्ति जुड़ रही है, मेरी माताओं, बहनों के सामर्थ्य की। आज देश प्रगति की राह पर चल पड़ा है तो मैं मेरे किसान भाई-बहनों का भी अभिनंदन करना चाहता हूं ये आप ही का पुरुषार्थ है, ये आप ही का परिश्रम है कि देश आज कृषि क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। मैं मेरे देश के मजदूरों का, मेरे श्रमिकों का, मेरे प्रिय परिवारजन ऐसे कोटि-कोटि समूहों को आज मैं नमन करता हूं। उनका अभिनंदन कर रहा हूं। देश आज जो आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है, विश्व की तुलना करने वाले सामर्थ्य के साथ नजर आ रहा है, उसके पीछे मेरे देश के मजदूरों का, मेरे देश के श्रमिकों का बहुत बड़ा योगदान है, आज समय कहता है कि लालकिले की प्राचीर से मैं उनका अभिनंदन करूं। उनका अभिवादन करूं और यह मेरे परिवारजन, 140 करोड़ देशवासी मेरे इन श्रमिकों, रेहड़ी-पटरी वालों का, फूल-सब्जी बेचने वालों का हम सम्मान करते हैं। मेरे देश को आगे बढ़ाने में, मेरे देश को प्रगति की नई ऊंचाई पर ले जाने में प्रोफेशनल्स की बहुत बड़ी भूमिका बढ़ती रही है। चाहे साइंटिस्ट हो, चाहे इंजीनियर्स हो, डॉक्टर्स हो, नर्सेस हो, शिक्षक हो, आचार्य हो, युनिवर्सिटीस हो, गुरूकुल हो हर कोई मां भारती का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए अपनी पूरी ताकत से लगा हुआ है।

राष्ट्रीय चेतना वो एक ऐसा शब्द है जो हमें चिंताओं से मुक्त कर रहा है। और आज वो राष्ट्रीय चेतना यह सिद्ध कर रही है कि भारत का सबसे बड़ा सामर्थ्य बना है भरोसा, भारत का सबसे बड़ा सामर्थ्य बना है विश्वास, जन-जन में हमारा विश्वास, जन-जन का सरकार पर विश्वास, जन-जन का देश के उज्ज्वल भविष्य पर विश्वास और विश्व का भी भारत के प्रति विश्वास। यह विश्वास हमारी नीतियों का है, हमारी रीति का है। भारत के उज्ज्वल भविष्य को जिस निर्धारित मजबूत कदमों से हम आगे बढ़ा रहे हैं उसका है।

यह बात निश्चित है कि भारत का सामर्थ्य और भारत की संभावनाएं विश्वास की नई बुलंदियों को पार करने वाली है और यह विश्वास की नई बुलंदियां नये सामर्थ्य को ले करके चलनी चाहिए। आज देश में जी-20 समिट की मेहमान नवाजी का भारत को अवसर मिला है। और पिछले एक साल से हिन्दुस्तान के हर कोने में जिस प्रकार से जी-20 के अनेक ऐसे आयोजन हुए हैं, अनेक कार्यक्रम हुए हैं, उसने देश के सामान्य मानवी के सामर्थ्य को विश्व को परिचित करा दिया है। भारत की विविधता का परिचय कराया है। भारत की डायवर्सिटी को दुनिया अचम्भे से देख रही है और उसके कारण भारत के करीब आकर्षण बढ़ा है। भारत को जानने की, समझने की इच्छा जगी है। उसी प्रकार से आप देखिए, एक्सपोर्ट, आज भारत का एक्सपोर्ट तेजी से बढ़ रहा है और मैं कहना चाहता हूं दुनिया के एक्सपर्टस इन सारे मानदंडों के आधार पर कह रहे हैं कि अब भारत रूकने वाला नहीं है। दुनिया की कोई भी रेटिंग एजेंसी होगी वो भारत का गौरव कर रही है। कोरोना काल के बाद दुनिया एक नये सिरे से सोचने लगी है। और मैं विश्वास से देख रहा हूं कि जिस प्रकार से द्वितीय महायुद्ध के बाद, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दुनिया में एक नया वर्ल्ड ऑर्डर ने आकार लिया था। मैं साफ-साफ देख रहा हूं कि कोरोना के बाद एक नया विश्व ऑर्डर, एक नया ग्लोबल ऑर्डर, एक नया जियो पॉलिटिकल इक्वेशन यह बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। जियो पॉलिटिकल इक्वेशन की सारी व्याख्याएं बदल रही हैं, परिभाषाएं बदल रही हैं। और आप गौरव करेंगे बदलते हुए विश्व को शेप देने में आज मेरे 140 करोड़ देशवासियों आपका सामर्थ्य नजर आ रहा है। आप निर्णायक मोड़ पर खड़े हैं।

और कोरोना काल में भारत ने जिस प्रकार से देश को आगे बढ़ाया है, दुनिया ने हमारे सामर्थ्य को देखा है। जब दुनिया की supply chain तहस-नहस हो गई थी, बड़ी-बड़ी अर्थव्यवस्था पर दबाव था, उस समय भी हमने कहा था हमें विश्व का विकास देखना है, तो वो मानव केंद्रित होना चाहिए, मानवीय संवेदनाओं से भरा हुआ होना चाहिए, और तब जा करके समस्याओं का सही समाधान निकालेंगे और कोविड ने हमें सिखाया है या हमें मजबूर किया है, लेकिन मानवीय संवेदनाओं को छोड़ करके हम विश्व का कल्याण नहीं कर सकते।

आज भारत ग्लोबल साउथ की आवाज बन रहा है। भारत की समृद्धि, विरासत आज दुनिया के लिए एक अवसर बन रही है। ग्लोबल इकोनॉमी, ग्लोबल supply chain में भारत की हिस्सेदारी, मैं पक्के विश्वास से कहता हूं, आज जो भारत में परिस्थिति पैदा हुई है, आज जो भारत ने कमाया है, वो दुनिया में स्थिरता की गारंटी ले करके आया है। अब न हमारे मन में, न 140 करोड़ मेरे परिवारजनों के मन में और न ही दुनिया के मन में कोई ifs हैं कोई buts हैं, विश्वास बन चुका है।

अब गेंद हमारे पाले में है, हमें अवसर जाने नहीं देना चाहिए, हमें मौका छोड़ना नहीं चाहिए। भारत में मैं मेरे देशवासियों का इसलिए भी अभिनंदन करता हूं कि मेरे देशवासियों में एक नीर-क्षीर विवेक का सामर्थ्य है, समस्याओं की जड़ों को समझने का सामर्थ्य है और इसलिए 2014 में मेरे देशवासियों ने 30 साल के अनुभव के बाद तय किया कि देश को आगे

ले जाना है तो स्थिर सरकार चाहिए, मजबूत सरकार चाहिए, पूर्ण बहुमत वाली सरकार चाहिए, और देशवासियों ने एक मजबूत और स्थिर सरकार बनाई है। और तीन दशकों तक जो अनिश्चितता का काल था, जो अस्थिरता का कालखंड था, जो राजनीतिक मजबूरियों से देश जकड़ा हुआ था, उससे मुक्ति मिली।

देश के पास आज ऐसी सरकार है, वो सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय देश के संतुलित विकास के लिए समय का पल-पल और जनता की पाई-पाई जनता की भलाई के लिए लगा रही है और मेरी सरकार, मेरे देशवासियों का मान एक बात से जुड़ा हुआ है, हमारे हर निर्णय, हमारी हर दिशा, उसका एक ही मानदंड है Nation First राष्ट्र प्रथम और राष्ट्र प्रथम यही दूरगामी परिणाम, सकारात्मक परिणाम पैदा करने वाला है। देश में बड़े स्तर पर काम हो रहा है। लेकिन मैं कहना चाहूंगा 2014 में आपने एक मजबूत सरकार बनाई और मैं कहता हूं 2014 में और 2019 में आपने एक सरकार form की तो मोदी में reform करने की हिम्मत आई। और जब मोदी ने एक के बाद एक reform किए तो मेरे ब्यूरोक्रेसी के लोग, मेरे लाखों हाथ-पैर, जो हिन्दुस्तान के कोने-कोने में सरकार के हिस्से के रूप में काम कर रहे हैं, उन्होंने ब्यूरोक्रेसी ने transform करने के लिए perform करने की जिम्मेदारी बखूबी निभाई और उन्होंने perform करके दिखाया और जनता-जनार्दन जुड़ गई तो वो transform होता भी नजर आ रहा है। और इसलिए reform, perform, transform ये कालखंड अब भारत के भविष्य को गढ़ रहा है। और हमारी सोच देश की उस ताकतों को बढ़ावा देने पर है, जो आने वाले एक हजार साल की नींव को मजबूत करने वाले हैं। दुनिया को युवा शक्ति की जरूरत है, युवा स्किल की जरूरत है। हमने अलग स्किल मिनिस्ट्री बनाई, वो भारत की आवश्यकताओं को तो पूरा करेगी, वो दुनिया की आवश्यकताओं को भी पूर्ण करने का भी सामर्थ्य रखेगी। हमने जल शक्ति मंत्रालय बनाया। मंत्रालय की बनाने की रचना को भी अगर वो analysis करेंगे ना तो इस सरकार के मन-मस्तिष्क को बड़े अच्छे ढंग से आप समझ पाएंगे। हमने जल शक्ति मंत्रालय बनाया ये जल शक्ति मंत्रालय हमारा, हमारे देश के एक-एक देशवासियों को पीने का शुद्ध पानी पहुंचे, पर्यावरण की रक्षा के लिए पानी के प्रति संवेदनशील व्यवस्थाएं विकसित हो उस पर हम बल दे रहे हैं। हमारे देश में कोरोना के बाद दुनिया देख रही है holistic health care ये समय की मांग है। हमने अलग आयुष मंत्रालय बनाया और योग और आयुष आज दुनिया में अपना परचम लहरा रहे हैं।

दुनिया को हमारे commitment के कारण विश्व का हमारे प्रति ध्यान गया है। अगर हम ही हमारे इस सामर्थ्य को नकार देंगे तो फिर दुनिया कैसे स्वीकार करेगी। लेकिन जब मंत्रालय बना तो दुनिया को भी उसका मूल्य समझ में आया। मत्स्य पालन हमारा इतना बड़ा समुद्री तट, हमारे कोटि-कोटि मछुआरे भाई-बहन उनका कल्याण भी हमारे दिलों में है और इसलिए हमने अलग से मत्स्य पालन को लेकर के, पशुपालन को लेकर के, डेयरी को लेकर के अलग मंत्रालय की रचना की ताकि समाज के जिस वर्ग के लोग पीछे रह गए उनको हम साथ दे।

देश में सरकारी अर्थव्यवस्था के हिस्से होते हैं लेकिन समाज की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है cooperative movement उसको बल देने के लिए, उसमें आधुनिकता लाने के लिए और देश के कोने-कोने में लोकतंत्र की एक सबसे बड़ी इकाई को मजबूत करने के लिए हमने अलग cooperative मंत्रालय बनाया और वो हमारी सहकारी संस्थाएं उसका जाल बिछा रहा है ताकि गरीब से गरीब की वहां सुनवाई हो, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो और वो भी राष्ट्र के विकास के योगदान में एक छोटी इकाई का हिस्सा बनकर के उसमें वो योगदान दे सके। हमने सहकार से समृद्धि का रास्ता अपनाया है।

जब हम 2014 में आए थे, तो हम वैश्विक अर्थव्यवस्था में 10वें नंबर पर थे और आज 140 करोड़ देशवासियों का पुरुषार्थ रंग लाया है कि हम विश्व की अर्थव्यवस्था में 5वें नंबर पर पहुंच चुके हैं। और ये ऐसे ही नहीं हुआ है जब भ्रष्टाचार का राक्षस देश को दबोचे हुए था, लाखों-करोड़ के घोटाले अर्थव्यवस्था को डांवाडोल कर रहे थे, governance, fragile फाइव में देश की पहचान होने लगी थी। Leakages को हमने बंद किया, मजबूत अर्थव्यवस्था बनाई, हमने गरीब कल्याण के लिए ज्यादा से ज्यादा धन खर्च करने का प्रयास किया। और जब देश आर्थिक रूप से समृद्ध होता है तो सिर्फ तिजोरी नहीं भरती है, देश का सामर्थ्य बढ़ता है, देशवासियों का सामर्थ्य बढ़ता है और तिजोरी का पाई-पाई अगर ईमानदारी से जनता-जनार्दन के लिए खर्च करने का संकल्प लेने वाली सरकार हो तो परिणाम कैसा आता है। मैं 10 साल का हिसाब तिरंगे की साक्षी में लाल किले की प्राचीर से मेरे देशवासियों को दे रहा हूं। आंकड़े देखकर के आपको लगेगा इतना बड़ा बदलाव, इतना बड़ा सामर्थ्य। 10 साल पहले राज्यों को 30 लाख करोड़ रूपये भारत सरकार की तरफ से जाते थे। पिछले 9 साल में ये आंकड़ा 100 लाख करोड़ पर पहुंचा है।

पहले स्थानीय निकाय के विकास के लिए भारत सरकार के खजाने से 70 हजार करोड़ रूपया जाता था, आज वो 3 लाख करोड़ से भी ज्यादा जा रहा है। पहले गरीबों के घर बनाने के लिए 90 हजार करोड़ रूपया खर्च होता था, आज वो 4 गुना होकर के 4 लाख करोड़ से भी ज्यादा खर्च गरीबों के घर बनाने के लिए हो रहा है। पहले गरीबों को यूरिया सस्ता मिले। जो यूरिया के बैग दुनिया के कुछ बाजारों में 3 हजार में बिकते हैं, वो यूरिया का बैग किसानों को 300 में मिले और इसलिए देश की सरकार 10 लाख करोड़ रुपया किसानों को यूरिया में सब्सिडी दे रही है। मुद्रा योजना 20 लाख करोड़ रुपए उससे भी ज्यादा मेरे देश के नौजवानों को स्वरोजगार के लिए, अपने व्यवसाय के लिए, अपने कारोबार के लिए दिए हैं। 8 करोड़ लोगों ने नया कारोबार शुरू किया है और 8 करोड़ लोगों ने कारोबार शुरू किया है, ऐसा नहीं, हर कारोबारी ने एक या दो, लोगों को रोजगार दिया है। 8-10 करोड़ नए लोगों को रोजगार देने का सामर्थ्य ये मुद्रा योजना से लाभ लेने वाले 8 करोड़ नागरिकों ने किया है। MSMEs को करीब साढ़े तीन लाख करोड़ रुपए की मदद से कोरोना के संकट में भी उनको डूबने नहीं दिया, मरने नहीं दिया, उनको एक ताकत दी है। वन रैंक वन पेंशन, मेरे देश के सेना के जवानों का एक सम्मान का विषय था, 70 हजार करोड़ रुपया भारत की तिजोरी से आज पहुंचा है। निवृत्त सेना के नायकों के जेब में उनका परिवार में पहुंचा है। सभी कैटेगरी में मैंने तो कुछ ही गिनाएं हैं, मैं ज्यादा समय लेना नहीं चाहता हूँ। हर कैटेगरी में पहले की तुलना में अनेक गुना धन देश के विकास के लिए कोने-कोने में रोजगार पैदा करने के लिए, पाई-पाई का उपयोग भारत का भाग्य बदलने के लिए हो और इसलिए हमने काम किया है।

इतना ही नहीं, इन सारे प्रयासों का परिणाम है कि आज 5 साल के मेरे एक कार्यकाल में, 5 साल में साढ़े 13 करोड़ मेरे गरीब भाई-बहन गरीबी की जंजीरों को तोड़ करके न्यू मिडिल क्लास के रूप में बाहर आए हैं। जीवन में इससे बड़ा कोई संतोष नहीं हो सकता।

और जब साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी की इस मुसीबतों से बाहर निकलते हैं तो कैसी-कैसी

योजनाओं ने उन्हें मदद दी है, उनको आवास योजना का लाभ मिलना, पीएम स्वनिधि से 50 हजार करोड़ रुपए रेहड़ी-पटरी वालों तक पहुंचाया है। आने वाले दिनो में, आने वाली विश्वकर्मा जयंती पर एक कार्यक्रम हम आगे लागू करेंगे, इस विश्वकर्मा जयंती पर हम करीब 13-15 हजार करोड़ रुपया से जो परम्परागत कौशल्य से रहने वाले लोग, जो औजार से और अपने हाथ से काम करने वाला वर्ग है, ज्यादातर ओबीसी समुदाय से है। हमारे सुथार हों, हमारे सुनार हों, हमारे राजमिस्त्री हों, हमारे कपड़े धोने वाले काम करने वाले लोग हों, हमारे बाल काटने वाले भाई-बहन परिवार हों, ऐसे लोगों को एक नई ताकत देने के लिए हम आने वाले महीने में विश्वकर्मा जयंती पर विश्वकर्मा योजना लॉन्च करेंगे और करीब 13-15 हजार करोड़ रुपये से उसका प्रारंभ करेंगे। हमने पीएम किसान सम्मान निधि में ढाई लाख करोड़ रुपया सीधा मेरे देश के किसानों के खाते में जमा किया है। हमने जल जीवन मिशन हर घर में शुद्ध पानी पहुंचे, दो लाख करोड़ रुपया खर्च किया है। हमने आयुष्मान भारत योजना ताकि गरीब को बीमारी के कारण अस्पताल जाने से जो मुसीबत होती थी, उससे मुक्ति दिलाना। उसको दवाई मिले, उसका उपचार हो, ऑपरेशन हो अच्छे से अच्छे हॉस्पिटल में हो, आयुष्मान भारत योजना के तहत 70 हजार करोड़ रुपये हमने लगाए हैं। पशुधन देश ने कोरोना वैक्सीन की बात तो देश को याद है, 40 हजार करोड़ रुपये लगाए, वो तो याद है लेकिन आपको जानकर के खुशी होगी हमने पशुधन को बचाने के लिए करीब-करीब 15 हजार करोड़ रुपया पशुधन के टीकाकरण के लिए लगाया है।

जन औषधि केंद्रों ने, देश के Senior Citizens को, देश के मध्यम वर्गीय परिवार को एक नई ताकत दी है। जिस संयुक्त परिवार में अगर किसी को एक डायबिटिज जैसा हो जाए 2-3 हजार का बिल स्वाभाविक हो जाता है। हमने जन-औषधि केंद्र से जो दवाई बाजार में सौ रुपये में मिलती है वो 10 रुपया, 15 रुपया, 20 में दी। और आज देश के 1000 जन-औषधि केंद्रों से इन बीमारी में जिनको दवाई की जरूरत थी, ऐसे लोगों के करीब 20 करोड़ रुपया उनके जेब में बचा है। और ये ज्यादातर मध्यम वर्गीय परिवार के लोग हैं। लेकिन आज उसकी सफलता को देखते हुए मैं देशवासियों को कहना चाहता हूं जैसे हम एक विश्वकर्मा योजना लेकर के समाज के उस वर्ग को छूने वाले हैं। अब देश में 10 हजार जन-औषधि केंद्र से हम 25 हजार जन-औषधि केंद्र का लक्ष्य लेकर के आने वाले दिनों में काम करने वाले हैं।

जब देश में गरीबी कम होती है तब देश के मध्यम वर्गीय वर्ग की ताकत बहुत बढ़ती है। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं आने वाले पांच साल में मोदी की गारंटी है, देश पहले तीन वैश्विक इकोनॉमी में अपनी जगह ले लेगा, ये पक्का जगह ले लेगा। आज जो साढ़े 13 करोड़ गरीबी से बाहर आए हुए लोग हैं वो एक प्रकार से मध्यम वर्गीय ताकत बन जाते हैं। जब गरीब की खरीद शक्ति बढ़ती है तो मध्यम वर्ग की व्यापार शक्ति बढ़ती है। जब गांव की खरीद शक्ति बढ़ती है, तो कस्बे और शहर की आर्थिक व्यवस्था और तेज गति से दौड़ती है। और यही इंटर कनेक्टेड हमारा अर्थ चक्र होता है। हम उसको बल देकर के आगे चलना चाहते हैं।

शहर के अंदर जो कमजोर लोग रहते हैं, बिना बात की जो मुसीबत रहती है। मध्यम वर्गीय परिवार अपने खुद के घर का सपना देख रहे हैं। हम उसके लिए भी आने वाले कुछ सालों के लिए एक योजना लेकर के आ रहे हैं और जिसमें ऐसे मेरे परिवारजन जो शहरों में रहते हैं, लेकिन किराए के मकान पर रहते हैं, झुग्गी-झोपड़ी में रहते हैं, चाल में रहते हैं, unauthorised कॉलोनी में रहते हैं। ऐसे मेरे परिवारजन अगर अपना मकान बनाना चाहते हैं तो बैंक से जो लोन मिलेगा उसके ब्याज के अंदर राहत देकर के लाखों रुपयों की मदद करने का हमने निर्णय किया है। मेरे मध्यम वर्गीय परिवार को दो लाख से 7 लाख इनकम टैक्स की सीमा बढ़ जाती है तो सबसे बड़ा लाभ सैलरी क्लास को होता है, मेरे मध्यम वर्गीय को होता है। इंटरनेट का डाटा बहुत महंगा था 2014 के पहले। अब दुनिया का सबसे सस्ता इंटरनेट का डेटा पर खर्चा हो रहा है, हर परिवार के पैसे बच रहे हैं।

विश्व कोरोना के बाद अभी तक उभर नहीं पाया है, युद्ध ने फिर एक नई मुसीबत पैदा की है। आज दुनिया महंगाई के संकट से जूझ रही है। पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को महंगाई ने दबोच कर रखा है। हम भी दुनिया से जिन सामान की जरूरत होती है लाते हैं तो हमें सामान तो इम्पोर्ट करते हैं, हमारा दुर्भाग्य है कि हमें महंगाई भी इम्पोर्ट करनी पड़ती है। तो इस पूरी दुनिया को महंगाई ने जकड़ कर रखा है। लेकिन भारत ने महंगाई को नियंत्रित रखने के लिए भरसक प्रयास किए हैं। पिछले कालखंड की तुलना में हमें कुछ सफलता भी मिली है लेकिन इतने से संतोष नहीं मान नहीं सकते। दुनिया से हमारी चीजें अच्छी हैं, इतनी बात से हम सोच नहीं सकते, मुझे तो मेरे देशवासियों को महंगाई का बोझ कम से कम हो इस दिशा में और भी कदम उठाने हैं। और हम उस कदम को उठा कर रहेंगे। मेरा प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

आज देश अनेक क्षमताओं को लेकर आगे बढ़ रहा है। देश आधुनिकता की तरफ आगे बढ़ने के लिए काम कर रहा है। आज देश Renewable energy में काम कर रहा है, आज देश green hydrogen पर काम हो रहा है, देश की space में क्षमता बढ़ रही है। तो देश deep sea mission में भी सफलता के साथ आगे चल रहा है। देश में रेल आधुनिक हो रही है, तो वंदे भारत, बुलेट ट्रेन भी आज देश के अंदर काम कर रही है। गांव-गांव पक्की सड़कें बन रही है तो इलेक्ट्रिक बसें, मेट्रो की रचना भी आज देश में हो रहे हैं। आज गांव-गांव तक इंटरनेट पहुंच रहा है तो quantum computer के लिए भी देश काम करता है Nano Urea और Nano DAP उस पर काम हो रहा है तो दूसरी तरफ जैविक खेती पर भी हम बल दे रहे हैं। आज किसान उत्पादक संघ FPO का निर्माण हो रहा है तो हम सेमीकंडक्टर का भी निर्माण करना चाह रहे हैं। हम दिव्यांगजनों के लिए एक सुगम भारत के निर्माण के लिए काम करते हैं तो हम पैरालिंपिक में भी हिन्दुस्तान का तिरंगा झंडा गाड़ने के लिए मेरे दिव्यांगजनों को सामर्थ्यवान बना रहे हैं। हम खिलाड़ियों को स्पेशल ट्रेनिंग दे रहे हैं।

आज भारत पुरानी सोच, पुराने ढर्रे को छोड़ करके लक्ष्यों को तय करके, लक्ष्यों को प्राप्त करने की नजर से चल रहा है। और जब मैं कहता हूं कि जिसका शिलान्यास हमारी सरकार करती है उसके उद्घाटन भी हमारे कालखंड में करते हैं। इन दिनों जो मैं शिलान्यास कर रहा हूं न आप लिख करके रखिए उसके उद्घाटन भी आप सब ने मेरे नसीब में ही छोड़े हुए हैं। हमारी कार्य संस्कृति, बड़ा सोचना, दूर का सोचना, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय सोचना यह हमारी कार्यशैली रही है। और सोच से भी ज्यादा, संकल्प से भी ज्यादा हासिल कैसे करना इस ऊर्जा के साथ हम काम करते हैं। हमने आजादी के अमृत महोत्सव में 75 हजार अमृत सरोवर बनाने का संकल्प किया था। उस समय हमने हर जिले में 75 अमृत सरोवर बनाने का संकल्प किया था। करीब 50-55 हजार अमृत सरोवर की कल्पना की थी। लेकिन

आज करीब-करीब 75 हजार अमृत सरोवर के निर्माण का काम हो रहा है। यह अपने आप में बहुत बड़ा काम हो रहा है। जनशक्ति और जलशक्ति की यह ताकत भारत के पर्यावरण की रक्षा में भी काम आने वाली है। 18 हजार गांवों तक बिजली पहुंचाना, जन धन बैंक खाते खोलना, बेटियों के लिए शौचालय बनाना सारे टारगेट समय के पहले पूरी शक्ति से पूरे करेगा। और जब भारत ठान लेता है तो उसे पूरा करके रहता है, यह हमारा ट्रैक रिकॉर्ड कहता है।

200 करोड़ वैक्सीनेशन का काम। दुनिया जब हमें पूछती है न, 200 करोड़ सुनती है उनकी आंखे फट जाती है, इतना बड़ा काम। यह मेरे देश के आंगनवाड़ी वर्कर, हमारी आशा वर्कर, हमारी हेल्थ वर्कर उन्होंने करके दिखाया। यह मेरे देश का सामर्थ्य है। 5-G को रोल आउट किया, दुनिया में सबसे तेज गति से 5-G रोल आउट करने वाला मेरा देश है। 700 से अधिक जिलों तक हम पहुंच चुके हैं। और अब 6-G की भी तैयारी कर रहे हैं। हमने टास्क फोर्स बना दिया है। Renewable energy में हम टारगेट से पहले चले हैं। हमने Renewable energy 2030 का जो टारगेट तय किया था, 2021-2022 में उसका पूरा कर दिया। हमने इथेनॉल में 20 percent ब्लेंडिंग की बात कही थी वो भी हमने समय से पांच साल पहले पूरा कर दिया है। हमने 500 बिलियन डॉलर के एक्सपोर्ट की बात कही थी वो भी समय से पहले पांच सौ बिलियन डॉलर से ज्यादा कर दिया। हमने तय किया, जो हमारे देश में 25 साल से चर्चा हो रही थी कि देश में नई संसद बने। पार्लियामेंट का कोई सत्र ऐसा नहीं था, नई संसद के लिए, यह मोदी है समय के पहले नई संसद बना करके रख दिया। यह काम करने वाली सरकार है, निर्धारित लक्ष्यों को पार करने वाली सरकार है, यह नया भारत है, यह आत्मविश्वास से भरा हुआ भारत है, यह संकल्पों को चरितार्थ करने के लिए जी-जान से जुटा हुआ भारत है। और इसलिए यह भारत न रुकता है, यह भारत न थकता है, यह भारत न हांफता है और न ही ये भारत हारता है। और इसलिए आर्थिक शक्ति भरी है, तो हमारी सामरिक शक्ति को नई ताकत मिली है, हमारी सीमाएं पहले से अधिक सुरक्षित हुई है और मेरे सीमा पर बैठे हुए जवान, मेरे जवान जो देश की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं और मेरे देश की आंतरिक सुरक्षा संभालने वाले यूनिफॉर्म फोर्सेस, मैं आजादी के इस पावन पर्व पर उनको भी अनेक-अनेक बधाई देते हुए मेरी बात को आगे बढ़ाता हूं। सेना का आधुनिकीकरण हो, हमारी सेना युवा बने, हमारी सेना battle के लिए ready, युद्ध योग्य बने, इसलिए निरंतर रिफॉर्म का काम आज हमारी सेना में हो रहा है।

आए दिन हम लोग सुना करते थे, यहां बम धमाका हुआ, वहां बम धमाका हुआ। हर जगह पर लिखा हुआ रहता था कि इस बैग को मत छूना, एनाउसमेंट होते रहते थे। आज देश सुरक्षा की अनुभूति कर रहा है और जब सुरक्षा होती है, शांति होती है तो प्रगति के नए अरमान हम पूरे कर सकते हैं। उसके लिए सीरियल बम धमाके का जमाना बीती हुई बात हो गई है। निर्दोषों की जो मौत होती थी, वो बीते हुए कल की बात हो गई है। आज देश में आतंकी हमलों में भारी कमी आई है। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में भी बहुत बड़ा बदलाव आया है, बहुत बड़ा परिवर्तन का एक वातावरण बना है।

प्रगति की हर चीज में, लेकिन जब 2047, हम एक विकसित भारत का सपना ले करके चल रहे हैं तब, और वो सपना नहीं, 140 करोड़ देशवासियों का संकल्प है। और उस संकल्प को सिद्ध करने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा भी है और उसकी सबसे बड़ी ताकत होती है, वो राष्ट्रीय चरित्र होता है। दुनिया में जिन-जिन देशों ने प्रगति की है, दुनिया में जो-जो देश संकटों को पार करके निकले हैं, उनमें हर चीज के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण कैटेलेटिक एजेंट रहा है, वो राष्ट्रीय चरित्र रहा है। और हमें राष्ट्रीय चरित्र के लिए और बल देते हुए हमें आगे बढ़ना होगा। हमारा देश, हमारा राष्ट्रीय चरित्र ओजस्वी हो, तेजस्वी हो, पुरुषार्थी हो, पराक्रमी हो, प्रखर हो, ये हम सबका सामूहिक दायित्व है। और आने वाले 25 साल हम एक ही मंत्र को लेकर चलें, ये हमारे राष्ट्रीय चरित्र का सिरमौर होना चाहिए। एकता का संदेश, भारत की एकता को जीना, भारत की एकता को आंच आए, न ऐसी मेरी भाषा होगी, न ऐसा मेरा कोई कदम होगा। हर पल देश को जोड़ने का प्रयास मेरी तरफ से भी होता रहेगा। भारत की एकता हमें सामर्थ्य देती है। उत्तर हो, दक्षिण हो, पूर्व हो, पश्चिम हो, गांव हो, शहर हो, पुरुष हो, नारी हो, हम सबने एकता के भाव के साथ और विविधता भरे देश में एकता का सामर्थ्य होता है और दूसरी महत्व की बात मैं देख रहा हूं, अगर 2047 में हमें हमारे देश को विकसित भारत के रूप में देखना है तो हमें श्रेष्ठ भारत के मंत्र को जीना होगा, हमें चरितार्थ करना होगा।

अब हमारे प्रोडक्शन में, मैंने 2014 में कहा था जीरो डिफेक्ट, जीरो इफेक्ट। दुनिया के किसी भी टेबल पर मेक इन इंडिया चीज हो तो दुनिया को विश्वास होना चाहिए, इससे बेहतर दुनिया में कुछ नहीं हो सकता है। ये अल्टीमेट होगा, हमारी हर चीज, हमारी सर्विसेज होंगी तो श्रेष्ठ होंगी, हमारे शब्दों की ताकत होगी तो श्रेष्ठ होंगी, हमारी संस्थाएं होंगी तो श्रेष्ठ होंगी, हमारी निर्णय प्रक्रियाएं होंगी तो श्रेष्ठ होंगी। ये श्रेष्ठता का भाव ले करके हमें चलना होगा। तीसरी बात है देश में आगे बढ़ने के लिए एक अतिरिक्त शक्ति का सामर्थ्य भारत को आगे ले जाने वाला है और वो है women-led development, आज भारत गर्व से कह सकता है कि दुनिया में नागरिक उड्डयन में अगर किसी एक देश में सबसे ज्यादा women-pilot हैं तो मेरे देश में हैं। आज चन्द्रयान की गति हो, moon-mission की बात हो, मेरी women-scientist उसका नेतृत्व कर रही हैं। आज women self-help group हो, मेरी 2 करोड़ लखपति दीदी का लक्ष्य लेकर के आज women self-help group पर हम काम कर रहे हैं। हम, हमारी नारी शक्ति के सामर्थ्य को बढ़ावा देते हुए women-led development और जब जी-20 में मैंने women led development के विषयों को आगे बढ़ाया है तो पूरा जी-20 समूह इसके महत्व को स्वीकार कर रहा है और उसके महत्व को स्वीकार कर करके वो उसको बहुत बल दे रहे हैं। उसी प्रकार से भारत विविधताओं से भरा देश है। असंतुलित विकास के हम शिकार रहे हैं, मेरा-पराया के कारण हमारे देश के कुछ हिस्से उसके शिकार रहे हैं। अब हमें regional aspirations को संतुलित विकास को बल देना है और regional aspirations को लेकर के उस भावना को हमें सम्मान देते हुए जैसे हमारी भारत मां का कोई, हमारे शरीर का कोई अंग अगर अविकसित रहे तो हमारा शरीर विकसित नहीं माना जाएगा। हमारा शरीर का कोई अंग दुर्बल रहे तो स्वस्थ नहीं माना जाएगा। वैसे ही मेरी भारत माता उसका कोई एक भू-भाग भी, समाज का कोई तबका भी अगर दुर्बल रहे तो मेरी भारत माता समर्थ है, स्वस्थ है ऐसा सोचकर के हम नहीं बैठ सकते। और इसलिए regional aspirations को हमें address करने की आवश्यकता है और इसलिए हम समाज का सर्वांगीण विकास हो, सर्वपक्षीय विकास हो भू-भाग के हर क्षेत्र को उसकी अपनी ताकत को खिलने का अवसर मिले, उस दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं।

भारत एक mother of democracy है, भारत model of diversity भी है। भाषाएं

अनेक हैं, बोलियां अनेक हैं, परिधान अनेक हैं, विविधताएं बहुत है। हमने उन सारों के आधार पर आगे बढ़ना है।

जब मैं एकता की बात करता हूं तब अगर घटना मणिपुर में होती है तो पीढ़ा महाराष्ट्र में होती है, अगर बाढ़ असम में आती है तो बेचैन केरल हो जाता है। हिन्दुस्तान के किसी भी हिस्से में कुछ भी हो, हम एक अंगदान के भाव की अनुभूति करते हैं। मेरे देश की बेटियों पर जुल्म न हो, ये हमारा सामाजिक भी दायित्व है, ये हमारा पारिवारिक दायित्व भी है और ये देश के नाते हम सबका दायित्व है। आज जब अफगानिस्तान से गुरूग्रंथ साहब के स्वरूप को लाते है तो पूरा देश गौरव की अनुभूति करता है। जब आज दुनिया के किसी देश में कोविड के काल में मेरा कोई सिख भाई लंगर लगाता है, भूखों को खिलाता है और दुनिया में वाहा-वाही होती है तो हिंदुस्तान का सीना चौड़ा हो जाता है। हमारे लिए जब नारी सम्मान की बात करते है। मुझे अभी, एक देश में दौरा कर रहा था तो वहां एक बहुत सीनियर मिनिस्टर उसने मुझे एक सवाल पूछा, उसने कहां आपके यहां बेटियां science और engineering के विषयों की पढ़ाई करती है क्या? मैंने उनको कहा आज मेरे देश में लड़कों से ज्यादा बेटियां आज STEM यानी science, technology, engineering और maths, अधिकतम भाग मेरी बेटियां ले रही हैं तो उनके लिए अचरज था। ये सामर्थ्य आज हमारे देश का दिख रहा है।

आज 10 करोड़ महिलाएं women self help में जुड़ी हुई हैं और women self help group के साथ आप गांव में जाएंगे तो आपको बैंक वाली दीदी मिलेगी, आपको आंगनबाड़ी वाली दीदी मिलेगी, आपको दवाई देने वाली दीदी मिलेगी और अब मेरा सपना है, 2 करोड़ लखपति दीदी बनाने का, गांव में 2 करोड़ लखपति दीदी। और इसके लिए एक नया विकल्प भेजा, science और technology, हमारे गांव की महिलाओं का सामर्थ्य देखता हूं और इसलिए मैं नई योजना सोच रहा हूँ कि हमारे एग्रीकल्चर सेक्टर में टेक्नोलॉजी आए, एग्रीटेक को बल मिले, इसलिए Women Self Help Group की बहनों को हम ट्रेनिंग देंगे। ड्रोन चलाने की, ड्रोन रिपेयर करने की हम ट्रेनिंग देंगे और हजारों ऐसे Women Self Help Group को भारत सरकार ड्रोन देगी, ट्रेनिंग देगी और हमारे एग्रीकल्चर के काम में ड्रोन की सेवाएं उपलब्ध हों, इसके लिए हम शुरूआत करेंगे, प्रारंभ हम 15 हजार Women Self Help Group के द्वारा ये ड्रोन की उड़ान का हम आरंभ कर रहे हैं।

आज देश आधुनिकता की तरफ बढ़ रहा है। Highway हो, Railway हो, Airway हो, I-Ways हो, information Ways, Water Ways हो, कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिस क्षेत्र को आगे बढ़ाने की दिशा में आज देश काम न करता हो। पिछले 9 वर्ष में तटीय क्षेत्रों में, हमने आदिवासी क्षेत्र में, हमारे पहाड़ी क्षेत्र में विकास को बहुत बल दिया है। हमने पर्वत माला, भारत माला ऐसी योजनाओं के द्वारा समाज के उस वर्ग को हमने बल दिया है। हमने गैस की पाइपलाइन से हमारे पूर्वी भारत को जोड़ने का काम किया है। हमने अस्पतालों की संख्या बढ़ाई है। हमने डॉक्टर्स की सीटें बढ़ाई हैं ताकि हमारे बच्चे डॉक्टर बनने का सपना पूरा कर सकें । हमने मातृभाषा पर पढ़ाने में बल दिया है और मातृभाषा में वो पढ़ाई कर सके उस दिशा में और मैं भारत के सुप्रीम कोर्ट का भी धन्यवाद करता हूँ कि भारत के सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अब जो judgement देंगे, उसका जो operative part होगा, वो जो अदालत में आया है, उसकी भाषा में उसको उपलब्ध होगा। मातृभाषा का महात्म्य आज बढ़ रहा है।

आज तक हमारे देश के जो Border Village हैं, हमने वहां Vibrant Border Village का एक कार्यक्रम शुरू किया है और Vibrant Border Village अब तक इसके लिए कहा जाता था देश के आखिरी गांव, हमने उस पूरी सोच को बदला है। वो देश का आखिरी गांव नहीं है, सीमा पर जो नजर आ रहा है, वो मेरे देश का पहला गांव है। अगर सूरज उगता है पूर्व में, तो उस तरफ के गांव में पहली सूरज की किरण आती है। अगर सूरज ढलता है, तो इस तरफ के गांव में आखरी किरण का उसका लाभ मिलता है। ये मेरे पहले गांव है और मुझे खुशी है कि आज मेरे इस कार्यक्रम के विशेष मेहमान, ये जो पहले गांव हैं, सीमावर्ती गांव हैं, उसके 600 प्रधान आज इस लाल किले की प्राचीर के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए आए हैं। पहली बार वो इतनी दूर तक आए हैं। नए संकल्प और सामर्थ्य के साथ जुड़ने के लिए आए हैं।

हमने संतुलित विकास के लिए Aspirational District, Aspirational Block की कल्पना की और आज उसके सुखद परिणाम मिल रहे हैं। आज राज्य के जो Normal Parameters हैं, जो Aspirational Districts कभी बहुत पीछे थे, वो आज राज्य में भी अच्छा करने लग गए हैं और मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में ये हमारे आकांक्षित जिले, हमारे आकांक्षित ब्लॉक अवश्य आगे बढ़ेंगे। जैसा मैंने कहा था भारत के चरित्र की चर्चा कर रहा था, तो मैंने पहले कहा था भारत की एकता, दूसरा कहा था भारत श्रेष्ठता की तरफ बल दे, तीसरा कहा था Women Development की मैंने बात कही थी। और मैं आज एक बात और कहना चाहता हूँ कि हम जैसे Regional aspiration मैंने चौथी बात कही थी, पांचवी महत्व की बात है और भारत ने अब उस दिशा में जाना है

और वो है हमारा राष्ट्रीय चरित्र, विश्व मंगल के लिए सोचने वाला होना चाहिए। हमें देश को इतना मजबूत बनाना है, जो विश्व मंगल के लिए भी अपनी भूमिका अदा करें। और आज कोरोना के बाद मैं देख रहा हूँ, जिस प्रकार से संकट की घड़ी में देश ने दुनिया की मदद की उसका परिणाम है कि आज दुनिया में हमारा देश एक विश्व मित्र के रूप में है। विश्व के अटूट साथी के रूप में है। आज मेरे देश की पहचान बनी है। हम जब विश्व मंगल की बात करते हैं, तब भारत का मूलभूत विचार है उस विचार को हम आगे बढ़ाने वाले लोग हैं और मुझे खुशी है कि आज अमेरिकी संसद के भी कई चुने हुए गणमान्य प्रतिनिधि भी आज हमारे 15 अगस्त के इस अवसर में हमारे बीच में मौजूद हैं। भारत की सोच कैसी है, हम विश्व मंगल की बात को कैसे आगे बढ़ाते हैं। अब देखिए, जब हम जब सोचते हैं तो क्या कहते हैं, हमने दुनिया के सामने ये दर्शन रखा है, और दुनिया उस दर्शन को लेकर के हमारे साथ जुड़ रही है। हमने कहा One Sun, One World, One Grid. Renewable energy के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा हमारा statement है, आज दुनिया उसको स्वीकार कर रही है। कोविड के बाद हमने दुनिया को कहा हमारी ये approach होनी चाहिए One Earth, One Health समस्याओं का समाधान तभी होगा, जब मानव को, पशु को, पौधे को बीमारी के समय में समान रूप से address किया जाएगा, तब जाकर के हम ये करेंगे। हमने जी-20 समिट के लिए दुनिया के सामने कहा है One World, One Family, One Future इस सोच को लेकर के चल रहें हैं। हमने क्लाईमेट को लेकर के दुनिया जो संकट से जूझ रही है, हमने रास्ता दिखाया है, लाइव मिशन लॉन्च किया है Lifestyle For Environment, हमने दुनिया के सामने मिलकर International Solar Alliance बनाया और आज दुनिया के कई देश International Solar Alliance का हिस्सा बन रहे हैं। हमने bio diversity का महत्व देखते हुए Big Cat Alliance की व्यवस्था को हमने आगे बढ़ाया है।

हमने प्राकृतिक आपदा के कारण ग्लोबल वार्मिंग के कारण Infrastructure का जो नुकसान होता है, उसके लिए दूरगामी व्यवस्थाओं की जरूरत है। और इसलिए Coalition for Disaster Resilient Infrastructure, CDRI एक समाधान के रूप में दुनिया को दिया है। विश्व आज समुद्रों को संघर्ष का केंद्र बना रहा है, तब हमने दुनिया को सागर का प्लेटफार्म दिया है। जो वैश्विक सामुद्रिक शांति की गारंटी बन सकता है। हमने पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को बल देते हुए WHO का एक ग्लोबल लेवल का सेंटर हिंदुस्तान में बनाने की दिशा में काम किया है। हमने योग और आयुष के द्वारा विश्व कल्याण और विश्व की स्वस्थता की दिशा में काम किया है। आज भारत विश्व मंगल की मजबूत नींव डाल रहा है। इस मजबूत नींव को आगे बढ़ाना, हम सबका काम है। हम सबकी जिम्मेदारी है।

सपने अनेक हैं, संकल्प साफ है, नीतियाँ स्पष्ट हैं। नियत के सामने कोई सवालिया निशान नहीं है। लेकिन कुछ सच्चाईयों को हमें स्वीकार करना पड़ेगा और उसके समाधान के लिए मैं आज लाल किले से आपकी मदद मांगने आया हूं, मैं लाल किले से आपका आर्शीवाद मांगने आया हूं। क्योंकि पिछले सालों मैंने देश को जो समझा है, देश की आवश्यकताओं को जो मैंने परखा है। और अनुभव के आधार पर मैं कह रहा हूं कि आज गंभीरतापूर्वक उन चीजों को हमें लेना होगा। आजादी के अमृतकाल में, 2047 में जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, उस समय दुनिया में भारत का तिरंगा-झंडा विकसित भारत का तिरंगा-झंडा होना चाहिए, रत्ती भर भी हमें रुकना नहीं है, पीछे हटना नहीं है और इसके लिए शुचिता, पारदर्शिता और निष्पक्षता ये पहली मजबूती की जरूरत है। हमें उस मजबूती को जितना ज्यादा खाद पानी दे सकते हैं, संस्थाओं के माध्यम से दे सकते हैं, नागरिक के नाते दे सकते हैं, परिवार के नाते दे सकते हैं यह हमारा सामूहिक दायित्व होना चाहिए। और इसलिए पिछले 75 साल का इतिहास देखिए, भारत के सामर्थ्य में कोई कमी नहीं थी और यह जो देश कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था वो देश क्यों न फिर से उस सामर्थ्य को ले करके खड़ा हो सकता है। मेरा अटूट विश्वास है मेरा अखंड, अटूट, एकनिष्ठ विश्वास है कि 2047 में जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा मेरा देश विकसित भारत बनकर रहेगा। और यह मैं मेरे देश के सामर्थ्य के आधार पर कह रहा हूं। मेरे उपलब्ध संसाधनों के आधार पर कह रहा हूं और सबसे ज्यादा 30 से कम आयु वाली मेरी युवा शक्ति के भरोसे कह रहा हूं। मेरी माताओं-बहनों के सामर्थ्य के भरोसे कह रहा हूं, लेकिन उसके सामने अगर कोई रुकावट है, कुछ भी कृतियां पिछले 75 साल में ऐसे घर कर गई है, हमारी समाज व्यवस्था का ऐसा हिस्सा बन गई है कि कभी-कभी तो हम आंख भी बंद कर देते हैं। अब आंख बंद करने का समय नहीं है। अगर सपनों को सिद्ध करना है, संकल्प को पार करना है तो हमें यह आंख-मिचौली बंद करके आंख में आंख मिला करके तीन बुराईयों से लड़ना बहुत समय की मांग है।

हमारे देश की सारी समस्याओं की जड़ में भ्रष्टाचार ने दीमक की तरह देश की सारी व्यवस्थाओं को, देश के सारे सामर्थ्य को पूरी तरह नोंच लिया है। भ्रष्टाचार से मुक्ति, भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग हर इकाई में हर क्षेत्र में और यह मोदी के जीवन का कमिटमेंट है, यह मेरे व्यक्तित्व का एक कमिटमेंट है कि मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ता रहूंगा। दूसरा हमारे देश को नोंच लिया है परिवारवाद ने। इस परिवारवाद ने देश को जिस प्रकार से जकड़ करके रखा है उसने देश के लोगों का हक छीना है, और तीसरी बुराई तुष्टिकरण की है। यह तुष्टिकरण में भी देश के मूल चिंतन को, देश के सर्वसमावेशक हमारे राष्ट्रीय चरित्र को दाग लगा दिए हैं। तहस-नहस कर दिया इन लोगों ने। और इसलिए हमें इन तीन बुराइयों के खिलाफ पूरे सामर्थ्य के साथ लड़ना है। भ्रष्टाचार, परिवारवाद, तुष्टिकरण यह चुनौतियां, ये ऐसी चीजें पनपी है जो हमारे देश के लोगों का, जो आकांक्षाएं है, उसका दमन करती है। हमारे देश के कुछ लोगों के पास जो छोटा-मोटा सामर्थ्य है उसका शोषण करती है। यह ऐसी चीजें हैं, जो हमारे लोगों की आशाओं-आकांक्षाओं को सवाल या निशान में गढ़ देती है। हमारे गरीब हो, हमारे दलित हों, हमारे पिछड़े हो, हमारे पसमांदा हो, हमारे आदिवासी भाई-बहन हो, हमारी माताएं-बहनें हो, हमने, सबने उनके हकों के लिए इन तीन बुराइयों से मुक्ति पानी है। हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ एक नफरत का माहौल बनाना है। जैसे गंदगी हमें नफरत पैदा करती है न, मन में, गंदगी पसंद नहीं है, यह सार्वजनिक जीवन की इससे बड़ी कोई गंदगी नहीं हो सकती।

और इसलिए हमारे स्वच्छता अभियान को एक नया मोड़ ये भी देना है कि हमें भ्रष्टाचार से मुक्ति पानी है। सरकार टेक्नोलॉजी से भ्रष्टाचार की मुक्ति के लिए बहुत प्रयास कर रही है। आपको जानकर हैरानी होगी, इस देश में पिछले 9 साल में एक काम मैंने ऐसा किया, आंकड़ा सुनोगे तो लगेगा कि मोदी ऐसा करता है जैसे दस करोड़ लोग करीब-करीब जो गलत फायदा उठाते थे, वो मैंने रोक दिया। तो आप में से कोई कहेगा आपने लोगों से अन्याय कर दिया, जी नहीं, ये दस करोड़ लोग कौन लोग थे, ये दस करोड़ लोग वो लोग थे, जिनका जन्म ही नहीं हुआ था और उनके नाम पर उनके widow हो

जाते थे, वो वृद्ध हो जाते थे, वो दिव्यांग हो जाते थे, फायदे लिए जाते थे। दस करोड़ ऐसी बेनामी चीजें जो चलती थीं, उसको रोकने का पवित्र काम, भ्रष्टाचारियों की संपत्ति जो हमने जब्त की है ना, वो पहले की तुलना में 20 गुना ज्यादा की है।

ये आपकी कमाई का पैसा लोग ले करके भागे थे। 20 गुना ज्यादा संपत्ति को जब्त करने का, और इसलिए लोगों की मेरे प्रति नाराजगी होना बहुत स्वाभाविक है। लेकिन मुझे भ्रष्टाचार के खिलाफ की लड़ाई को आगे बढ़ाना है। हमारी सरकारी व्यवस्था ने, पहले कैमरा के सामने तो कुछ हो जाता था, लेकिन बाद में चीजें अटक जाती थीं। हमने पहले की तुलना में कई गुना ज्यादा अदालत में चार्जशीट की है और अब जमानतें भी नहीं मिलती हैं, वैसी पक्की व्यवस्था को ले करके हम आगे बढ़ रहे हैं, क्योंकि हम ईमानदारी से भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ रहे हैं। आज परिवारवाद और तुष्टिकरण इसने देश का बहुत बड़ा दुर्भाग्य किया है। अब लोकतंत्र में ये कैसे हो सकता है कि पॉलिटिकल पार्टी, और मैं विशेष बल दे रहा हूं पॉलिटिकल पार्टी, आज मेरे देश के लोकतंत्र में एक ऐसी विकृति आई है जो कभी भारत के लोकतंत्र को मजबूती नहीं दे सकती और वो क्या है बीमारी, परिवारवादी पार्टियां। और उनका तो मंत्र क्या है, पार्टी ऑफ द फैमिली, बाय द फैमिली एंड फॉर द फैमिली। इनका तो जीवन मंत्र यही है कि उनकी पॉलिटिकल पार्टी, उनका राजनीतिक दल परिवार का, परिवार के द्वारा और परिवार के लिए। परिवारवाद और भाई-भतीजावाद प्रतिभाओं के दुश्मन होते हैं, योग्यताओं को नकारते हैं, सामर्थ्य को स्वीकार नहीं करते हैं। और इसलिए परिवारवाद की इस देश के लोकतंत्र की मजबूती के लिए उसकी मुक्ति जरूरी है।

सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, हर किसी को हक मिले, इसलिए और सामाजिक न्याय के लिए भी ये बहुत जरूरी है, उसी प्रकार से तुष्टिकरण, तुष्टिकरण ने सामाजिक न्याय का सबसे बड़ा नुकसान किया है। अगर सामाजिक न्याय को तबाह किसी ने किया है तो ये तुष्टिकरण की सोच, तुष्टिकरण की राजनीति, तुष्टिकरण का सरकारी योजनाओं का तरीका, इसने सामाजिक न्याय को मौत के घाट उतार दिया है। और इसलिए हमें तुष्टिकरण, भ्रष्टाचार, ये विकास के सबसे बड़े दुश्मन हैं। अगर देश विकास चाहता है, देश 2047, विकसित भारत का सपना साकार करना चाहता है तो हमारे लिए आवश्यक है कि हम किसी भी हालत में देश में भ्रष्टाचार को सहन नहीं करेंगे, इस मूड को ले करके चलना चाहिए।

हम सबका एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण दायित्व है, आपने जिस प्रकार से जिंदगी जी है, हमारी आने वाली पीढ़ी को ऐसी जिंदगी जीने के लिए मजबूर करना, ये हमारा गुनाह है, ये हमारा दायित्व है कि हमारी आने वाली पीढ़ी को हम ऐसा समृद्ध देश दें, ऐसा संतुलित देश दें, ऐसा सामाजिक न्याय की धरोहर वाला देश दें, ताकि छोटी-छोटी चीजों को पाने के लिए उन्हें कभी भी संघर्ष न करना पड़े।

हम सभी का कर्तव्य, हर नागरिक का कर्तव्य है और ये अमृतकाल कर्तव्यकाल है। हम कर्तव्य से पीछे नहीं हो सकते हैं, हमें वो भारत बनाना है, जो पूज्य बापू के सपनों का था, हमें वो भारत बनाना है जो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का सपना था, हमें वो भारत बनाना है जो हमारे वीर-शहीदों का था, हमारी वीरांगनाओं का था, जिन्होंने मातृभूमि के लिए अपना जीवन दे दिया था।

मैं जब 2014 में आपके पास आया था तब 2014 में मैं परिवर्तन का वादा लेकर के आया था। 2014 में मैंने आपको वादा किया था मैं परिवर्तन लाऊंगा। और 140 करोड़ मेरे परिवारजन आपने मुझ पर भरोसा किया और मैंने विश्वास पूरा करने की कोशिश की। Reform, Perform, Transform वो 5 साल जो वादा था वो विश्वास में बदल गया क्योंकि मैंने परिवर्तन का वादा किया था।

Reform, Perform, Transform के द्वारा मैंने इस वादे को विश्वास में बदल दिया है। कठोर परिश्रम किया है, देश के लिए किया है, शान से किया है, सिर्फ और सिर्फ nation first राष्ट्र सर्वोपरि इस भाव से किया है। 2019 में performance के आधार पर आप सबने मुझे फिर से आशीर्वाद दिया। परिवर्तन का वादा मुझे यहां ले आया, performance मुझे दोबारा ले आया और आने वाले 5 साल अभूतपूर्व विकास के हैं। 2047 के सपने को साकार करने का सबसे बड़ा स्वर्णीम पल आने वाले 5 साल हैं। और अगली बार 15 अगस्त को इसी लाल किले से मैं आपको देश की उपलब्धियां, आपके सामर्थ्य, आपके संकल्प उसमें हुई प्रगति, उसकी जो सफलता है, उसके गौरवगान उससे भी अधिक आत्मविश्वास के साथ, आपके सामने में प्रस्तुत करूंगा।

मैं आप में से आता हूं, मैं आपके बीच से निकला हूं, मैं आपके लिए जीता हूं। अगर मुझे सपना भी आता है, तो आपके लिए आता है। अगर मैं पसीना भी बहाता हूं तो आपके लिए बहाता हूं, क्योंकि इसलिए नहीं कि आपने मुझे दायित्व दिया है, मैं इसलिए कर रहा हूं कि आप मेरे परिवारजन हैं और आपके परिवार के सदस्य के नाते मैं आपके किसी दुःख को देख नहीं सकता हूँ, मैं आपके सपनों को चूर-चूर होते नहीं देख सकता हूं। मैं आपके संकल्प को सिद्धी तक ले जाने के लिए आपका एक साथी बनकर के, आपका एक सेवक बनकर के, आपके साथ जुड़े रहने का, आपके साथ जीने का, आपके लिए जूझने का मैं संकल्प लेकर के चला हुआ इंसान हूं और मुझे विश्वास है हमारे पूर्वजों ने आजादी के लिए जो जंग लड़ा था, जो सपने देखे थे, वो सपने हमारे साथ हैं। आजादी के जंग में जिन्होंने बलिदान दिया था, उनके आशीर्वाद हमारे साथ हैं और 140 करोड़ देशवासियों के लिए एक ऐसा अवसर आया है, ये अवसर हमारे लिए एक बहुत बड़ा संबल लेकर के आया है।

आज जब मैं अमृतकाल में आपके साथ बात कर रहा हूं, ये अमृतकाल का पहला वर्ष है, ये अमृतकाल के पहले वर्ष पर जब मैं आपसे बात कर रहा हूं तो मैं आपको पूरे विश्वास से कहना चाहता हूं-

चलता चलाता कालचक्र,
अमृतकाल का भालचक्र,
सबके सपने, अपने सपने,
पनपे सपने सारे, धीर चले,
वीर चले, चले युवा हमारे,
नीति सही रीती नई, गति सही राह नई,
चुनो चुनौती सीना तान,
जग में बढ़ाओ देश का नाम।

ये अमृतकाल हम सबके लिए कर्तव्य काल है। ये अमृतकाल हम सबको मां भारती के लिए कुछ कर गुजरने का काल है। आजादी की जब जंग चल रही थी, 1947 के पहले जो पीढ़ी ने जन्म लिया था, उन्हें देश के लिए मरने का मौका मिला था।

वो देश के लिए मरने के लिए मौका नहीं छोड़ते थे लेकिन हमारे नसीब में देश के लिए मरने का मौका नहीं है। लेकिन हमारे लिए देश के लिए जीने का ये इससे बड़ा कोई अवसर नहीं हो सकता। हमें पल-पल देश के लिए जीना है, इसी संकल्प के साथ इस अमृत काल में 140 करोड़ देशवासियों के सपने संकल्प भी बनाने हैं। 140 करोड़ देशवासियों के संकल्प को सिद्धि में भी परिवर्तित करना है और 2047 का जब तिरंगा झंडा फहरेगा, तब विश्व एक विकसित भारत का गुणगान करता होगा। ▪

भाजपा का भगवा लहराना है- अमित शाह

केंद्रीय गृहमंत्री ने किया भारतीय जनता पार्टी के नए सदस्यता अभियान का शुभारंभ

भारतीय जनता पार्टी का विजय अभियान अभी समाप्त नहीं हुआ है। जिस दिन पूरी दुनिया भारत माता के जयकारे लगाएगी, उस दिन लक्ष्य पूरा होगा। मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता चुनाव जीतने के लिए बने हैं, क्योंकि विजय आपका स्वभाव है, आपका पराक्रम है और विजय ही आपका लक्ष्य है।

मध्यप्रदेश का कार्यकर्ता देवदुर्लभ और अनुभवी है। कार्यकर्ताओं के पास लंबा अनुभव है। कार्यकर्ताओं ने चुनाव जीते भी हैं और जिताए भी हैं। आज हम जिस पद पर भी हैं, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता ही हैं। इसलिए यह चुनाव भाजपा के भविष्य का चुनाव है, भारत माता के वैभव को परम शिखर पर पहुंचाने का चुनाव है। श्री नरेन्द्र मोदी जी को फिर से प्रधानमंत्री बनाकर करोड़ों गरीबों के जीवन में जनसंघ के दीप के उजियारे को प्रदीप्त करने का चुनाव है। हम सभी कार्यकर्ताओं को मिलकर चुनाव अभियान में जुटना है। भारत माता को परम वैभव पर पहुंचाने के लिए चुनाव में 150 सीटें जीतकर कांग्रेस को परास्त करना होगा।

जब दुनिया में गूंजेंगे भारतमाता के जयकारे, तब पूरा होगा लक्ष्य

भारतीय जनता पार्टी का विजय अभियान अभी समाप्त नहीं हुआ है। जिस दिन पूरी दुनिया भारत माता के जयकारे लगाएगी, उस दिन लक्ष्य पूरा होगा। मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता चुनाव जीतने के लिए बने हैं, क्योंकि विजय आपका स्वभाव है, आपका पराक्रम है और विजय ही आपका लक्ष्य है। हमें लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामूहिक प्रयास करना होगा। मैं गारंटी के साथ आपसे कहता हूं कि 30 साल तक मध्यप्रदेश में पंचायत से पार्लियामेंट तक भाजपा का भगवा परचम लहराता रहेगा।

हनुमान जी की तरह अपनी शक्तियों को पहचानें कार्यकर्ता

ग्वालियर श्रद्धेय राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी के पुण्य से सीचीं हुई भूमि है, जहां एकात्म मानववाद को सबसे पहले पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने प्रतिपादित किया था। यह स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी की कर्मभूमि है, यह श्रद्धेय कुशाभाऊ जी के संगठनात्मक तप की भूमि है। यहां उन्होंने पार्टी का जो बीज बोया था, वह आज वट वृक्ष बन गया है। आज यहां चार पीढ़ी के कार्यकर्ता बैठे हैं। देश-दुनिया में बहुत कम राजनीतिक पार्टियों के पास ऐसे देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं की टीम है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास चार पीढ़ियों की टीम है।

एक बार की विजय अगली विजय के उत्साह को पैदा करती है, परंतु बार-बार विजय मिले तो आलस्य पैदा होता है। इसलिए आलस्य को त्यागकर पूरे उत्साह के साथ कार्यकर्ताओं को जुटना होगा। भगवान श्री हनुमान जी की तरह अपनी शक्तियों को पहचान कर अपने बूथ पर पूरे प्राणप्रण से जुटना होगा। मैं सिर्फ आपको विजय का संकल्प याद दिलाने आया हूं। पूरा विश्वास है कि जिस बूथ पर हमारा कार्यकर्ता पूरी मजबूती के साथ खड़ा हो जाएगा, वहां भले ही 100 कांग्रेस कार्यकर्ता क्यों न आ जाएं, पटखनी देने के लिए काफी है। यहां पर बैठे सब कार्यकर्ताओं में चुनाव जीतने और जिताने की क्षमता है। आपको कुछ सिखाने की जरूरत नहीं है, सिर्फ स्मरण करने की जरूरत है।

छिंदवाड़ा से करें विजय संकल्प अभियान की शुरुआत

मध्यप्रदेश में सबसे अधिक चुनाव जीतने का रिकॉर्ड है। पंचायत से लेकर जिला व विधानसभा चुनाव जीतने का अनुभव है। 2019 में 29 में से 28 सीट जिताने वाले कार्यकर्ता यहां

बैठे हैं। इसलिए संकल्प लें कि लोकसभा चुनाव में इस बार सबसे पहले छिंदवाड़ा की सीट जीतकर विजय संकल्प अभियान की शुरूआत करेंगे। इस संकल्प को अगर हमें सिद्ध करना है तो 2023 में डेढ़ सौ से अधिक सीटें जीतकर भाजपा का भगवा एक बार फिर मध्यप्रदेश में लहराना होगा। हमें चुनाव सरकार बनाने के लिए नहीं जीतना है, बल्कि इसलिए जीतना है ताकि बंटाढार और कमलनाथ की सालों तक चुनाव के बारे में सोचने की हिम्मत न हो। हम विजय के अधिकारी हैं, हमें चुनाव लड़ना और लड़ाना आता है। हमारा उद्देश्य पवित्र है, हमारे संकल्प में स्व का भाव नहीं है, हमारा संकल्प गरीब कल्याण है। हमें 150 सीटें जीतने के लिए चुनाव लड़ना है। इतना बड़ा चुनाव लड़ना है तो जोश से नहीं होश से काम करना है। मतदाता सूची के हर पेज से 50 प्रतिशत से अधिक वोट हासिल करने का चुनाव लड़ना है।

नहीं चलेंगे जातिवाद, तुष्टिकरण और परिवारवाद

2018 में चुनाव हम नहीं हारे थे, एक लाख वोट हमें अधिक मिले थे। इस बार जातिवाद, तुष्टिकरण, परिवारवाद सामने आएगा, लेकिन यह सब चलने वाला नहीं है क्योंकि प्रदेश की जनता कांग्रेस को अच्छी तरीके से जान गई है। इस बार राष्ट्रवाद की विजय होगी। हर पेज प्रमुख के साथ बैठकर 50 प्रतिशत वोट हासिल करने का संकल्प दिलाना है। यहां से हमें यही संकल्प लेकर जाना है। हमारी विजय बहुत जरूरी है।

जनसंघ के संकल्पों को मोदी सरकार ने किया पूरा

भाजपा सभी तरह के वैभव से युक्त है। पंचायत से लेकर पार्लियामेंट तक, बंगाल से कच्छ और लद्दाख से कन्याकुमारी तक भाजपा के जयकारे और भारत माता की जय सुनाई देती है। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की ख्याति और उनकी सिद्धियों के माध्यम से आज दुनियाभर में भारत माता का जयघोष हो रहा है। जिस उद्देश्य के लिए पार्टी को बनाया गया था, उसकी पूर्ति होते हुए हम देख रहे हैं। जनसंघ की स्थापना के समय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, पुर्नजागरण, भारत माता को वैभव तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया था, जिसे मोदी सरकार ने 2019 में ही पूरा कर लिया है। इसलिए देश की प्रगति के लिए सरकार बनाना बहुत आवश्यक है। यह विजय आपका पराक्रम और आपका लक्ष्य है। यदि आपने मन से संकल्प ले लिया तो 30 साल तक भाजपा का भगवा ध्वज देश और प्रदेश में लहराता रहेगा।

आतंकवाद को समूल नष्ट किया मोदी सरकार ने

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यकाल में देश और प्रदेश का चहुंमुखी विकास हुआ है। देश में जब कांग्रेस की सरकारें थी, पाकिस्तान से सिमी, आईएसआई के आतंकी घुसते थे और हमारी सेना पर हमला करते थे। लेकिन मौनी बाबा कुछ नहीं बोलते थे, चुप रहते थे। मोदी जी आए, उरी में हमला हुआ तो पाकिस्तान के घर में घुसकर सर्जिकल, एयर स्ट्राइक कर आतंकवाद का समूल नष्ट किया। हमने इस देश को सुरक्षित करने का काम किया। भारत को परम वैभव तक पहुंचाने के लिए सारे काम किए हैं। आज भारत की तरफ पूरी दुनिया विश्वास के साथ देख रही है। आज भारत दुनिया की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। पांच साल में हम तीसरी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे। हम पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के संकल्पों को पूरा कर रहे हैं। आज हर गरीब को अपना जीवन स्तर सुधारने का मौका सरकार ने दिया है। 9 सालों में गरीबों का जीवन स्तर सुधारने का काम केन्द्र सरकार ने किया है। ▪

चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग पर वैज्ञानिकों को बधाई- विष्णुदत्त शर्मा

भारत ने चंद्रमा की सतह पर चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वैज्ञानिकों के अथक मेहनत का ही परिणाम है। देश की 140 करोड़ जनता ने उत्साहित होकर सभी वैज्ञानिकों को आभार व्यक्त कर बधाई दी है। माइलस्टोन तक पहुंचने का काम देश के वैज्ञानिकों ने किया है। पिछले चन्द्रयान की लैंडिंग में कुछ चूक हो गयी थी तब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था मैं आप सभी के साथ खड़ा हूं। यह नेतृत्व की इच्छाशक्ति और संकल्पशक्ति ही है, जिसके कारण दक्षिणी ध्रुव पर चन्द्रयान 3 की लैंडिंग होकर भारत ने इतिहास बनाया है। निश्चित ही, मोदी जी के नेतृत्व में भारत विकसित देश बनेगा।

यह देश के वैज्ञानिक समुदाय की उल्लेखनीय उपलब्धि है, जिस पर हम सभी को गर्व है। भारत के वैज्ञानिकों ने दुनिया को यह बता दिया है कि प्रतिभा और क्षमता के मामले में हम दुनिया के किसी देश से पीछे नहीं हैं। अन्य देशों के ऐसे ही अभियानों से काफी कम बजट में चंद्रयान अभियान की सफलता ने साबित कर दिया है कि सफलता सिर्फ संसाधनों की मोहताज नहीं होती, बल्कि कड़ी मेहनत, लक्ष्य के प्रति समर्पण और देश के प्रति निष्ठा रखकर भी ऐसी उपलब्धियां हासिल की जा सकती हैं। अब वह दिन दूर नहीं, जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रेरक व्यक्तित्व से प्रोत्साहित देश का वैज्ञानिक समुदाय भारत को विज्ञान के क्षेत्र में एक महाशक्ति के रूप में स्थापित कर देंगे। ▪

लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पर प्रधानमंत्री

2047 में विकसित हिन्दुस्तान होगा- नरेन्द्र मोदी

एक तरह से विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव हमारे लिए शुभ होता है, और एनडीए और बीजेपी 2024 के चुनाव में पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़कर के भव्य विजय के साथ जनता के आशीर्वाद से वापस आएगी।

देश की जनता ने सरकार के प्रति बार-बार विश्वास जताया है। भगवान बहुत दयालु हैं और भगवान की मर्जी होती है कि वो किसी न किसी के माध्यम से अपनी इच्छा की पूर्ति करता है, किसी न किसी को माध्यम बनाता है। इसे भगवान का आशीर्वाद मानता हूं कि ईश्वर ने विपक्ष को सुझाया और वो प्रस्ताव लेकर आए। 2018 में भी ये ईश्वर का ही आदेश था, जब विपक्ष के साथी अविश्वास प्रस्ताव लेकर के आए थे। उस समय भी कहा था कि अविश्वास प्रस्ताव सरकार का फ्लोर टेस्ट नहीं है, बल्कि ये उन्हीं का फ्लोर टेस्ट है, और हुआ भी वही जब मतदान हुआ, तो विपक्ष के पास जितने वोट थे, उतने वोट भी वो जमा नहीं कर पाए थे। और इतना ही नहीं जब हम सब जनता के पास गए तो जनता ने भी पूरी ताकत के साथ इनके लिए नो कॉन्फिडेंस घोषित कर दिया। और चुनाव में एनडीए को भी ज्यादा सीटें मिलीं और भाजपा को भी ज्यादा सीटें मिलीं। यानि एक तरह से विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव हमारे लिए शुभ होता है, और एनडीए और बीजेपी 2024 के चुनाव में पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़कर के भव्य विजय के साथ जनता के आशीर्वाद से वापस आएगी।

विपक्ष के प्रस्ताव पर अलग-अलग विषयों पर काफी चर्चा हुई है। अच्छा होता कि सत्र की शुरुआत के बाद से ही विपक्ष ने गंभीरता के साथ सदन की कार्यवाही में हिस्सा लिया होता। बीते दिनों इसी सदन ने और हमारे दोनों सदन ने जनविश्वास बिल, मेडिएशन बिल, डेन्टल कमीशन बिल, आदिवासियों के लिए जुड़े हुए बिल, डिजिटल डेटा प्रोटेक्शन बिल, नेशनल रिसर्च फाउंडेशन बिल, कोस्टल एक्वा कल्चर से जुड़ा बिल, ऐसे कई महत्वपूर्ण बिल यहां पारित किए हैं। और ये ऐसे बिल थे जो हमारे फिशरमैन के हक के लिए थे, और उसका सबसे ज्यादा लाभ केरल को होना था और केरल के सांसदों से ज्यादा अपेक्षा थी। क्योंकि वो ऐसे बिल पर तो अच्छे ढंग से हिस्सा लेते हैं। लेकिन राजनीति उन पर ऐसी हावी हो चुकी है कि उनको फिशरमैन की चिंता नहीं है।

यहां नेशनल रिसर्च फाउंडेशन का बिल था। देश की युवा शक्ति के आशा आकांक्षाओं के लिए एक नई दिशा देने वाला बिल था। हिन्दुस्तान को एक साइंस पावर के रूप में भारत कैसे उभरे, वैसे एक दीर्घ दृष्टि के साथ सोचा गया था, उससे भी इतराज। डिजिटल डेटा प्रोटेक्शन बिल ये बिल अपने आप में देश के युवाओं के जज्बे में जो बात आज प्रमुखता से है, उससे जुड़ा हुआ था। आने वाला समय टेक्नोलॉजी ड्रिवेन है। आज डाटा को एक प्रकार से सेकंड ऑयल के रूप में, सेकंड गोल्ड के रूप में माना जाता है, उस पर कितनी गंभीर चर्चा की जरूरत थी। लेकिन राजनीति आपके लिए प्राथमिकता थी। कई ऐसे बिल थे, जो गांव के लिए, गरीब के लिए, दलित के लिए, पिछड़ों के लिए, आदिवासी के लिए उनके कल्याण की चर्चा करने के लिए थे। उनके भविष्य के साथ जुड़े हुए थे। लेकिन इसमें इन्हें कोई रूचि नहीं है। देश की जनता ने जिस काम के लिए उनको यहां भेजा है, उस जनता का भी विश्वासघात किया गया है। विपक्ष के कुछ दलों ने उनके आचरण से, उनके व्यवहार से उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि देश से ज्यादा उनके लिए दल है। देश से बड़ा दल है, देश से पहले प्राथमिकता दल है। मैं समझता हूं आपको गरीब की भूख की चिंता नहीं है, सत्ता की भूख यही आपके दिमाग पर सवार है। आपको देश के युवाओं के भविष्य की परवाह नहीं है। आपको अपने राजनीतिक भविष्य की चिंता है।

आप जुटे एक दिन सदन चलने भी दिया किस काम के लिए? आप जुटे तो अविश्वास प्रस्ताव पर जुटे? और अपने कट्टर भ्रष्ट साथी उनकी शर्त पर मजबूर होकर के और इस अविश्वास प्रस्ताव पर भी आपने कैसी चर्चा की? और तो मैं तो देख रहा हूं सोशल मीडिया

में आपके दरबारी भी बहुत दुखी हैं, ये हाल है आपका।

मजा इस डिबेट का कि फिल्डिंग विपक्ष ने ऑर्गेनाइज की, लेकिन चौके छक्के यहीं से लगे। और विपक्ष नो कॉन्फिडेंस मोशन पर नो बॉल, नो बॉल पर ही आगे चलता जा रहा है। इधर से सेन्च्युरी हो रही है, उधर से नो बॉल हो रही है। विपक्ष के साथियों से यही कहूंगा कि आप तैयारी करके क्यों नहीं आते जी। थोड़ी मेहनत कीजिए और मैंने 5 साल दिए आपको मेहनत करने के लिए 18 में कहा था कि 23 में आप आना जरूर आना, 5 साल भी नहीं कर पाए आप लोग। क्या हाल है, आप लोगों का, क्या दारिद्र है।

विपक्ष के हमारे साथियों को दिखास की छपास की बहुत इच्छा रहती है और स्वाभाविक भी है। लेकिन आप ये मत भूलिए कि देश भी आपको देख रहा है। आपके एक-एक शब्द को देश गौर से सुन रहा है। लेकिन हर बार देश को आपने निराशा के सिवाय कुछ नहीं दिया है। और विपक्ष के रवैये पर भी मैं कहूंगा, जिनके, जिनके खुद के बही खाते बिगड़े हुए हैं। जिनके बही खाते खुद के बिगड़े हुए हैं। वो भी हमसे हमारा हिसाब लिए फिरते हैं।

इस अविश्वास प्रस्ताव में कुछ चीजें तो ऐसी विचित्र नजर आई जो न तो पहले कभी सुना है, न देखा है, न कभी कल्पना की है। सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता का बोलने की सूची में नाम ही नहीं था। और पिछले उदाहरण देखिए आप। 1999 में वाजपेयी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव आया। शरद पवार साहब उस समय नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने डिबेट का नेतृत्व किया। 2003 में अटल जी की सरकार थी, सोनिया जी विपक्ष की नेता थी, उन्होंने लीड ली, उन्होंने विस्तार से अविश्वास प्रस्ताव रखा। 2018 में खड़गे जी थे, विपक्ष के नेता। उन्होंने प्रोमिनेंटली विषय को आगे बढ़ाया। लेकिन इस बार अधीर बाबू का क्या हाल हो गया, उनकी पार्टी ने उन्हें बोलने का मौका नहीं दिया, ये तो कल अमित भाई ने बहुत-बहुत जिम्मेदारी के साथ कहा कि भाई अच्छा नहीं लग रहा है। और आपकी उदारता थी कि उनका समय समाप्त हो गया था, तो भी आपने उनको आज मौका दिया। लेकिन गुड़ का गोबर कैसे करना, उसमें ये माहिर हैं। मैं नहीं जानता हूं कि आखिर आपकी मजबूरी क्या है? क्यों अधीर बाबू को दरकिनार कर दिया गया। पता नहीं कलकत्ता से कोई फोन आया हो, और कांग्रेस बार-बार, कांग्रेस बार-बार उनका अपमान करती है। कभी चुनावों के नाम पर उन्हें अस्थायी रूप से फ्लोर लीडर से हटा देते हैं। हम अधीर बाबू के प्रति अपनी पूरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

किसी भी देश के जीवन में, इतिहास में एक समय ऐसा आता है, जब वो पुरानी बंदिशों को तोड़कर के एक नई ऊर्जा के साथ, नई उमंग के साथ, नए सपनों के साथ, नए संकल्प के साथ आगे बढ़ने के लिए कदम उठा लेता है। 21वीं सदी का ये कालखंड और मैं बड़ी गंभीरता से इस पवित्र लोकतंत्र के मंदिर में बोल रहा हूं, और लंबे अनुभव के बाद बोल रहा हूं कि ये कालखंड सदी का ये वो कालखंड है, जो भारत के लिए हर सपने सिद्ध करने का अवसर हमारे पास है। और हम सब ऐसे टाइम पीरियड में है, चाहे हम हैं, चाहे आप हैं, देश के कोटि-कोटि जन हैं। ये टाइम पीरियड बहुत अहम है, बड़ा महत्वपूर्ण है।

बदलते हुए विश्व में, और मैं इन शब्दों को भी बड़े विश्वास से कहना चाहता हूं कि ये कालखंड जो घटेगा, उसका प्रभाव इस देश पर आने वाले 1 हजार साल तक रहने वाला है। 140 करोड़ देशवासियों का पुरुषार्थ इस कालखंड में अपने पराक्रम से, अपने पुरुषार्थ से, अपनी शक्ति से, अपने सामर्थ्य से जो करेगा, वो आने वाले एक हजार साल की मजबूत नींव रखने वाला है। और इसलिए इस कालखंड में हम सबका बहुत बड़ा दायित्व है, बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और ऐसे समय में हम सबका एक ही फोकस होना चाहिए, देश का विकास। देश के लोगों के सपनों को पूरा करने का संकल्प और उस संकल्प को सिद्धि तक ले जाने के लिए जी-जान से जुट जाना, यही समय की मांग है। 140 करोड़ देशवासी इन भारतीय समुदाय की सामूहिक ताकत हमें उस ऊंचाई पर पहुंचा सकती है। हमारे देश की युवा पीढ़ी का सामर्थ्य आज विश्व ने उनका लोहा माना हुआ है, हम उन पर भरोसा करें। हमारी युवा पीढ़ी भी जो सपने देख रही है, वो सपनों को संकल्प के साथ सिद्धि तक पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है। और इसलिए, 2014 में 30 साल के बाद देश की जनता ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई और 2019 में भी उस ट्रैक रिकॉर्ड को देखकर के उनके सपनों को संजोने का सामर्थ्य कहां है, उनके संकल्पों को सिद्ध करने की ताकत कहां पड़ी है, वो देश भली-भांति पहचान गया है। और इसलिए 2019 में फिर एक बार हम सबको सेवा करने का मौका दिया और अधिक मजबूती के साथ दिया।

सदन में बैठक प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वो भारत के युवाओं के सपनों को, उनकी महत्वाकांक्षाओं को, उनकी आशा अपेक्षा के मुताबिक, वो जो काम करना चाहता है, उसके लिए हम उसे अवसर दें। सरकार में रहते हुए हमने भी इस दायित्व को निभाने का भरपूर प्रयास किया है। हमने भारत के युवाओं को घोटालों से रहित सरकार दी है। हमने भारत के युवाओं को, आज के हमारे प्रोफेशनल्स को खुले आसमान में उड़ने के लिए हौसला दिया है, अवसर दिया है। हमने दुनिया में भारत की बिगड़ी हुई साख उसको भी संभाला है और उसे फिर एक बार नई ऊंचाइयों पर ले गए हैं। अभी भी कुछ लोग कोशिश कर रहे हैं कि दुनिया में हमारी साख को दाग लग जाए, लेकिन दुनिया अब देश को जान चुकी है, दुनिया के भविष्य में भारत किस प्रकार से योगदान दे सकता है, ये विश्व का विश्वास बढ़ता चला जा रहा है, हमारे ऊपर।

और इस दौरान हमारे विपक्ष के साथियों ने क्या किया, जब इतना अनुकूल वातावरण, चारों तरफ संभावना ही संभावनाएं, इन्होंने अविश्वास के प्रस्ताव की आड़ में जनता के आत्मविश्वास को तोड़ने की विफल कोशिश की है। आज भारत के युवा रिकॉर्ड संख्या में नए स्टार्टअप ले करके दुनिया को चकित कर रहे हैं। आज भारत में रिकॉर्ड विदेशी निवेश आ रहा है। आज भारत का एक्सपोर्ट नई बुलंदी को छू रहा है। आज भारत की कोई भी अच्छी बात ये सुन नहीं सकते हैं...यही उनकी अवस्था है। आज गरीब के दिल में अपने सपने पूरे करने का भरोसा पैदा हुआ है। आज देश में गरीबी तेजी से घट रही है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पिछले पांच साल में साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं।

आईएमएफ अपने एक वर्किंग पेपर में लिखता है कि भारत ने अति गरीबी को करीब-करीब खत्म कर दिया है। आईएमएफ ने भारत के डीबीटी और दूसरे हमारे सोशल वेलफेयर स्कीम के लिए, आईएमएफ ने इसे कहा है कि ये लॉजिस्टिक्स मार्बल है।

वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन ने कहा है कि जल जीवन मिशन्स के जरिए भारत में चार लाख लोगों की जान बच रही है। चार लाख कौन हैं- गरीब, पीड़ित, शोषित, वंचित परिवारों के स्वजन हैं। हमारे परिवार के निचले तबके में जिंदगी गुजारने के लिए जो मजबूर हुए, ऐसे जन है, ऐसे चार लाख लोगों की जान बचने की बात डब्ल्यूएचओ कह रहा है। एनालिसिस

करके कहता है कि स्वच्छ भारत अभियान से तीन लाख लोगों को मरने से बचाया गया है।

भारत स्वच्छ होता है, तीन लाख लोगों की जिंदगी बचती है, ये तीन लाख है कौन- वही झुग्गी-झोंपड़ी में जिंदगी जीने के लिए जो मजबूर है, जिनके लिए अनेक कठिनाइयों से गुजारा करना पड़ता है। गरीब परिवार के लोग, शहरों की बस्तियों में गुजारा करने वाले लोग, गांव में जीने वाले लोग हैं और वंचित तबके के लोग हैं, जिनकी जान बची है। यूनिसेफ ने क्या कहा है- यूनिसेफ ने कहा है कि स्वच्छ भारत अभियान के कारण हर साल गरीबों के 50 हजार रुपये बच रहे हैं। ये लेकिन, भारत की इन उपलब्धियों से कांग्रेस समेत विपक्ष के कुछ लोक दलों को अविश्वास है। जो सच्चाई दुनिया दूर से देख रही है, ये लोग यहां रहते हैं-दिखती नहीं है। अविश्वास और घमंड इनकी रगों में रच-बस गया है। ये जनता के विश्वास को कभी देख नहीं पाते हैं। अब ये जो शुतुरमुर्ग एप्रोच है, इसके लिए तो देश क्या कर सकता है।

जो पुरानी सोच वाले लोग रहते हैं, मैं उस सोच से सहमत नहीं हूं। लेकिन वो कहते हैं कि देखो भाई जब कुछ शुभ होता है, कुछ मंगल होता है, घर में भी कुछ अच्छा होता है, बच्चे भी कोई अच्छे कपड़े पहनता है, जरा साफ-सुथरा होता है तो काला टीका लगा देते हैं। आज देश का जो मंगल हो रहा है चारों तरफ, देश की जो चारों तरफ वाहवाही हो रही है, देश का जो जय-जयकार हो रहा है, तो मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि काले टीके के रूप में काले कपड़े पहन करके सदन में आ करके आपने इस मंगल को भी सुरक्षित करने का काम किया है, इसके लिए भी मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

विपक्ष के साथियों ने जी भर करके, डिक्शनरी खोल-खोल करके जितने अपशब्द मिलते हैं ले आए हैं। जितने अपशब्दों का उपयोग कर सकते हैं भरपूर, जाने कहां-कहां से ले आते हैं। लेकर आए उनका निकल गया होगा, थोड़ा मन हल्का हो गया होगा इतने अपशब्द बोल लिए हैं तो। और वैसे तो ये लोग मुझे दिन-रात कोसते रहते हैं। उनकी ये फितरत है। और उनके लिए तो सबसे प्रिय नारा क्या है- मोदी तेरी कब्र खुदेगी, मोदी तेरी कब्र खुदेगी। ये इनका पसंदीदा नारा है। लेकिन मेरे लिए, इनकी गालियां, ये अपशब्द, ये अलोकतांत्रिक भाषा- मैं उसका भी टॉनिक बना देता हूं। और ये ऐसा क्यों करते हैं और ये क्यों होता है। आज मैं सदन में कुछ सीक्रेट बताना चाहता हूं। मेरा पक्का विश्वास हो गया है कि विपक्ष के लोगों को एक सीक्रेट वरदान मिला हुआ है, हां, सीक्रेट वरदान मिला हुआ है जी। और वरदान ये कि ये लोग जिसका बुरा चाहेंगे, उसका भला ही होगा। एक उदाहरण तो आप देखिए-मौजूद है। 20 साल हो गए क्या कुछ नहीं हुआ, क्या कुछ नहीं किया गया, लेकिन भला ही होता गया। तो आपको बड़ा सीक्रेट वरदान है जी। और मैं तीन उदाहरण से ये सीक्रेट वरदान को सिद्ध कर सकता हूं।

आपको ज्ञात होगा कि इन लोगों ने कहा था बैंकिंग सेक्टर के लिए- बैंकिंग सेक्टर डूब जाएगा, बैंकिंग सेक्टर तबाह हो जाएगा, देश खत्म हो जाएगा, देश बर्बाद हो जाएगा, न जाने क्या-क्या कहा था। और बड़े-बड़े विद्वानों को विदेशों से ले आते थे, उनसे कहलवाते थे, ताकि इनकी बात कोई न माने तो शायद उनकी मान ले। हमारे बैंकों के सेहत को ले करके भांति-भांति की निराशा, अफवाह फैलाने का काम इन्होंने पुरजोर किया। और जब इन्होंने बुरा चाहा बैंकों का तो हुआ क्या, हमारे पब्लिक सेक्टर्स बैंक, नेट प्रॉफिट दोगुने से ज्यादा हो गया। इन लोगों ने फोन बैंकिंग घोटाले के बात की- इसके कारण देश को एनपीए के गंभीर संकट में डुबो दिया था।

बीते दिनों की बात हो रही है, लेकिन आज जो उन्होंने एनपीए का अंबार लगाकर गए थे उसको भी पार कर-करके हम एक नई ताकत के साथ निकल चुके हैं। और आज श्रीमती निर्मला जी ने विस्तार से बताया है कितना प्रॉफिट हुआ है। दूसरा उदाहरण- हमारे डिफेंस के हेलिकॉप्टर बनाने वाली सरकारी कंपनी एचएएल। ये एचएएल को ले करके कितनी भली-बुरी बातें इन्होंने करी थीं, क्या कुछ नहीं कहा गया था, एचएएल के लिए। और इसका दुनिया पर बहुत नुकसान करने वाली भाषा का प्रयोग किया गया था। और एचएएल तबाह हो गया है, एचएएल खत्म हो गया है, भारत की डिफेंस इंडस्ट्री खत्म हो चुकी है। ऐसा न जाने क्या-क्या कहा गया था, एचएएल के लिए।

इतना ही नहीं, जैसे आजकल खेतों में जा करके वीडियो शूट होता है, मालूम है ना। खेतों में जाकर वीडियो शूट होता है, वैसा ही उस समय एचएएल फैक्टरी के दरवाजे पर मजदूरों की सभा करके वीडियो शूट करवाया गया था और वहां के कामगारों को भड़काया गया था, अब तुम्हारा कोई भविष्य नहीं है, तुम्हारे बच्चे मरेंगे, भूखे मरेंगे, एचएएल डूब रहा है। देश के इतने महत्वपूर्ण इंस्टीट्यूट का इतना बुरा चाहा, इतना बुरा चाहा, इतना बुरा कहा, वो सीक्रेट- आज एचएएल सफलता की नई बुलंदियों को छू रहा है। एचएएल ने अपना highest ever revenue रजिस्टर किया है। इनके जी भर करके गंभीर आरोप के बावजूद भी वहां के कामगारों को, वहां के कर्मचारियों को उकसाने की भरपूर कोशिश के बावजूद भी आज एचएएल देश की आन-बान-शान बनकर उभरा है।

जिसका बुरा चाहते हैं, वो कैसे आगे बढ़ता है, मैं तीसरा उदाहरण देता हूं। आप जानते हैं एलआईसी के लिए क्या-क्या कहा गया था। एलआईसी बर्बाद हो गई, गरीबों के पैसे डूब रहे हैं, गरीब कहां जाएगा, बेचारे ने बड़ी मेहनत से एलआईसी में पैसा डाला था, क्या-क्या- जितनी उनकी कल्पना शक्ति थी, जितने उनके दरबारियों ने कागज पकड़ा दिए थे, सारे बोले लेते थे। लेकिन आज एलआईसी लगातार मजबूत हो रही है। शेयर मार्केट में रुचि रखने वालों को भी ये गुरु मंत्र है कि जो सरकारी कंपनियों के लोग गाली दें ना, आप उसमें दांव लगा दीजिए, सब अच्छा ही होगा।

ये लोग देश की जिन संस्थाओं की मृत्यु की घोषणा करते हैं, उन संस्थाओं का भाग्य चमक जाता है। और मुझे विश्वास है कि ये जैसे देश को कोसते हैं, लोकतंत्र को कोसते हैं, मेरा पक्का विश्वास है, देश भी मजबूत होने वाला है, लोकतंत्र भी मजबूत होने वाला है, और हम तो होने ही वाले हैं। ये वो लोग हैं, जिन्हें देश के सामर्थ्य पर विश्वास नहीं। इन लोगों को देश के परिश्रम पर विश्वास नहीं है, देश के पराक्रम पर विश्वास नहीं है। कुछ दिन पहले मैंने कहा था कि हमारी सरकार के अगले टर्म में, तीसरे टर्म में भारत दुनिया की तीसरी टॉप अर्थव्यवस्था बनेगा।

अब देश के भविष्य पर थोड़ा सा भी भरोसा होता, जब हम ये क्लेम करते हैं कि हम आने वाले पांच साल में यानी तीसरे टर्म में हम देश की इकोनॉमी को तीसरे पर लाएंगे तो एक जिम्मेदार विपक्ष क्या करता- वो सवाल पूछता अच्छा हमें बताओ, निर्मला जी बताओ कैसे करने वाले हो। अच्छा मोदी जी बताओ- कैसे करने वाले हो, आपका रोडमैप क्या है- ऐसा करते। अब ये भी मुझे सिखाना पड़ रहा है। लेकिन, या वो कुछ सुझाव दे सकते थे, ये कुछ सुझाव दे सकते थे। या फिर कहते हम चुनाव में जनता के बीच जा करके बताएंगे कि ये तीसरे की बात करते हैं हम तो एक नंबर पर लेकर आएंगे और ऐसे-ऐसे लेकर आएंगे- कुछ तो करते आप। लेकिन हमारे विपक्ष की त्रासदी

ये है और उनके राजनीतिक विमर्श पर गौर कीजिए। कांग्रेस के लोग क्या कह रहे हैं, अब देखिए कितना कल्पना दारिद्रय है। कितने सालों तक सत्ता में रहने के बाद भी क्या अनुभवहीन बातें सुनने को मिल रही हैं।

क्या कहते हैं ये, ये कहते हैं इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है, ऐसे ही होने वाला है तीसरे नंबर पर। बताओ, मुझे लगता है कि इसी सोच के कारण वो सोते रहे इतने सालों तक कि अपने-आप होने वाला है। वो कहते हैं बिना कुछ किए तीसरे पर पहुंच जाएंगे। और कांग्रेस की मानें, अगर सब कुछ अपने-आप ही हो जाने वाला है, इसका मतलब है कांग्रेस के पास न नीति है, न नियत है, न विजन है, न वैश्विक अर्थव्यवस्था की समझ है और न ही भारत के अर्थजगत की ताकत का पता है। और इसलिए सोए-सोए अगर हो जाएगा, यही एक....।

ये वजह है कि कांग्रेस के शासन में गरीबी और गरीबी को बढ़ाता गया। 1991 में देश कंगाल होने की स्थिति में था। कांग्रेस के शासनकाल में अर्थव्यवस्था दुनिया के क्रम में दस, ग्यारह, बारह- इसके बीच में झोले खाती थी, झूलती रही थी। लेकिन 2014 के बाद भारत ने टॉप पांच में अपनी जगह बना ली थी। कांग्रेस के लोगों को लगता होगा कि ये कोई जादू की लकड़ी से हुआ है। लेकिन मैं आज सदन को बताना चाहता हूं Reform, Perform and Transform एक निश्चित आयोजन, प्लानिंग और कठोर परिश्रम, परिश्रम की पराकाष्ठा, और इसी की वजह से आज देश इस मुकाम पर पहुंचा है। और ये प्लानिंग और परिश्रम की निरंतरता बनी रहेगी। आवश्यकतानुसार उसमें नए Reform होंगे और Performance के लिए पूरी ताकत को लगाया जाएगा और परिणाम ये होगा कि हम तीसरे नंबर पर पहुंच कर रहेंगे।

देश का विश्वास मैं शब्दों में भी प्रकट करना चाहता हूं। और देश का विश्वास है कि 2028 में, आप जब अविश्वास प्रस्ताव लेकर के आएंगे तब ये देश पहले तीन में होगा, ये देश का विश्वास है।

विपक्ष के मित्रों की फितरत में ही अविश्वास भरा पड़ा है। हमने लाल किले से स्वच्छ भारत अभियान का आव्हान किया। लेकिन उन्होंने हमेशा अविश्वास जताया। कैसे हो सकता है? जो गांधी जी भी आकर गए, कह करके गए क्या हुआ? अभी स्वच्छता कैसे हो सकती है? अविश्वास भरी हुई इनकी सोच है। हमने

मां-बेटी को खुले में शौच से मुक्त करने के लिए, उस मजबूरी से मुक्त होने के लिए शौचालय जैसी जरूरत पर जोर दिया और तब ये कह रहे हैं, क्या लाल किले से ऐसे विषय बोले जाते हैं? क्या ये देश की प्राथमिकता होती है क्या? हमने जब जन-धन खाते खोलने की बात की, तब भी यही बात निराशा की। क्या होता है जन-धन खाता? उनके हाथ में पैसे कहां है? उनका जेब में क्या पड़ा है? क्या लेके आएंगे, क्या करेंगे? हमने योग की बात की, हमने आयुर्वेद की बात की, हमने उसको बढ़ावा देने की बात की तो उसका भी माखौल उड़ाया गया। हमने स्टार्ट-अप इंडिया की चर्चा की, तो उन्होंने उसके लिए भी निराशा फैलाई। स्टार्ट-अप तो कोई हो ही नही सकता है। हमने डिजिटल इंडिया की बात कही, तो बड़े-बड़े विद्वान लोगों ने क्या भाषण दिए। हिन्दुस्तान के लोग तो अनपढ़ हैं, हिन्दुस्तान के लोगों को तो मोबाइल चलाना भी नहीं आता है। हिन्दुस्तान के लोग कहां से डिजिटल करेंगे? आज डिजिटल इंडिया में देश आगे है। हमने मेक इन इंडिया की बात कही। जहां गए वहां मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया। जहां गए वहां मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया। कांग्रेस पार्टी और उनके दोस्तों का इतिहास रहा है कि उन्हें भारत पर भारत के सामर्थ्य पर कभी भी भरोसा नही रहा है।

और ये विश्वास किस पर करते थे। मैं जरा आज सदन को याद दिलाना चाहता हूँ। पाकिस्तान सीमा पर हमले करता था। हमारे यहां आए दिन आतंकवादी भेजता था और उसके बाद पाकिस्तान हाथ ऊपर करके मुकर जाता था, भाग जाता था बोले कि हमारी तो कोई जिम्मेदारी ही नहीं है। कोई जिम्मा लेने को तैयार नही होता था। और इनका पाकिस्तान से इतना प्रेम था, वो तुरंत पाकिस्तान की बातों पर विश्वास कर लेते थे। पाकिस्तान कहता था कि आतंकी हमले तो होते रहेंगे और बातचीत भी होती रहेगी। इन्हें, यहां तक कहते थे कि पाकिस्तान कह रहा है तो सही ही कहता होगा। ये इनकी सोच रही है। कश्मीर आतंकवाद की आग में दिन-रात सुलग रहा था। जलता था, लेकिन कांग्रेस सरकार का काम कश्मीर और कश्मीर के आम नागरिक पर विश्वास नही था। वे विश्वास करते थे हुर्रियत पर, वे विश्वास करते थे अलगाववादियों पर, वे विश्वास उन लोगों पर करते थे जो पाकिस्तान का झंडा लेकर चलते थे। भारत ने आतंकवाद पर सर्जिकल स्ट्राइक किया। भारत ने एयर स्ट्राइक किया, इनको भारत की सेना पर भरोसा नही था। उनको दुश्मन के दावों पर भरोसा था। ये इनकी प्रवृत्ति थी।

आज दुनिया में कोई भी भारत के लिए अपशब्द बोलता है तो इन्हें उस पर तुरंत विश्वास हो जाता है, तुरंत उसको catch कर लेते हैं। ऐसा मैग्नेटिक पावर है कि भारत के खिलाफ हर चीजें वो तुरंत पकड़ लेते हैं। जैसे कोई विदेशी एजेंसी कहती है कि भूखमरी का सामना कर रहे कई देश भारत से बेहतर हैं, ऐसा झूठी बात आएगी तो भी पकड़ लेते हैं और हिन्दुस्तान में प्रचार करना शुरू कर देते हैं। press conference कर देते हैं। भारत को बदनाम करने में क्या मजा आता है। दुनिया में कोई भी ऐसी बेतुकी बातों को मिट्टी के ढेले जैसे जिसकी कोई कीमत न हो ऐसी बातों को तवज्जो देना ये कांग्रेस की फितरत रही है और तुरंत उसका भारत में amplify करना, प्रचार करना, पूरी कोशिश उसी में लग जाती है। कोरोना की

महामारी आई, भारत के वैज्ञानिकों ने मेड इन इंडिया वैक्सीन बनाया, उन्हें भारत के वैक्सीन पर भरोसा नहीं, विदेशी वैक्सीन पर भरोसा ये इनकी सोच रही।

देश के कोटि-कोटि नागरिकों ने भारत के वैक्सीन पर विश्वास जताया। इनको भारत के सामर्थ्य पर विश्वास नहीं है। इनको भारत के लोगों पर विश्वास नहीं है। इस देश का भी भारत के लोगों का कांग्रेस के प्रति No Confidence का भाव बहुत गहरा है। कांग्रेस अपने घमंड में इतनी चूर हो गई है, इतनी भर गई है कि उसको जमीन दिखाई तक देती नहीं है।

देश के कई हिस्सों में कांग्रेस को जीत दर्ज करने में अनेक दशक लग गए हैं। तमिलनाडु में कांग्रेस की आखिरी बार 1962 में जीत हुई थी। 61 वर्षों से तमिलनाडु के लोग कह रहे हैं। कांग्रेस No Confidence, तमिलनाडु के लोग कह रहे हैं कांग्रेस No Confidence, पश्चिम बंगाल में उन्हें आखिरी बार जीत 1972 में मिली थी। पश्चिम बंगाल के लोग 51 सालों से कह रहे हैं कांग्रेस No Confidence, कांग्रेस No Confidenc। उत्तर प्रदेश और बिहार और गुजरात कांग्रेस आखिरी 1985 में जीती थी, पिछले 38 वर्षों से वहां के लोगों ने कांग्रेस को कहा है No Confidence, वहां के लोगों ने कांग्रेस को कहा है No Confidence. त्रिपुरा में उन्होंने आखिरी बार 1988 में जीत मिली थी, 35 वर्षों से त्रिपुरा के लोग कांग्रेस को कह रहे हैं No Confidence. कांग्रेस No Confidence, कांग्रेस No Confidence. उड़ीसा में कांग्रेस को आखिरी बार 1995 में जीत नसीब हुई थी, यानी उड़ीसा में भी 28 वर्षों से कांग्रेस को एक ही जवाब दे रहा है उड़ीसा कह रहा है No Confidence. कांग्रेस No Confidence. नागालैंड में कांग्रेस की आखिरी जीत 1988 में हुई थी। यहां के लोग भी 25 वर्षों से कह रहे हैं कांग्रेस No Confidence. कांग्रेस No Confidence. दिल्ली, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल में तो एक भी विधायक खाते में नहीं है। जनता ने कांग्रेस के प्रति बार-बार No Confidence घोषित किया है।

कुछ ही दिन पहले बेंगलुरु में आपने मिलजुल कर करीब-करीब डेढ़-दो दशक पुराने यूपीए का क्रियाकर्म किया है। उसका अंतिम संस्कार किया है। लोकतांत्रिक व्यवहार के मुताबिक मुझे तभी आपको सहानुभूति जरूर व्यक्त करनी चाहिए थी। संवेदना व्यक्त करनी चाहिए थी। लेकिन देरी में मेरा कसूर नहीं है क्योंकि आप खुद ही एक ओर यूपीए का क्रिया कर्म कर रहे थे और दूसरी ओर जश्न भी मना रहे थे और जश्न भी किस बात का खंडहर पर नया प्लास्टर लगाने का, आप जश्न मना रहे थे खंडहर पर नया प्लास्टर लगाने का। आप जश्न मना रहे थे वेल मशीन पर नया पेंट लगाने का। दशकों पुरानी खटारा गाड़ी को इलेक्ट्रिक व्हीकल दिखाने के लिए आपने इतना बड़ा मजमा लगाया था और मजेदार ये कि मजमा खत्म होने से पहले ही उसका क्रेडिट लेने के लिए आपस में सिर फुटौवल शुरू हो गई। मैं हैरान था कि ये गठबंधन लेकर आप जनता के बीच जाएंगे, मैं विपक्ष के साथियों को कहना चाहता हूं, आप जिसके पीछे चल रहे हो, उसको तो इस देश की जवान, इस देश के संस्कार की समझ ही नहीं बची है। पीढ़ी दर पीढ़ी ये लोग लाल मिर्च और हरी मिर्च का फर्क नहीं समझ पाए। लेकिन आप में से कई साथियों को मैं जानता हूं, आप सब तो भारतीय मानस को जानने वाले लोग हैं, आप लोग भारत के मिजाज को पहचानने वाले लोग हैं। भेष बदल कर धोखा देने की कोशिश करने वालों की हकीकत सामने आ ही जाती है। जिन्हें सिर्फ नाम का सहारा है, उन्हीं के लिए कहा गया है ''दूर युद्ध से भागते, दूर युद्ध से भागते नाम रखा रणधीर, भाग्यचंद की आज तक, सोई है तकदीर'' इनकी मुसीबत ऐसी है कि खुद को जिंदा रखने के लिए, इनको NDA का ही सहारा लेना पड़ा है। लेकिन आदत के मुताबिक घमंड का जो है ना वो उनको छोड़ता नहीं है। और इसलिए एनडीए में दो पिरो दिये। दो घमंड के पिरो दिये। पहला छब्बीस दलों का घमंड और दूसरा एक परिवार का घमंड। एनडीए भी चुरा लिया, कुछ बचने के लिए और इंडिया के भी टुकड़े कर दिये I.N.D.I.A. जरा हमारे डीएमके के भाई सुन लें, जरा कांग्रेस के लोग भी सुन लें। यूपीए को लगता है कि देश के नाम का इस्तेमाल करके अपनी विश्वसनीयता बढ़ाई जा सकती है। लेकिन कांग्रेस के सहयोगी दल कांग्रेस के अटूट साथी तमिलनाडु सरकार में एक मंत्री, ने ही ये कहा है, तमिलनाडु सरकार के एक मंत्री ने कहा है I.N.D.I.A. उनके लिए कोई मायने नहीं रखता। I.N.D.I.A. उनके लिए कोई मायने नहीं रखता। उनके मुताबिक तमिलनाडु तो भारत में है ही नहीं।

मैं गर्व के साथ कहना चाहता हूं तमिलनाडु वो प्रदेश है, जहां हमेशा देशभक्ति की धाराएं निकली हैं। जिस राज्य ने हमें राजा जी दिये। जिस राज्य ने हमें कामराज दिये। जिस राज्य ने हमें एनटीआर दिये। जिस राज्य ने हमें अब्दुल कलाम दिये। आज उस तमिलनाडु से ये स्वर सुनाई दे रहे हैं।

जब आपके alliance में अंदर ही अंदर ऐसे लोग हों, जो अपने देश के अस्तित्व को नकारते हों, तो आपकी गाड़ी कहां जाकर के रुकेगी, जरा आत्म चिंतन करने का मौका मिले और आत्मा बची हो तो जरूर करिएगा।

नाम को लेकर उनका एक चश्मा आज का नहीं है, नाम को लेकर ये जो मोह है ना वो उनका आज का नहीं है। ये दशकों पुराना चश्मा है। इन्हें लगता है कि नाम बदलकर देश पर राज कर लेंगे। गरीब को चारों तरफ उनका नाम तो नजर आता है, लेकिन उनका काम कहीं नजर नहीं आता है। अस्पतालों में नाम उनके हैं इलाज नहीं है। शैक्षणिक संस्थाओं पर उनके नाम लटक रहे हैं, सड़क हों, पार्क हों उनका नाम, गरीब कल्याण की योजनाओं पर उनका नाम, खेल पुरस्कारों पर उनका नाम, एयरपोर्ट पर उनका नाम, म्यूजियम पर उनका नाम, अपने नाम से योजनाएं चलाईं और फिर उन योजनाओं में हजारों-करोड़ के भ्रष्टाचार किए। समाज के अंतिम छोर पर खड़ा व्यक्ति काम होते हुए देखना चाहता था, लेकिन उसे मिला क्या सिर्फ -सिर्फ परिवार का नाम।

कांग्रेस की पहचान से जुड़ी कोई चीज उनकी अपनी नहीं है। कोई चीज उनकी अपनी नहीं है। चुनाव चिह्न से लेकर विचारों तक सब कुछ कांग्रेस अपना होने का दावा करती है वो किसी और से लिया हुआ है।

अपनी कमियों को ढकने के लिए चुनाव चिन्ह और विचारों को भी चुरा लिया, फिर भी जो बदलाव हुए हैं, उसमें पार्टी का घमंड ही दिखता है। ये भी दिखता है कि 2014 से वो किस तरह Denial के Mode में है। पार्टी के संस्थापक कौन ऐ.ओ. ह्यूम एक विदेशी थे, जिन्होंने पार्टी बनाई। आप जानते हैं 1920 में भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई ऊर्जा मिली। 1920 में एक नया ध्वज मिला और देश ने उस ध्वज को अपना लिया तो रातों-रात कांग्रेस ने उस ध्वज की ताकत को देखकर के उसे भी छीन लिया और प्रतीक को देखा कि ये गाड़ी चलाने के लिए ठीक रहेगा, 1920 से ये खेल चल रहा है जी। और उनको लगा कि वो तिरंगा झंडा देखेंगे तो लोग देखेंगे कि उनकी ही बात हो रही है। ये उन्होंने खेल किया। वोटरों को भुनाने के लिए गांधी नाम भी। हर बार वो भी चुरा लिया। कांग्रेस के चुनाव चिह्न देखिए दो बैल, गाय बछड़ा और फिर हाथ का पंजा, ये सारे उनके कारनामे उनके

हर प्रकार के मनोवृत्ति का प्रतिबिंब करता है, उसको प्रकट करते हैं और ये साफ दिखाता है कि सब कुछ एक परिवार के हाथों में सब केंद्रित हो चुका है। ये I.N.D.I.A. गठबंधन नहीं है, ये I.N.D.I.A. गठबंधन नहीं है, एक घमंडिया गठबंधन है। और इसकी बारात में हर कोई दूल्हा बनना चाहता है। सबको प्रधानमंत्री बनना है।

इस गठबंधन ने ये भी नहीं सोचा है कि किस राज्य में आपके साथ आप किसके साथ कहां पहुंचे हैं? पश्चिम बंगाल में आप टीएमसी और कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ हैं। और दिल्ली में एक साथ हैं। और अधीर बाबू 1991 पश्चिम बंगाल विधानसभा का चुनाव इन्हीं कम्युनिस्ट पार्टी ने अधीर बाबू के साथ क्या व्यवहार किया था, वो आज भी इतिहास में दर्ज है। खैर 1991 की बात तो अब पुरानी है, पिछले साल केरल के वायनाड में जिन लोगों ने कांग्रेस के कार्यालय में तोड़फोड़ की, ये लोग उनके साथ दोस्ती करके बैठे हैं। बाहर से तो ये अपना, बाहर से तो अपना लेबल बदल सकते हैं, लेकिन पुराने पापों का क्या होगा? ये ही पाप आपको लेके डूबेंगे। आप जनता जनार्दन से ये पाप कैसे छुपा पाओगे? आप नहीं छुपा सकते हो और इनको आज जो हालत है, इसलिए मैं कहना चाहता हूं, अभी हालात ऐसे हैं, अभी हालात ऐसे हैं इसलिए हाथों में हाथ, जहां हालात तो बदले, फिर छुरियां भी निकलेंगी। ये घमंडिया गठबंधन देश में परिवारवाद की राजनीति का सबसे बड़ा प्रतिबिंब है। देश के स्वाधीनता सेनानियों ने, हमारे संविधान निर्माताओं ने हमेशा परिवारवादी राजनीति का विरोध किया था। महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, बाबा साहब अंबेडकर, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, मौलाना आजाद, गोपीनाथ बोरदोलोई, लोकनाथ जयप्रकाश, डॉक्टर लोहिया, आप जितने भी नाम देखेंगे सबने परिवारवाद की खुलकर आलोचना की है, क्योंकि परिवारवाद का नुकसान देश के सामान्य नागरिक को उठाना पड़ता है। परिवारवाद सामान्य नागरिक के, उसके हकों, उसके अधिकारों से वंचित हैं, इसलिए इन विभूतियों ने हमेशा इस बात पर बहुत जोर दिया था कि देश को परिवार, नाम और पैसे पर आधारित व्यवस्था से हटना ही होगा, लेकिन कांग्रेस को हमेशा ये बात पसंद नहीं आई।

हमने हमेशा परिवारवाद का विरोध करने वालों का हमने बराबर देखा है कि उसके प्रति कैसे नफरत के भाव थे। कांग्रेस को परिवारवाद पसंद है। कांग्रेस को दरबारवाद पसंद है। जहां बड़े लोग, उनके बेटे-बेटियां भी बड़े पदों पर काबिज हों, जो परिवार से बाहर हैं, उनके लिए भी यही है कि जब तक आप इस महफिल में दरबारी नहीं बनोगे तो आपका भी कोई भविष्य नहीं है। यहीं उनकी कार्यशैली रही है। इस दरबार सिस्टम ने कई wicket लिए हैं। कितनों का हक मारा है, इन लोगों ने। बाबा साहब अंबेडकर- कांग्रेस ने जी-जान लगाकर दो बार उनको हरवाया। कांग्रेस के लोग बाबा साहब अंबेडकर के कपड़ों का मजाक उड़ाते थे, ये वो लोग हैं। बाबू जगजीवन राम, उन्होंने इमरजेंसी पर सवाल उठाए तो बाबू जगजीवन बाबू को भी उन्होंने नहीं छोड़ा, उनको प्रताड़ित किया। मोरारजी भाई देसाई, चरण सिंह, चंद्रशेखर जी, आप कितने ही नाम लीजिए, दरबारवाद के कारण देश के महान लोगों के अधिकारों को इन्होंने हमेशा-हमेशा के लिए तबाह कर दिया। यहां तब कि जो दरबारी नहीं थे, जो दरबारवाद से जुड़े नहीं थे उनके portrait तक parliament में लगाने से इनको झिझक होती थी। 1990 में उनके portrait central hall में तब लगे जब बीजेपी समर्पित गैर-कांग्रेसी सरकार सामने आई। लोहिया जी का portrait भी संसद में तब लगा जब 1991 में गैर-कांग्रेसी सरकार बनी। नेताजी का portrait 1978 में central hall लगाई, जब जनता पार्टी की सरकार थी। लाल बहादुर शास्त्री और चरण सिंह, उनका portrait भी 1993 में गैर-कांग्रेसी सरकार ने लगाया। सरदार पटेल के योगदान को भी कांग्रेस ने हमेशा नकारा। सरदार साहब को समर्पित विश्व की सबसे ऊंची Statue of Unity प्रतिमा बनाने का गौरव भी हमें प्राप्त हुआ। हमारी सरकार ने दिल्ली में पीएम म्यूजियम बनाया। सारे पूर्व प्रधानमंत्रियों को सम्मान दिया। पीएम म्यूजियम, दल और पार्टी से ऊपर उठकर सभी प्रधानमंत्रियों को समर्पित है। उनको ये भी नहीं पता है क्योंकि उनके परिवार के बाहर का कोई भी प्रधानमंत्री बना हो, वो उनको मंजूर नहीं है, वो उनको स्वीकार नहीं है।

बहुत बार कुछ बुरा बोलने के इरादे से भी जब कोशिश होती है तो कुछ न कुछ सच भी निकल जाता है। और सच में ऐसे अनुभव हम सबको हैं कभी-कभी सच निकल जाता है। लंका हनुमान ने नहीं जलाई, उनके घमंड ने जलाई और ये बिल्कुल सच है। आप देखिए, जनता-जनार्दन भी भगवान राम का ही रूप है। और इसलिए 400 से 40 हो गए। हनुमान ने लंका नहीं जलाई, घमंड ने जलाई और इसलिए 400 से 40 हो गए।

सच्चाई तो ये है देश की जनता ने दो-दो बार तीस साल के बाद पूर्ण बहुमत की सरकार चुनी है। लेकिन गरीब का बेटा यहां कैसे बैठा है। आपको जो हक था, आप अपनी पारिवारिक पीढ़ी मानते थे, वो यहां कैसे बैठ गया, ये चुभन अभी भी आपको परेशान कर रही है, आपको सोने नहीं देती है। और देश की जनता भी आपको सोने नहीं देगी, 2024 में भी सोने नहीं देगी।

कभी इनके जन्मदिन पर हवाई जहाज में केक काटे जाते थे। आज उस हवाई जहाज में गरीब के लिए वैक्सीन जाता है, ये फर्क है।

एक जमाना था, कभी ड्राईक्लीन के लिए कपड़े हवाई जहाज से आते थे, आज गरीब, हवाई चप्पल वाला हवाई जहाज में उड़ रहा है।

कभी छुट्टी मनाने के लिए, मौज-मस्ती करने के लिए नौसेना के युद्धपोत मंगवा लेते थे, नौसेना के युद्धपोत मंगवाते थे, मौज-मस्ती के लिए। आज उसी नौसेना के जहाज दूर देशों में फंसे भारतीयों को अपने घर लाने के लिए, गरीबों को अपने घर लाने के लिए उपयोग में आते हैं।

जो लोग आचार-व्यवहार, चाल-चरित्र से राजा बन गए हों, आधुनिक राजा के रूप में ही जिनका दिमाग काम करता हो, उन्हें गरीब का बेटा यहां होने से परेशानी होगी ही होगी। आखिर ये नामदार लोग हैं और ये कामदार लोग हैं। कुछ बातें बहुत ही अवसर पर मुझे कहने का समय मिलता है। बहुत सी बातें ऐसी होती हैं, इत्तेफाक देखिए, ईवन मैं तो तय करके बैठता नहीं हूं लेकिन इत्तेफाक देखिए- देखिए कल, कल यहां दिल से बात करने की बात भी कही गई थी। उनके दिमाग के हाल को तो देश लंबे समय से जानता है, लेकिन अब उनके दिल का भी पता चल गया।

इनका मोदी प्रेम तो इतना जबरदस्त है जी, चौबीसों घंटे सपने में भी उनको मोदी आता है। मोदी अगर भाषण करते समय बीच में पानी पिएं तो वे कहते हैं अगर पानी भी पिया तो सीना तानकर इधर देखिए- मोदी को पानी पिला दिया। अगर मैं गर्मी में, कड़ी धूप में भी जनता-जनार्दन के दर्शन के लिए चल पड़ता हूं, कभी पसीना पोंछता हूं तो कहते हैं देखिए, मोदी को पसीना ला दिया। देखिए, इनका जीने का सहारा देखिए। एक गीत की पंक्ति हैं-

डूबने वाले को तिनके का
सहारा ही बहुत,

दिल बहल जाए फकत, इतना इशारा ही बहुत।
इतने पर भी आसमां वाला गिरा दे बिजलियां, कोई बतला दे जरा डूबता फिर क्या करे।

मैं कांग्रेस की मुसीबत समझता हूं। बरसों से एक ही फेल प्रोडक्ट उसको बार-बार लॉन्च करते हैं। हर बार लॉन्चिंग फेल हो जाती है। और अब उसका नतीजा ये हुआ है, मतदाताओं के प्रति उनकी नफरत भी सातवें आसमान पर पहुंच गई है। उनका लॉन्चिंग फेल होता है, नफरत जनता पर करते हैं। लेकिन पीआर वाले प्रचार क्या करते हैं? मोहब्बत की दुकान का प्रचार करते हैं, इकोसिस्टम लग पड़ती है। इसलिए देश की जनता भी कह रही है ये है लूट की दुकान, झूठ का बाजार। ये है लूट की दुकान, झूठ का बाजार। इसमें नफरत है, घोटाले हैं, तुष्टीकरण हैं, मन काले हैं। परिवारवाद की आग के दशकों से देश हवाले हैं। और तुम्हारी दुकान ने और तुम्हारी दुकान ने इमरजेंसी बेची है, बंटवारा बेचा है, सिखों पर अत्याचार बेचा है, झूठ कितना सारा बेचा है, इतिहास बेचा है, उरी के सच के प्रमाण बेचा है, शर्म करो नफरत की दुकान वालों तुमने सेना का स्वाभिमान बेचा है।

हम तो यहां बैठे हुए काफी लोग गांव गरीब वाली पृष्ठभूमि से हैं। यहां सदन में बड़ी संख्या में लोग गांव और छोटे कस्बों से आते हैं और गांव का कोई व्यक्ति विदेश जाए, सालों तक वो उसके गीत गाता रहता है। एकाध बार भी कभी विदेश जाए, देखकर के आया हो, सालों तक बताता रहता है कि मैं ये देख के आया, मैं ये देख के आया, मैंने ये सुना, मैंने ये मुझे देखा, स्वाभाविक है गांव का व्यक्ति जिसने बिचारे ने दिल्ली-मुंबई भी न देखा हो और अमेरिका जा के आ जाए। यूरोप जा के आ जाए तो वो वर्णन करता रहता है। जिन लोगों ने, कभी गमले में मूली नहीं उगाई, जिन लोगों ने कभी गमले में मूली नहीं उगाई, वो खेतों को देखकर हैरान होने ही होने हैं।

ये लोग तो जो कभी जमीन पर उतरे ही नहीं, जिन्होंने हमेशा गाड़ी का शीशा डाउन करके दूसरों की गरीबी देखी है, उन्हें सब हैरान करने वाला लग रहा है। जब ऐसे लोग भारत की स्थिति का वर्णन करते हैं तो ये भूल जाते हैं कि ये भारत में 50 साल तक उनके परिवार ने राज किया था। एक प्रकार से जब भारत के इस रूप का वर्णन करते हैं तब वो अपने पूर्वजों की विफलताओं का जिक्र करते हैं, ये इतिहास गवाह है। और इनकी दाल गलने वाली नहीं है। इसलिए नई-नई दुकानें खोलकर के बैठ जाते हैं।

इन लोगों को पता है कि इनकी नई दुकान पर भी कुछ दिनों में ताला लग जाएगा। और आज इस चर्चा के बीच देश के लोगों को मैं बड़ी गंभीरता के साथ इस घमंडिया गठबंधन की आर्थिक नीति से भी सावधान करना चाहता हूं। ये देश में ये घमंडिया गठबंधन ऐसी अर्थव्यवस्था चाहता है, जिससे देश कमजोर हो और उसको सामर्थ्य बन न पाए। हम अपने आस-पास के देशों में देखते हैं जिन आर्थिक नीतियों को लेकर के कांग्रेस के और उसके साथी आगे बढ़ना चाहते हैं, जिस प्रकार से खजाने से पैसे लुटाकर वोट पाने का खेल खेल रहे हैं, हमारे आस-पास के देश के हालात देख लीजिए। दुनिया के उन देशों की स्थिति देख लीजिए। और मैं देश को कहना चाहता हूं, इनसे सुधरने की मुझे कोई अपेक्षा नहीं है, वो जनता इनको सुधार देगी। इस प्रकार की चीजों का दुष्परिणाम हमारे देश पर भी हो रहा है, हमारे राज्यों पर भी हो रहा है। चुनाव जीतने के लिए अनाब-शनाब वादों के कारण अब इन राज्यों में जनता के ऊपर नए-नए दण्ड डाले जा रहे हैं। नए-नए बोझ डाले जा रहे हैं और विकास के प्रोजेक्ट्स बंद करने की घोषणा की जा रही है, विधिवत रूप से घोषणा की जा रही है।

ये घमंडिया गठबंधन की जो आर्थिक नीति है, उस आर्थिक नीतियों का मैं परिणाम साफ देख रहा हूं। और इसलिए मैं देशवासियों को चेतावनी, देशवासियों को ये सत्य समझाना चाहता हूं। ये लोग ये घमंडिया गठबंधन ये लोग भारत के दिवालिया होने की गारंटी है, भारत के दिवालिया होने की गारंटी है। ये इकोनॉमी को डूबाने की गारंटी है, ये इकोनॉमी को डूबाने की गारंटी है। ये डबल डिजिट महंगाई की गारंटी है, ये डबल डिजिट महंगाई की गारंटी है। ये पॉलिसी पैरालिसिस की गारंटी है, ये पॉलिसी पैरालिसिस की गारंटी है। ये अस्थिरता की गारंटी है, ये अस्थिरता की गारंटी है। ये करप्शन की गारंटी है, ये करप्शन की गारंटी है। ये तुष्टीकरण की गारंटी है, ये तुष्टीकरण की गारंटी है। ये परिवारवाद की गारंटी है, ये परिवारवाद की गारंटी है। ये भारी बेरोजगारी की गारंटी है, ये भारी बेरोजगारी की गारंटी है। ये आतंक और हिंसा की गारंटी है, ये आतंक और हिंसा की गारंटी है। ये भारत को दो शताब्दी पीछे पहुंचाने की गारंटी है।

ये कभी भारत को टॉप 3 अर्थव्यवस्था बनाने की गारंटी नहीं दे सकते। ये मोदी देश को गारंटी देता है कि तीसरे कार्यकाल में मैं हिन्दुस्तान को टॉप 3 की पोजीशन में ला के रखूंगा, ये मेरी देश को गारंटी है। ये कभी भी देश को विकसित बनाने का सोच भी नहीं सकते हैं। उस दिशा में ये लोग कुछ कर भी नहीं सकते हैं।

लोकतंत्र में जिनका भरोसा नहीं होता है वो सुनाने के लिए तो तैयार होते हैं लेकिन सुनने का धैर्य नहीं होता है। अपशब्द बोलो भाग जाओ, कूड़ा कचरा फैंको भाग जाओ, झूठ फैलाओ भाग जाओ, यही जिनका खेल है। ये देश इनसे अपेक्षा ज्यादा नहीं कर सकता है। अगर इन्होंने गृह मंत्री जी की मणिपुर की चर्चा पर सहमति दिखाई होती तो अकेले मणिपुर विषय पर विस्तार से चर्चा हो सकती थी। हर पहलू पर चर्चा हो सकती थी। और उनको भी बहुत कुछ कहने का मौका मिल सकता था। लेकिन उनको चर्चा में रस नहीं था और अमित भाई ने विस्तार से इस विषय की चीजें जब रखी तो देश को भी आश्चर्य हुआ है कि ये लोग इतना झूठ फैला सकते हैं। ऐसे-ऐसे पाप करके गए हैं लोग और वे आज जब अविश्वास का प्रस्ताव लाए और अविश्वास पर सारे विषय पर वो बोले तो ट्रेजरी बेंच का भी दायित्व बनता है कि देश के विश्वास को प्रकट करे, देश के विश्वास को नई ताकत दें, देश के प्रति अविश्वास करने वालों के लिए करारा जवाब दें, ये हमारा भी दायित्व बनता है। हमने कहा था, अकेले मणिपुर के लिए आओ चर्चा करो, गृहमंत्री जी ने चिट्ठी लिखकर के कहा था। उनके विभाग से जुड़ा विषय था। लेकिन साहस नहीं था, इरादा नहीं था और पेट में पाप था, दर्द पेट में हो रहा था और फोड़ रहे थे सर, इसका ये परिणाम था।

मणिपुर की स्थिति पर देश के गृह मंत्री श्रीमान अमित शाह ने दो घंटे तक विस्तार से और बड़े धैर्य से रत्ती भर भी राजनीति के बिना सारे विषय को विस्तार से समझाया, सरकार की और देश की चिंता को प्रकट किया और उसमें देश की जनता को जागरूक करने का भी प्रयास था। उसमे इस पूरे सदन की तरफ से एक विश्वास का संदेश मणिपुर को पहुंचाने का इरादा था। उसमें जन सामान्य को शिक्षित करने का भी प्रयास था। एक नेक ईमानदारी से देश की भलाई के लिए और मणिपुर की समस्या के लिए रास्ते खोजना एक प्रयास था। लेकिन सिवाय राजनीति के कुछ करना नहीं है, इसलिए इन्होंने यही खेल किए, यही स्थिरता की।

वैसे तो विस्तार से अमित भाई ने बताया है। मणिपुर में अदालत का एक फैसला आया। अब अदालतों में क्या हो रहा है वो हम जानते हैं। और उसके पक्ष विपक्ष में जो परिस्थितियां बनीं, हिंसा का दौर शुरू हो गया और उसमें बहुत परिवारों को मुश्किल हुई। अनेकों ने अपने स्वजन भी खोएं। महिलाओं के साथ गंभीर अपराध हुआ और ये अपराध अक्षम्य है और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलवाने के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकार मिलकर के भरपूर प्रयास कर रही है। और मैं देश के सभी नागरिकों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि जिस प्रकार से प्रयास चल रहे हैं निकट भविष्य में शांति का सूरज जरूर उगेगा। मणिपुर फिर एक बार नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेगा। मैं मणिपुर के लोगों से भी आग्रह पूर्वक कहना चाहता हूं, वहां की माताओं-बहनों, बेटियों से कहना चाहता हूं देश आपके साथ है, ये सदन आपके साथ है। हम सब मिलकर के कोई यहां हो या ना हो, हम सब मिलकर के इस चुनौती का समाधान निकालेंगे, वहां फिर से शांति की स्थापना होगी। मैं मणिपुर के लोगों को विश्वास दिलाता हूं कि मणिपुर फिर विकास की राह पर तेज गति से आगे बढ़े उसमें कोई प्रयासों में कोई कसर नहीं रहेगी।

यहां सदन में मां भारती के बारे में जो कहा गया है, उसने हर भारतीय की भावना को गहरी ठेस पहुंचाई है।

पता नहीं क्या हो गया है। सत्ता के बिना ऐसा हाल किसी का हो जाता है क्या? सत्ता सुख के बिना जी नहीं सकते हैं क्या? और क्या क्या भाषा बोल रहे हैं।

पता नहीं क्यों कुछ लोग भारत मां की मृत्यु की कामना करते नजर आ रहे हैं। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। ये वो लोग हैं जो कभी लोकतंत्र की हत्या की बात करते हैं, कभी संविधान की हत्या की बात करते हैं। दरअसल जो इनके मन में है, वही उनके कृतित्व में सामने आ जाता है।

ये बोलने वाले कौन लोग हैं? क्या ये देश भूल गया है ये 14 अगस्त विभाजन विभीषिका, पीड़ा दायक दिवस आज भी हमारे सामने उन चीख को लेकर के, उन दर्द को लेकर के आता है। ये वो लोग जिन्होंने मां भारती के तीन-तीन टुकड़े कर दिए। जब मां भारती को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना था, जब मां भारती की जंजीरों को तोड़ना था, बड़ियों को काटना था, तब इन लोगों ने मां भारती की भुजाएं काट दीं। मां भारती के तीन-तीन टुकड़े कर दिए और ये लोग किस मुंह से ऐसा बोलने की हिम्मत करते हैं।

ये वो लोग हैं जिस वंदे मातरम गीत ने देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा दी थी। हिन्दुस्तान के हर कोने में वंदे मातरम चेतना का स्वर बन गया था। तुष्टिकरण की राजनीति के चलते उन्होंने मां भारती के ही टुकड़े किए इतना नहीं, वंदे मातरम गीत के भी टुकड़े कर दिए इन लोगों ने। ये वो लोग हैं जो भारत तेरे टुकड़े होंगे ये गैंग ये नारा लगाने वाले लोग, इनको बढ़ावा देने के लिए, उनका प्रोत्साहन करने के लिए पहुंच जाते हैं। भारत तेरे टुकड़े होंगे उनको बढ़ावा दे रहे हैं। ये उन लोगों की मदद कर रहे हैं जो ये कहते हैं कि सिलीगुड़ी के पास जो छोटा सा नॉर्थ ईस्ट को जोड़ने वाला कॉरिडोर है, उसको काट दें तो बिल्कुल नॉर्थ ईस्ट अलग हो जाएगा। ये सपना देखने वालों का जो लोग समर्थन करते हैं।

जरा इनको जहां भी हो जरा मेरा सवाल अगल बगल में बैठे हुए कोई जवाब दे ये जो बाहर गए हैं न उनको जरा पूछिए कि कच्चातिवु क्या है? कोई पूछो इनको कच्चातिवु क्या है? इतनी बड़ी बाते करते हैं आज मैं बताना चाहता हूं ये कच्चातिवु क्या है और ये कच्चातिवु कहां आया जरा उनको पूछिए, इतनी बड़ी बातें लिखकर के देश को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। और ये डीएमके वाले उनकी सरकार उनके मुख्यमंत्री मुझे चिट्ठी लिखते हैं, अभी भी लिखते हैं और कहते हैं मोदी जी कच्चातिवु वापस ले आइए। ये कच्चातिवु है क्या? किसने किया? तमिलनाडु से आगे श्रीलंका के पहले एक टापू किसी ने किसी दूसरे देश को दे दिया था। कब दिया था, कहां गई थी, क्या ये भारत माता नहीं थी वहां? क्या वो मां भारती का अंग नहीं था? और इसको भी आपने तोड़ा। कौन था उस समय, श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में हुआ था। कांग्रेस का इतिहास मां भारती को छिन्न-भिन्न करने का रहा है।

और कांग्रेस का मां भारती के प्रति प्रेम क्या रहा है? भारत के वासियों के प्रति प्रेम क्या रहा है? एक सच्चाई बड़े दुख के साथ मैं इस सदन के सामने रखना चाहता हूं। ये पीड़ा वो नहीं समझ पाएंगे। मैं दावणगेरे के चप्पे-चप्पे पर घुमा हुआ व्यक्ति हूं और राजनीति में कुछ नहीं था तब भी अपने पैर वहां घिसता था। मेरा एक इमोशनल अटैचमेंट है उस क्षेत्र के प्रति। इनको अंदाज नही है।

मैं तीन प्रसंग आपके सामने रखना चाहता हूं पहली घटना 5 मार्च, 1966 इस दिन कांग्रेस ने मिजोरम में असहाय नागरिकों पर अपनी वायुसेना के माध्यम से हमला करवाया था। और वहां गंभीर विवाद हुआ था। कांग्रेस वाले जवाब दें क्या वो किसी दूसरे देश की वायुसेना थी क्या। क्या मिजोरम के लोग मेरे देश के नागरिक नहीं थे क्या। क्या उनकी सुरक्षा ये भारत सरकार की जिम्मेदारी थी कि नहीं थी। 5 मार्च, 1966- वायुसेना से हमला करवाया गया, निर्दोष नागरिकों पर हमला करवाया गया।

आज भी मिजोरम में 5 मार्च को आज भी पूरा मिजोरम शोक मनाता है। उस दर्द को मिजोरम भूल नहीं पा रहा है। कभी इन्होंने मरहम लगाने की कोशिश नहीं की, घाव भरने का प्रयास तक नहीं किया है। कभी उनको इसका दुख नहीं हुआ है। और कांग्रेस ने इस सच को देश के सामने छुपाया है। ये सत्य देश से इन्होंने छिपाया है। क्या अपने ही देश में वायुसेना से हमला करवाना, कौन था उस समय- इंदिरा गांधी। अकाल तख्त पर हमला हुआ, ये तो अभी भी हमारी स्मृति में है, उनको मिजोरम में उससे पहले ये आदत लग गई थी। और इसलिए अकाल तख्त पर हमला करने तक वो पहुंचे थे मेरे ही देश में, और यहां हमें उपदेश दे रहे हैं।

नॉर्थ-ईस्ट में वहां के लोगों के विश्वास की इन्होंने हत्या की है। वो घाव किसी न किसी समस्या के रूप में उभर करके आते हैं, उन्हीं के कारनामे हैं।

दूसरी घटना का वर्णन करना चाहता हूं और वो घटना है 1962 का वो खौफनाक रेडियो प्रसारण आज भी शूल की तरह नार्थ ईस्ट के लोगों को चुभ रहा है। पंडित नेहरू ने 1962 में जब देश के ऊपर चाइना का हमला चल रहा था, देश के हर कोने में लोग अपनी रक्षा के लिए भारत से अपेक्षा करके बैठे थे, उनको कोई मदद मिलेगी, उनकी जान-माल की रक्षा होगी, देश बच जाएगा। लोग अपने हाथों से लड़ाई लड़ने के लिए मैदान में उतरे हुए थे, ऐसी विकट घड़ी में दिल्ली के शासन पर बैठे हुए और उस समय पर एकमात्र जो नेता हुआ करते थे, पंडित नेहरू ने रेडियो पर क्या कहा था- उन्होंने कहा था... My heart goes out to the people of Assam. ये हाल करके रखा था उन्होंने। वो प्रसारण आज भी असम के लोगों के लिए एक नश्तर की तरह चुभता रहता है। और किस प्रकार से उस समय नेहरू जी ने उन्हें अपने भाग्य पर छोड़ जीने के लिए मजबूर कर दिया था। ये हमसे हिसाब मांग रहे हैं।

यहां से चले गए लोहियावादी। उन्हें भी मैं सुनाना चाहता था, जो लोग अपने-आप को

लोहिया जी का वारिस कहते हैं और जो कल सदन में बड़े उछल-उछल करके बोल रहे थे, हाथ लंबे-चौड़े करने की कोशिश कर रहे थे। लोहिया जी ने नेहरू जी पर गंभीर आरोप लगाया था। और लोहिया जी ने कहा था और वो आरोप था कि जान-बूझकर नेहरू जी नॉर्थ-ईस्ट का विकास नहीं कर रहे थे, जान-बूझ करके नहीं कर रहे थे। और लोहिया जी के शब्द थे- ये कितनी लापरवाही वाली और कितनी खतरनाक बात है- लोहिया जी के शब्द- हैं, ये कितनी लापरवाही वाली और कितनी खतरनाक बात है 30 हजार स्क्वॉयर मील से बड़े क्षेत्र को एक कोल्ड स्टोरेज में बंद करके उसे हर तरह के विकास से वंचित कर दिया गया है। ये लोहिया जी ने नेहरू पर आरोप लगाया था कि नॉर्थ-ईस्ट के लिए तुम्हारा रवैया क्या है, ये कहा था। नॉर्थ-ईस्ट के लोगों के हृदय को, उनकी भावनाओं को आपने कभी समझने की कोशिश नहीं की है। मेरे मंत्री परिषद के मंत्री रात्रि निवास करके वो अकेले स्टेट हेड क्वार्टर में नहीं, डिस्ट्रिक हेड क्वार्टर और मैं स्वयं 50 बार गया हूँ। ये आंकड़ा नहीं है सिर्फ, ये साधना है। ये नॉर्थ-ईस्ट के प्रति समर्पण है।

और कांग्रेस का हर कामकाज राजनीति और चुनाव और सरकार के आसपास ही घूमता रहता है। जहां ज्यादा सीटें मिलती हों राजनीति की अपनी खिचड़ी पकती है तो वहां तो मजबूरन से ही कुछ कर लेते हैं, लेकिन नॉर्थ-ईस्ट में, देश सुन रहा है, नॉर्थ-ईस्ट में उनकी कोशिश रही कि जहां पर इक्का-दुक्का सीटें होती थीं वो इलाके उनके लिए स्वीकार्य नहीं थे। वो इलाके उनको मंजूर नहीं थे, उनकी तरफ उनका ध्यान नहीं था। उनको देश के नागरिक के हितों की कोई संवेदना नहीं थी।

और इसलिए जहां इक्का-दुक्का सीटें हुआ करती थीं, उसके प्रति सौतेला व्यवहार, ये कांग्रेस के डीएनए में रहा है, पिछले कई वर्षों का इतिहास देख लीजिए। नॉर्थ-ईस्ट में उनका ये रवैया था, लेकिन अब देखिए मैं पिछले 9 साल के मेरे प्रयासों से कहता हूं कि हमारे लिए नॉर्थ-ईस्ट हमारे जिगर का टुकड़ा है।

आज मणिपुर की समस्याओं को ऐसे प्रस्तुत किया जा रहा है, जैसे बीते कुछ समय में ही वहां यह परिस्थिति पैदा हुई हो। अमित भाई ने विस्तार से बताया है समस्या क्या है, कैसे हुआ है। लेकिन बड़ी गंभीरता से कहना चाहता हूं नॉर्थ ईस्ट की इन समस्याओं की कोई जननी है तो जननी एकमात्र कांग्रेस है। नॉर्थ ईस्ट के लोग इसके लिए जिम्मेदार नहीं है, इनकी यह राजनीति जिम्मेदार है।

भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत मणिपुर, भाव भक्ति की समृद्धि की विरासत वाला मणिपुर, स्वतंत्रता संग्राम और आजाद हिंद फौज, अनगिनत बलिदान देने वाला मणिपुर। कांग्रेस के शासन में ऐसा महान हमारा भूभाग अलगाव की आग में बलि चढ़ गया था। आखिर क्यों?

आप सबको भी मैं याद दिलाना चाहता हूं, यहां जो मेरे नॉर्थ-ईस्ट के भाई हैं उनको हर चीज का पता है। जब मणिपुर में, वो एक समय था हर व्यवस्था उग्रवादी संगठनों की मर्जी से चलती थी, वो जो कहे वो होता था, और उस समय सरकार किसकी थी मणिपुर में? कांग्रेस की, किसकी सरकार थी- कांग्रेस। जब सरकारी दफ्तरों में महात्मा गांधी की फोटो नहीं लगाने दी जाती थी, तब सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब मोरांग में आजाद हिंद फौज के संग्रहालय पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर बम फेंका गया, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस। तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस।

जब मणिपुर में स्कूलों में राष्ट्रगान नहीं होने देंगे, यह निर्णय किये जाते थे, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब अभियान एक अभियान चला था, अभियान चला करके लाइब्रेरी में रखी गई किताबों को जलाने का इस देश की अमूल्य ज्ञान की विरासत को जलाते समय सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब मणिपुर में मंदिर की घंटी शाम को चार बजे बंद हो जाती थी, ताले लग जाते थे, पूजा-अर्चना करना बड़ा मुश्किल हो जाता था, सेना का पहरा लगाना पड़ता था, तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस।

जब इम्फाल के इस्कॉन मंदिर पर बम फेंक कर श्रद्धालुओं की जान ले ली गई थी तब मणिपुर में सरकार किसकी थी? कांग्रेस। जब अफसर, हाल देखिए, आईएएस, आईपीएस अफसर उनको अगर वहां काम करना है तो उनकी तनख्वाह का एक हिस्सा उनको इन उग्रवादी लोगों को देना पड़ता था। तब जा करके वो रह पाते थे, तब सरकार किसकी थी? कांग्रेस। इनकी पीड़ा सिलेक्टिव है, इनकी संवेदना सिलेक्टिव है। इनका दायरा राजनीति से शुरू होता है और राजनीति से आगे बढ़ता है। वे राजनीति के दायरे से बाहर थे, न मानवता के लिए सोच सकते हैं, न देश के लिए सोच सकते हैं, न ही देश की इन कठिनाइयों के लिए सोच सकते हैं। उनको सिर्फ राजनीति के सिवा कुछ सूझता नहीं है।

मणिपुर में जो सरकार है और पिछले छह साल से इन समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए लगातार समर्पित भाव से कोशिश कर रही है। बंद और ब्लॉकेट का जमाना कोई भूल नहीं सकता है। मणिपुर में आये दिन बंद और ब्लॉकेट होता था। वो आज बीते दिन की बात हो चुकी है। शांति स्थापना के लिए हरेक को साथ लेकर चलने के लिए एक विश्वास जगाने का प्रयास निरंतर हो रहा है, आगे भी होगा। और जितना ज्यादा हम राजनीति को दूर रखेंगे, उतनी शांति निकट आएगी। यह मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूं। हमारे लिए नॉर्थ-ईस्ट आज भले हमें दूर लगता हो, लेकिन जिस प्रकार से साउथ ईस्ट एशिया का विकास हो रहा है, जिस प्रकार आसियान देशों का महत्व बढ़ रहा है, वो दिन दूर नहीं होगा, हमारे ईस्ट की प्रगति के साथ-साथ नॉर्थ-ईस्ट वैश्विक दृष्टि से सेंटर पाइंट बनने वाला है। और मैं यह देख रहा हूं, और इसलिए मैं पूरी ताकत से आज नॉर्थ-ईस्ट की प्रगति के लिए कर रहा हूं, वोट के लिए नहीं कर रहा हूं जी। मुझे मालूम है कि करवट लेते हुए विश्व की नई संरचना किस प्रकार से साउथ ईस्ट एशिया और आसियान की कंट्री के लिए प्रभाव पैदा करने वाली है और नॉर्थ-ईस्ट का क्या महत्व बढ़ने वाला है और न नॉर्थ-ईस्ट का गौरव गान फिर से कैसे शुरू होने वाला है, वो मैं देख सकता हूं और इसलिए मैं लगा हुआ हूँ।

और इसलिए हमारी सरकार ने नॉर्थ-ईस्ट के विकास को पहली प्राथमिकता दी है। पिछले नौ वर्षों में लाखों करोड़ रुपये नॉर्थ-ईस्ट की इन्फ्रास्ट्रक्चर पर हमने लगाये हैं। आज आधुनिक हाईवे, आधुनिक रेलवे, आधुनिक नए एयरपोर्ट यह नॉर्थ-ईस्ट की पहचान बन रहे हैं। आज पहली बार अगरतला रेल कनेक्टिविटी से जुड़ा है। पहली बार मणिपुर में गुड्स ट्रेन पहुंची है। पहली बार नॉर्थ-ईस्ट में वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेन चली है। पहली बार अरुणाचल प्रदेश में ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट बना है। पहली बार अरुणाचल में सिक्किम जैसे राज्य एयर कनेक्टिविटी से जुड़ा है। पहली बार वाटर-वे के जरिये पूर्वोत्तर इंटरनेशनल ट्रेड का गेटवे बना है। पहली बार नॉर्थ-ईस्ट में एम्स जैसा मेडिकल संस्थान खुला है। पहली बार मणिपुर में देश की पहली स्पोर्ट यूनिवर्सिटी खुल रही है। पहली बार मिजोरम में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मॉस कम्युनिकेशन जैसे संस्था खुल रहे हैं। पहली बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में नॉर्थ-ईस्ट की इतनी भागीदारी बढ़ी है। पहली बार नागालैंड

से एक महिला सांसद राज्यसभा में पहुंची है। पहली बार इतनी बड़ी संख्या में नॉर्थ-ईस्ट के लोगों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पहली बार पूर्वोत्तर से लचित बोरफुकन जैसे नायक की झांकी गणतंत्र दिवस में शामिल हुई है। पहली बार मणिपुर में रानी गाइदिन्ल्यू के नाम पर पूर्वोत्तर का पहला ट्राइबल फ्रीडम फाइटर म्यूजियम बना है।

हम जब सबका साथ, सबका विकास कहते हैं, यह हमारे लिए नारा नहीं, यह हमारे शब्द नहीं है। यह हमारे लिए आर्टिकल ऑफ फेथ है। हमारे लिए कमिटमेंट है और हम देश के लिए निकले हुए लोग हैं। हमने तो कभी जीवन में सोचा ही नहीं था कि कभी ऐसी जगह आ करके बैठने का सौभाग्य मिलेगा। लेकिन यह देश की जनता की कृपा है कि उसने हमें अवसर दिया है तो मैं देश की जनता को विश्वास दिलाता हूं - शरीर का कण-कण, समय का पल-पल सिर्फ और सिर्फ देशवासियों के लिए है, मैं अपने विपक्ष के साथियों की एक बात के लिए तारीफ करना चाहता हूं। क्योंकि वैसे तो वो सदन के नेता को नेता मानने के लिए तैयार नहीं है। मेरे किसी भाषण को उन्होंने होने नहीं दिया है, लेकिन मुझमें धैर्य भी है, सहनशक्ति भी है और झेल भी लेता हूं और वो थक भी जाते हैं। लेकिन एक बात के लिए मैं तारीफ करता हूं, सदन के नेता के नाते मैंने 2018 में उनको काम दिया था कि 2023 में आप अविश्वास प्रस्ताव ले करके आए और मेरी बात मानी उन्होंने। लेकिन मुझे दुःख इस बात का है कि 18 के बाद 23 में पांच साल मिले, थोड़ा अच्छा करते, अच्छे ढंग से करते, लेकिन तैयारी बिल्कुल नहीं थी। कोई इनोवेशन नहीं था, कोई क्रिएटिविटी नहीं थी। न मुद्दे खोज पा रहे थे, पता नहीं यह देश को इन्होंने बहुत निराश किया है। चलिए कोई बात नहीं 2028 में हम फिर से मौका देंगे। लेकिन मैं इस बार उनसे आग्रह करता हूं कि जब 2028 में आप अविश्वास प्रस्ताव ले करके आएं हमारी सरकार के खिलाफ, थोड़ी तैयारी करके आइये। कुछ मुद्दे ढूंढ करके आइये, ऐसे क्या घिसी-पिटी बातें ले करके घूमते रहते हो और देश की जनता को थोड़ा विश्वास इतना मिल जाए कि चलो आप विपक्ष के भी योग्य हो। इतना तो करो। आपने वो योग्यता भी खो दी है। मैं आशा करता हूं कि वो थोड़ा होमवर्क करेंगे। तू-तू, मैं-मैं और चिल्लाना-चीखना, और नारेबाजी के लिए तो दस लोग मिल जाएंगे, लेकिन थोड़ा दिमाग वाला भी काम भी कीजिए ना।

राजनीति अपनी जगह पर है, संसद ये दल के लिए प्लेटफॉर्म नहीं है। संसद देश के लिए सम्मानीय सर्वोच्च संस्थान है। और इसलिए सांसदों को भी इसके लिए गंभीर होना जरूरी है। देश इतने संसाधन लगा रहा है। देश के गरीब के हक का यहां खर्च किया जाता है। यहां का पल-पल का उपयोग देश के लिए होना चाहिए। लेकिन यह गंभीरता विपक्ष के पास नजर नहीं आ रही है। इसलिए, यह राजनीति ऐसे तो नहीं हो सकती। चलो खाली है जरा संसद घूम आते हैं, इसलिए संसद है क्या? यह तरीका होता है क्या?

यह चलो संसद घूम आते हैं, इस भावना से राजनीति तो चल सकती है, देश नहीं चल सकता है। यहां देश चलाने के लिए हमें काम दिया गया है और इसलिए वो अगर जिम्मेदारी को पूरा नहीं करते हैं, तो वे जनता-जर्नादन अपने मतदाताओं का विश्वासघात करते हैं और इन्होंने विश्वासघात किया है।

मेरा इस देश की जनता पर अटूट विश्वास है, अपार विश्वास है और मैं, विश्वास से कहता हूं कि हमारे देश के लोग एक प्रकार से अखंड विश्वासी लोग हैं। हजार साल की गुलामी के कालखंड में भी, उनके भीतर के विश्वास को कभी उन्होंने हिलने नहीं दिया था। यह अखंड विश्वासी समाज है, अखंड चैतन्य से भरा हुआ समाज है। यह संकल्प के लिए समर्पण की परंपरा को ले करके चलने वाला समाज है। वयम् राष्ट्रांग भूता कह करके देश के लिए उसी संवेदना के साथ काम करने वाला ये समाज है।

और इसलिए, यह ठीक है गुलामी के कालखंड में हम पर बहुत हमले हुए, बहुत कुछ झेलना पड़ा हमें लेकिन हमारे देश के वीरों, हमारे देश के महापुरुषों ने, हमारे देश के चिंतकों ने, हमारे देश के सामान्य नागरिक ने विश्वास की उस लौ को कभी बुझने नहीं दिया है। कभी भी वो लौ कभी बुझी नहीं थी और जब लौ कभी बुझी नहीं तब प्रकाश पुंज के सांये में हम उस आनंद को ले रहे हैं। बीते नौ वर्षों में देश के सामान्य मानवी का विश्वास नई बुलंदियों को छू रहा है, नये अरमानों को छू रहा है। मेरे देश के नौजवान विश्व की बराबरी करने के सपने देखने लगे हैं। और इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है। हर भारतीय विश्वास से भरा हुआ है।

आज का भारत न दबाव में आता है, न दबाव को मानता है। आज का भारत न झुकता है, आज का भारत न थकता है, आज का भारत न रुकता है। समृद्ध विरासत विश्वास ले करके, संकल्प ले करके चलिए और यही कारण है जब देश का सामान्य मानवी देश पर विश्वास करने लगता है तो दुनिया को भी हिन्दुस्तान पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है। आज चूंकि दुनिया का विश्वास भारत के प्रति बना है उसका एक कारण भारत के लोगों का खुद पर विश्वास बढ़ा है। यह सामर्थ्य है, कृपा करके इस विश्वास को तोड़ने की कोशिश मत कीजिए। मौका आया है देश को आगे ले जाने का, समझ नहीं सकते हो तो चुप रहो। इंतजार करो, लेकिन देश के विश्वास को विश्वासघात करके तोड़ने की कोशिश मत करो।

बीते वर्षों में विकसित भारत की मजबूत नींव रखने में हम सफल हुए और सपना लिया है 2047 जब देश आजादी के 100 वर्ष मनाएगा, आजादी के 75 वर्ष पूरे होते ही अमृतकाल शुरू हुआ है। और अमृतकाल के प्रारंभिक वर्षों में है तब इस विश्वास के साथ मैं कहता हूं जो नींव आज मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है, उस नींव की ताकत है कि 2047 में हिन्दुस्तान विकसित हिन्दुस्तान होगा, भारत विकसित भारत होगा। और यह देशवासियों के परिश्रम से होगा, देशवासियों के विश्वास से होगा, देशवासियों के संकल्प से होगा, देशवासियों की सामूहिक शक्ति से होगा, देशवासियों की अखंड पुरुषार्थ से होने वाला है यह मेरा विश्वास है। हो सकता है, यहां जो बोला जाता है वो रिकॉर्ड के लिए तो शब्द चले जाएंगे, लेकिन इतिहास हमारे कर्मों को देखने वाला है, जिन कर्मों से एक समृद्ध भारत का सपना साकार करने के लिए एक मजबूत नींव का कालखंड रहा है, उस रूप में देखा जाएगा। इस विश्वास के साथ सदन के सामने मैं कुछ बातें स्पष्टता पूर्वक करने के लिए आया था और मैंने बहुत मन पर संयम रख करके उनके हर अपशब्दों पर हंसते हुए, अपने मन को खराब न करते हुए 140 करोड़ देशवासियों को उनके सपनों और संकल्पों को अपनी नजर के सामने रख करके मैं चल रहा हूं, मेरे मन में यही है। और मैं सदन के साथियों से आग्रह करूंगा, आप समय को पहचानिए, साथ मिल करके चलिए। इस देश में मणिपुर से गंभीर समस्या पहले भी आई हैं, लेकिन हमने मिलकर के रास्ते निकाले हैं, आओ मिल करके चलें, मणिपुर के लोगों को विश्वास दे करके चलें, राजनीति का खेल करने के लिए मणिपुर की भूमिका का कम से कम दुरूपयोग न करें। वहां जो हुआ है, वो दुःखपूर्ण है। लेकिन उस दर्द को समझ करके दर्द की दवाई बन करके काम करे यही हमारा रास्ता होना चाहिए। ▪

भारतीय जनता पार्टी, मध्य प्रदेश प्रदेश कार्यसमिति बैठक

राजनीतिक-प्रस्ताव

नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि तीसरी टर्म में भारत दुनिया की तीसरी आर्थिक महाशक्ति होगा उनका यह आत्मविश्वास हमारी प्रेरणा का कारण है। यह प्रदेश कार्यसमिति माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को आश्वस्त करती है कि उनके संकल्प-सिद्धि में अपनी भूमिका का पूर्ण निर्वहन करेगी।

भारतीय जनता पार्टी, मध्य प्रदेश की प्रदेश कार्यसमिति सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के लिए समर्पित केंद्र व राज्य की भाजपा सरकार तथा अपने नेतृत्व का अभिनंदन करती है। सांस्कृतिक व ऐतिहासिक कारणों से इतिहास के पन्नों में दर्ज ग्वालियर में हो रही यह विस्तृत कार्यसमिति की बैठक महत्त्वपूर्ण है। आज देश आजादी के 75 वर्ष पूरे कर अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत बदलाव के नित नए प्रतिमान गढ़ रहा है। गाँव, गरीब, किसान, महिला, युवा, दलित, पिछड़ा सभी इस बदलाव के भागीदार हैं। भाजपा सरकार अन्त्योदय के संकल्प को 'सबका साथ-सबका विकास' के मंत्र के साथ सही अर्थों में साकार कर रही है।

आज माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व व मार्गदर्शन में भाजपा की केंद्र एवं राज्य सरकारें, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों एवं पंडित दीन दयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन को अपनी नीतियों के केंद्र में रखते हुए 'प्रण अन्त्योदय', 'पथ अन्त्योदय' और 'पग अन्त्योदय' की दिशा में बढ़ रही हैं। केंद्र व राज्य के भाजपा नेतृत्व में मध्य प्रदेश भी देश की इस विकास यात्रा में एक अहम कड़ी बना है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार मध्य प्रदेश में 1.36 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से बाहर आये हैं। निःशुल्क राशन, पक्का मकान, पीने का पानी, आयुष्मान भारत में 5 लाख रू. का स्वास्थ्य बीमा, सस्ती दवाई, आसान पढ़ाई, महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण, अनुसूचित जाति और जनजाति के नागरिकों की सुरक्षा, समृद्धि और सम्मान देकर केंद्र व राज्य की भाजपा सरकारों ने डबल इंजन की भांति तेज गति से प्रदेश को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। अतएव यह प्रदेश कार्यसमिति माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान जी की सरकारों के प्रति साधुवाद अभिव्यक्त करती है।

गौरवशाली यशस्वी नेतृत्व

प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत दुनिया का नेतृत्व कर रहा है। कई विकसित और विकासशील देश भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। कई राष्ट्रों का नेतृत्व माननीय नरेंद्र मोदी जी में अपना मार्गदर्शक और नेतृत्वकर्ता पा रहा है। भाजपा मध्य प्रदेश की यह वृहद कार्य समिति गौरव महसूस करती है कि भाजपा के श्रेष्ठ नेता माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भारत को लगातार समृद्धशाली, वैभवशाली एवं समर्थ राष्ट्र के रूप में पूरे मान-सम्मान स्वाभिमान के साथ आगे ले जा रहे हैं। विगत माह में मोदी सरकार ने अपने 9 वर्ष पूरे किए तो समाज के विद्वतजनों ने कहा कि ये 9 वर्ष भारत के नवनिर्माण के, भारत के गरीब कल्याण के 9 वर्ष रहे हैं। दुनिया कह रही है कि 21वीं सदी भारत की सदी है। बीते 9 सालों में भारत ने 'पॉलिसी पैरालिसिस' से 'डिसाइसिव पॉलिसी' और अर्थव्यवस्था में फ्रेजाइल फाइव से टॉप फाइव की यात्रा की है।

माननीय नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि तीसरी टर्म में भारत दुनिया की तीसरी आर्थिक महाशक्ति होगा उनका यह आत्मविश्वास हमारी प्रेरणा का कारण है। यह प्रदेश कार्यसमिति माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को आश्वस्त करती है कि उनके संकल्प-सिद्धि में अपनी भूमिका का पूर्ण निर्वहन करेगी।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण की राजनीति को समाप्त करने का अभियान छेड़ा है, जो भारत के लोकतंत्र का परिष्कार करने वाला है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज देश में रिसाव मुक्त पारदर्शी शासन की स्थापना हुई है। बीते 9 सालों में भारत ने गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ी हैं। राजपथ अब कर्तव्य पथ है, रेस कोर्स रोड अब लोक कल्याण मार्ग है और प्रधानमंत्री, प्रधानसेवक के रूप में जनता जनार्दन की सेवा कर रहे हैं। धारा 370 धाराशायी हुई, ट्रिपल तलाक की कुप्रथा खत्म हुई और आतंकवाद पर सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक हुई है। अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि पर प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण भी तेज गति से चल रहा है। आज का भारत विरासत के साथ विकास करने वाला भारत है। आज भारत के विकास में गति भी है, शक्ति भी है, सुरक्षा भी है और संयम भी यह नया भारत है, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सपनों का भारत है, मिशन इंडिया के तहत आगे बढ़ता हुआ भारत है।

गरीब कल्याण हमारा लक्ष्य

प्रदेश की यह कार्यसमिति अपनी केंद्र व राज्य सरकारों के इन कार्यों के प्रति गौरव-बोध रखती है कि देश में सबसे अधिक 3.61 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत कार्ड मध्य प्रदेश में वितरित कर दिये हैं, जिसमें 29.50 लाख लोगों को निःशुल्क उपचार हो चुका है। जो परिवार इनकम टैक्स नहीं देते या अन्य किसी माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ नहीं लेते, उन सभी परिवारों को आयुष्मान योजना के अंतर्गत सम्मिलित किया जाएगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों को मिलाकर लगभग 41 लाख गरीब परिवारों को पक्का घर मिला। गरीब कल्याण अन्न योजना से 5.18 करोड़ लोगों को कोरोना काल से सतत् निःशुल्क राशन मिल रहा है। जल जीवन मिशन में 61 लाख 26 हजार से अधिक घरों में पीने का पानी पहुँचाया तथा 51 प्रतिशत से अधिक लक्षित ग्रामीण आबादी को सौगात मिल चुकी है। स्वच्छ भारत अभियान में 71 लाख से अधिक घरों में शौचालय का निर्माण हुआ। मुख्यमंत्री कन्या विवाह निकाह, कल्याणी विवाह, निःशक्तजन विवाह योजनाओं से मिला 6.25 लाख से अधिक बेटियों को प्रति व्यक्ति 55 हजार रू. का लाभ

मिला। मुख्यमंत्री आवासीय भू-अधिकार योजना एवं नगरीय अधिकार योजना के अंतर्गत अब तक शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 1 लाख 24 हजार से अधिक भू-खंड के पट्टे वितरित किए गए। गरीबों के लिए वरदान बनी संबल अब तक 4 लाख 80 हजार से अधिक हितग्राहियों को वितरित किए गए 4 हजार 300 करोड़ रूपए से अधिक के हितलाभ संबल-2 योजना में 17 लाख से अधिक पात्र हितग्राहियों को जोड़ा गया।

पीएम स्वनिधि योजना एवं मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्रेता योजना के माध्यम से 11 लाख से अधिक छोटे व्यवसायियों को 10 हजार से लेकर 50 हजार रूपए तक के ब्याज मुक्त ऋण दिए गए तथा वृद्धों, निराश्रितों, दिव्यांगों आदि को प्रतिवर्ष 3600 करोड़ रूपए की सामाजिक सुरक्षा पेंशन दी गई। भू-माफियाओं के कब्जे से छुड़ाई गई 23 हजार एकड़ भूमि पर गरीबों के लिए सुराज कॉलोनियां बनाई जा रही हैं। गरीबों के जीवनस्तर को ऊपर उठाने वाली इन पहलों के लिए यह प्रदेश कार्यसमिति माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्र-निर्माण व गरीब कल्याण के संकल्प को लेकर बढ़ रहीं केंद्र व राज्य सरकारों के प्रति साधुवाद ज्ञापित करती है।

नारी समृद्धि और नारी सम्मान हमारा अभिमान

देश एवं दुनिया की महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में मध्य प्रदेश ने लगातार कीर्तिमान स्थापित किया है। आज लाड़ली बहना योजना से 1.25 करोड़ से अधिक महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 रूपए मिल रहे हैं। लाड़ली लक्ष्मी योजना से लगभग 46 लाख लखपति बेटियां और 13 लाख से अधिक बेटियों को स्कॉलरशिप, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना अंतर्गत 82.2 लाख महिलाओं को रसोई के काले धुएँ से मिला छुटकारा, जन धन योजना से 3.7 करोड़ महिलाओं को मिले उनके खुद के बैंक खाते, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना से 44 लाख से अधिक माताओं को 1600 करोड़ रूपए की आर्थिक मदद देकर हम अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं।

जमीन या मकान की रजिस्ट्री घर की महिला सदस्य के नाम कराने पर पंजीयन शुल्क 3 प्रतिशत से घटाकर 1 प्रतिशत पर किया। लगभग 45 प्रतिशत संपत्ति महिलाओं के नाम पर खरीदी जा रही है। इन योजनाओं के कारण मध्य प्रदेश में लिंगानुपात लगातार ठीक हो रहा है, जहां मध्य प्रदेश में 2002 में लिंगानुपात 911 था, वहीं आज 970 प्रति हजार हो गया है। प्रदेश की यह कार्यसमिति, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में नारी सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध भाव से जुटी मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान नीत भाजपा सरकार को साधुवाद ज्ञापित करती है।

किसान कल्याण के लिए समर्पित भाजपा सरकार

पिछले 3 वर्षों में किसानों के खातों में 2 लाख 70 हजार करोड़ रूपए से अधिक की राशि सीधे उनके खाते में भेजी गई। शून्य ब्याज दर पर किसानों को दिए गए लगभग 50 हजार करोड़ रूपए के फसल ऋण और मुख्यमंत्री कृषक ऋण माफी योजना ने किसानों के सर से ब्याज माफ किया। प्रदेश में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 2003 में 3 प्रतिशत से बढ़कर 2021 में 18.89 प्रतिशत हुई। फसल बीमा योजना के अंतर्गत किसानों के 01 करोड़ 43 लाख से अधिक दावों के विरूद्ध पिछले 3 वर्षों में 20 हजार करोड़ रूपए से अधिक का भुगतान किया गया। प्रधानमंत्री सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना को मिलाकर किसानों को प्रति वर्ष 10 हजार रूपए सहायता निधि के रूप में लगभग 25 हजार करोड़ रूपए की सहायता 3 वर्षों में भेजी गई। मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के अंतर्गत वार्षिक सहायता राशि 4 हजार रुपए से बढ़ाकर 6 हजार रुपए की गई। हमें मध्य प्रदेश के नागरिक होने के नाते यह गौरव होता है कि हमनें अनाज निर्यात करने की स्थिति भी प्राप्त कर ली है। इसके लिए यह प्रदेश कार्यसमिति अपनी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी की सरकारों का आभार व्यक्त करती है।

जनजाति कल्याण से प्रदेश कल्याण

प्रदेश के 1 करोड़ से अधिक जनजाति समुदाय के लोग पेसा नियमों से लाभान्वित हो रहे हैं। टंटया मामा आर्थिक कल्याण योजना से 5 लाख महिला उद्यमियों को 500 करोड़ रूपए की आर्थिक सहायता उनके जीवन में समृद्धि का कारण बन रही है। 70 एकलव्य स्कूलों से जनजातीय समुदाय के 24.4 हजार छात्रों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित की। प्रदेश कार्यसमिति भाजपा की केन्द्र एवं प्रदेश सरकार के प्रति आभार व्यक्त करती है।

जनजातीय नायकों को सम्मान देने हेतु भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम राजा शंकर शाह के नाम पर हबीबगंज रेलवे स्टेशन रानी कमलापति के नाम पर, पातालपानी स्टेशन का नाम जननायक टंट्या भील के नाम पर और प्रदेश के मेडिकल कॉलेजों का नाम भगवान बिरसा मुंडा और राजा हृदय शाह के नाम पर किया गया।

आहार अनुदान योजना से बैगा, सहरिया और भारिया महिलाओं को प्रतिवर्ष लगभग 300 करोड़ रु. की धनराशि प्रदान की गई। वनाधिकार कानून के अंतर्गत लगभग 3 लाख पात्र जनजातीय भाई-बहनों को आवासीय पट्टा का अधिकार मिला एवं लगभग 35 हजार निरस्त दावों को पुनः मान्य किया गया। मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना के अंतर्गत लगभग 8 हजार जनजातीय विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए 23 करोड़ रूपए से अधिक की फीस की प्रतिपूर्ति की गई। यह कार्यसमिति मा. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी के सद्प्रयासों और समाज की सहभागिता के साथ उनकी सरकार की पहल की सराहना करती है।

उत्तम शिक्षा, उन्नत भविष्य

भारतीय जनता पार्टी की यह वृहद कार्यसमिति मध्य प्रदेश भाजपा सरकार को धन्यवाद ज्ञापित करती है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश, देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हुआ है। स्थान-स्थान पर 6300 करोड़ रुपए से सर्वसुविधायुक्त सीएम राइज स्कूल बनाएं जा रहे हैं। अब तक 370 विद्यालय प्रारम्भ किए जा चुके हैं। वहीं दूसरी ओर इस सत्र से 6 इंजीनियरिंग, 6 पॉलिटेक्नीक कॉलेजों और भोपाल के गांधी मेडिकल कॉलेज में हिन्दी भाषा में पढ़ाई प्रारंभ कर देश में अपने किस्म की ऐतिहासिक पहल की गई है। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में गीता-सार, रामायण, रामचरितमानस और महाभारत जैसे पवित्र धार्मिक ग्रंथों के प्रसंगों को भी पढ़ाया जाएगा। शिक्षा बजट जो 2003 में 2456 करोड़ था, वह बढ़कर 2023-24 में 38,375 करोड़ हो गया है। मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना के अंतर्गत - 3 लाख 86 हजार से अधिक विद्यार्थियों की लगभग 1270 करोड़ रुपए से अधिक की फीस प्रतिपूर्ति की गई है। मुख्यमंत्री प्रतिभा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 3 लाख 20 हजार से अधिक विद्यार्थियों को लैपटॉप क्रय हेतु 855 करोड़ रूपए से अधिक की राशि प्रदान की गई। शिक्षा क्षेत्र में बदलाव लाने वाले इन प्रयासों के लिए यह कार्यसमिति प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में गतिशील मध्य प्रदेश सरकार का अभिनंदन करती है।

स्वरोजगार को समर्थन

मुख्यमंत्री - सीखो कमाओ योजना से युवाओं

को कौशल और प्रशिक्षण के साथ-साथ 8 से 10 हजार रूपये देने वाला मध्यप्रदेश पहला राज्य बना। बीते 3 वर्षों में स्कूल शिक्षकों की 40 हजार से अधिक नई भर्तियां की गईं। विगत 1 वर्ष में 55 हजार से अधिक सरकारी पदों पर भर्ती कर नियुक्ति दे दी गई है।

हर माह 3 लाख से अधिक लोगों को 1450 करोड़ रूपये से अधिक के ऋण वितरित कर स्वरोजगार से जोड़ा जा रहा है। पिछले 3 वर्षों में केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न स्व-रोजगार योजनाओं में 1 करोड़ 9 लाख से अधिक हितग्राहियों को 67 हजार करोड़ रुपए से अधिक की स्व-रोजगार सहायता दी गई है। जिला एवं विकासखंड स्तर पर रोजगार मेलों का आयोजन कर प्रतिवर्ष औसतन 80 हजार युवाओं को निजी क्षेत्र में नौकरी के अवसर प्रदान करने में सहयोग किया गया। भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन की सरकार ने आकांक्षी युवाओं को उनका पूरा आकाश उन्हें सौंपनें के लिए अवसर देने का कार्य किया। मध्य प्रदेश में उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा के साथ ही अब स्टार्ट-अप और स्टैण्डअप में युवाओं की उपलब्धि मध्य प्रदेश का भविष्य उज्ज्वल होने की घोषणा करती है। युवाओं को सशक्त बनाने वाली इन पहलों के लिए यह प्रदेश कार्यसमिति, केंद्र एवं प्रदेश सरकार को साधुवाद देती है।

उद्योग और अर्थव्यवस्था को दी गति

मध्यप्रदेश का सकल घरेलू उत्पाद वर्ष 2001 के 71 हजार 594 करोड़ रुपये से बढ़कर 13 लाख 22 हजार 821 करोड़ रुपये हुआ। राज्य की प्रति व्यक्ति आय 11 हजार 718 से बढ़कर 1 लाख 40 हजार 583 रुपये हुई। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में मध्यप्रदेश का योगदान 3.6 प्रतिशत से बढ़कर 4.8 प्रतिशत हुआ। निवेश को बढ़ावा देते हुए 4 इन्वेस्टमेंट कॉरिडोर का निर्माण भोपाल-इंदौर, भोपाल - बीना-जबलपुर-कटनी-सतना-सिंगरौली और मुरैना-ग्वालियर-शिवपुरी-गुना में चल रहा है। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 15 लाख 42 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इससे प्रदेश में 29 लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होंगे। नई स्टार्टअप नीति-2022 लागू होने से प्रदेश में लगभग 3 हजार 200 से अधिक स्टार्टअप तथा 80 से अधिक इन्क्यूबेशन सेंटर्स स्थापित हुए। सरकार ने औद्योगिक लाइसेंस प्रणाली में सुधार कर इसकी सीमा 10 वर्ष तक बढ़ाकर उद्योग को सुविधा उपलब्ध कराई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की मंशा अनुसार लोग नौकरी मांगने के बजाय स्वयं नौकरी देने वाले बनें, इस हेतु महत्वपूर्ण बदलाव कर व्यापार उद्योग हेतु विशेष योजना और आर्थिक पैकेज घोषित किए गए। शासकीय योजनाओं द्वारा जनता को आर्थिक लाभ दिए जाने से जनता की क्रय शक्ति बढ़ गई, जो छोटे-बड़े व्यापार को बढ़ाने में भी सहायक हुई।

संस्कृति को दिया स्थान, प्रदेश का बढ़ाया मान

प्रदेश में भव्य महाकाल लोक और उसी के तर्ज पर 9 और सांस्कृतिक लोकों जिसमें ओरछा में राम राजा लोक चित्रकूट में वनवासी रामलोक, सलकनपुर में देवी महालोक, महेश्वर में अहिल्या लोक, जानापाव में परशुराम लोक, दतिया में पीतांबरा माई महालोक, जामसावली में हनुमान लोक, भोपाल में महाराणा प्रताप लोक, पन्ना में जुगल किशोर सरकार लोक का विकास किया जा रहा है। ओंकारेश्वर में 2 हजार 200 करोड़ रूपए की लागत से एकात्म धाम का निर्माण किया जा रहा है। 2021 में राज्य में 4 लाख विदेशी पर्यटक और 22.5 करोड़ घरेलू पर्यटकों का आगमन दर्ज किया गया। प्रदेश के 18 शहरों को पवित्र नगरों का दर्जा दिया गया।

संत रविदास सामाजिक समरसता यात्रा

राष्ट्र-निर्माण में सांस्कृतिक उत्थान की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः माननीय प्रधानमंत्री जी की मंशानुरूप, माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा 8 फरवरी, 2023 को सागर में आयोजित संत रविदास महाकुंभ में सागर के पास बड़तूमा में 100 करोड़ से अधिक की लागत से संत शिरोमणि सद्‌गुरु रविदास जी का विशाल और भव्य मंदिर बनाने की घोषणा की गयी।

इसी निर्माण के व्यापक उद्देश्य से प्रदेश भर में संत रविदास सामाजिक समरसता यात्राएं 5 स्थानों से 25 जुलाई से प्रारंभ होकर प्रदेश के हर गांव से मिट्टी, सभी विकासखंडों की 313 नदियों के जल का संग्रहण कर जनजागरण करते हुए सागर पहुंची। 12 अगस्त 2023 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा इस विशाल व भव्य मंदिर की आधारशिला रखी गई और भूमिपूजन किया गया। प्रधामनंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान नीत भाजपा सरकार लगातार सांस्कृतिक प्रादुर्भाव हेतु पूरी निष्ठा से जुटी हुई है। यह प्रदेश कार्यसमिति अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता पर बढ़ने के लिए केंद्र एवं प्रदेश की भाजपा सरकारों को साधुवाद ज्ञापित करती है।

आधारभूत संरचना दे रही है विकास को रफ्तार

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्र-निर्माण की दिशा में भाजपा की केंद्र व राज्य सरकारें प्रदेश के आधारभूत ढाँचे को विकसित बनाने पर पूरी प्रतिबद्धता के साथ ध्यान दिया जा रहा है। प्रदेश में वर्ष 2001-02 में सड़कों की लंबाई मात्र 44 हजार किमी के लगभग थी, जो कि आज बढ़कर 5 लाख किमी से अधिक हो गई है (ग्रामीण सड़कों को शामिल करते हुए)। ऊर्जा उत्पादन 2003 में 5,173 मेगावाट से 5 गुना से अधिक बढ़कर 2023 में 28,000 मेगावाट हुआ है। रेल सफर और गतिशील हुआ, एवं 3 नई वन्दे भारत ट्रेनों की सौगात प्रदेश को मिली। प्रदेश की सिंचाई क्षमता 7 लाख 68 हजार हेक्टेयर से बढ़कर 45 लाख हेक्टेयर से अधिक हुई। विश्व का सबसे बड़ा फ्लोटिंग सोलर पॉवर प्लांट प्रदेश के ओंकारेश्वर में विकसित हो रहा है तथा एशिया का सबसे बड़ा 750 मेगावॉट सोलर पॉवर प्लांट रीवा में प्रारंभ हुआ। अटल प्रगति पथ, नर्मदा प्रगति पथ, विंध्य प्रगति पथ, मालवा विकास पथ, मध्य पथ और बुंदेलखंड विकास पथ के निर्माण से प्रदेश की तकदीर और तस्वीर बदलेगी। 44 हजार 600 करोड़ रूपए से अधिक लागत की केन-बेतवा सिंचाई परियोजना का कार्य प्रारंभ हुआ।

हर जन की स्वास्थ्य सेवा भाजपा की प्रतिबद्धता

2003 में 7,500 डॉक्टरों की संख्या से अब डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ की संख्या प्रदेश में 51 हजार से अधिक हो गई है। स्वास्थ्य अवसंरचना सुदृढ़ करते हुए 2003 से अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या 21,234 हजार से दोगुना बढ़कर 42 हजार से अधिक हुई, साथ ही आईसीयू में भी बिस्तर की संख्या 277 से 2,085 हुई। प्रदेश में 2003 में 5 मेडिकल कॉलेज से बढ़कर 2023 में 25 हुए और एम.बी.बी.एस सीटें बढ़कर 4 हजार 600 से अधिक हुईं। स्वास्थ्य सेवाएँ सुनिश्चित करने के लिए 11 हजार से अधिक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर प्रारंभ हुए। मध्यप्रदेश में बाल मृत्यु दर 2004-05 में 70 प्रति हजार से घटकर 2021 में 41.3 प्रति हजार तो वहीं मातृ मृत्यु दर 2003 में 498 प्रति वर्ष से घटकर 2022 में 173 प्रति वर्ष हो गई है । 132 प्रकार की जांचे निशुल्क उपलब्ध है, जिसका प्रतिदिन लगभग 10 हजार मरीज लाभ उठा रहे हैं। यह प्रदेश कार्यसमिति इसके लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

जी का अभिनन्दन करती है।

सुशासन से सुराज

लोक सेवा गारंटी कानून के अंतर्गत 600 से अधिक सेवाओं के लिए 8.90 करोड़ से अधिक आवेदन निराकृत किए गए। सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज 2.20 करोड़ से अधिक शिकायतों का निराकरण किया गया। स्वच्छ सर्वेक्षण में इंदौर को 6वीं बार लगातार देश में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

3800 करोड़ रूपए से अधिक के 40 हजार 700 से अधिक कार्यों का लोकार्पण तथा 6500 करोड़ रूपए से अधिक के 30 हजार 500 से अधिक कार्यों का भूमिपूजन हुआ। यह प्रदेश कार्यसमिति प्रदेश के सुशासन और विकास के प्रति इस अटल प्रतिबद्धता हेतु प्रदेश भाजपा सरकार को साधुवाद देती है।

कर्मचारी कल्याण के लिए प्रतिबद्ध सरकार

राज्य के कर्मचारियों को केंद्र के समान 42 प्रतिशत महंगाई भत्ता देने की घोषणा की गई है। विभिन्न क्षेत्रों में नियमित शासकीय सेवकों के समान लाभ दिए जाने की घोषणा से एक बड़ी सौगात संविदा में लगे कर्मचारियों को दी है। रोजगार सहायकों का मानदेय 9 हजार मासिक से बढ़ाकर 18 हजार मासिक किया गया। पंचायत सचिवों को 7वां वेतनमान और नियमित कर्मचारियों की भांति अन्य सुविधाएं, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय 10 हजार से बढ़ाकर 13 हजार रुपए, मिनी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय 5 हजार 750 रुपए से बढ़ाकर 6 हजार 500 रुपए, महिला कर्मचारियों को वर्ष में 7 दिवस का अतिरिक्त अवकाश एवं विवाहिता पुत्री एवं ट्रांसजेंडर संतान को भी अनुकंपा नियुक्ति देने का प्रावधान किया गया। आशा-ऊषा कार्यकर्ताओं को 6 हजार मानदेय, 62 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्ति और रिटायरमेंट पर एक लाख रू. की सौगात देकर सेवाभावी बहनों के प्रति भाजपा सरकार ने अपना कर्तव्य निभाया है।

षड्यंत्रकारी शक्तियों के विरूद्ध सख्त सरकार

धर्म स्वतंत्रता कानून, लव जिहाद के विरूद्ध कानून सख्ती से क्रियान्वित किये जा रहे हैं। इस संबंध में केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय अमित शाह जी के द्वारा बनाया जा रहा कानून भी बहुत प्रभावी होगा।

प्रदेश की यह कार्यसमिति माननीय अमित शाह जी को इस पहल पर धन्यवाद ज्ञापित करती है। बाबा महाकाल की सवारी पर थूकने वालों को तत्काल धरपकड़ किया गया और सख्त कार्यवाही की गयी। उनके अतिक्रमित मकानों पर बुल्डोजर भी चलाया गया । यह प्रदेश कार्यसमिति कानून-व्यवस्था के प्रति इस प्रतिबद्धता के लिए सरकार की सराहना करती है।

प्रदेश की दस सामाजिक क्रांतियां

मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान जी ने स्वतंत्रता दिवस - 15 अगस्त के अवसर पर दस सामाजिक क्रांतियां मध्य प्रदेश के संदर्भ में बताई, यह मात्र उद्घोषणा नहीं बल्कि उपलब्धियों की अभिव्यक्ति है।

- पहली सामाजिक क्रांति है
  - भूमि और आवास
- दूसरी सामाजिक क्रांति है
  - महिला सशक्तिकरण
- तीसरी सामाजिक क्रांति है
  - किसानों के कल्याण की क्रांति
- चौथी सामाजिक क्रांति है
  - कमजोर वर्ग के कल्याण की क्रांति
- पांचवी सामाजिक क्रांति है
  - कौशल और रोजगार
- छठवीं सामाजिक क्रांति ह
  - गरीब कल्याण की क्रांति
- सातवीं सामाजिक क्रांति है
  - शिक्षा की क्रांति
- आठवीं सामाजिक क्रांति ह
  - सबके लिए स्वास्थ्य की क्रांति
- नौवीं सामाजिक क्रांति है
  - सांस्कृतिक अभ्युदय की क्रांति
- दसवीं सामाजिक क्रांति है
  - सुशासन की क्रांति

मेरा बूथ- सबसे मजबूत

भाजपा की यह प्रदेश कार्यसमिति पूरे आत्मविश्वास के साथ यह उद्घोषित करती है कि भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश के 64 हजार 523 बूथों पर कार्यकर्ता भाजपा की ध्वज-पताका लेकर आगे बढ़ रहे हैं। यह भी मध्य प्रदेश इकाई के लिए गौरव का विषय है कि हमारे संगठन का डिजिटलीकरण हुआ है, जो कि देश में अग्रणी उदाहरण बना है। बूथ समिति, पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति का गठन हो, इनका डिजिटलीकरण हो, यह लक्ष्य लेकर माननीय प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने बूथ विस्तारक अभियान को गतिमान बनाया। यह कार्यसमिति माननीय प्रदेश अध्यक्ष जी के प्रति धन्यवाद करती है।

मेरा बूथ- सबसे मजबूत कार्यक्रम को संबोधित करने मध्य प्रदेश पधारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भाजपा संगठन में मध्य प्रदेश के कार्यकर्ताओं के योगदान की जो भूरि-भूरि प्रशंसा की थी, उसके लिए यह कार्यसमिति माननीय प्रधानमंत्री जी का आभार व्यक्त करती है और आश्वस्त करती है कि आगामी विधानसभा चुनाव और लोकसभा चुनाव में हर बूथ विजय के संकल्प को सिद्ध करने में अपना पूर्ण समर्पण देगा ।

नीति, नीयत और नेतृत्व से हीन कांग्रेस

मध्य प्रदेश 1993 से 2003 के दस वर्ष के कुशासन काल को भूल नहीं सकता, क्योंकि यह कांग्रेस की दिशाहीन नीति, लचर नेतृत्व और संदिग्ध नीयत का प्रत्यक्ष उदाहरण रहा है। गरीब हितैषी होने का दावा करने वाली कांग्रेस ने अपने शासन में देश के गरीबों-पिछड़ों को अपने वोट बैंक की तरह इस्तेमाल कर उनके साथ केवल छल करने का काम किया है। परिवारवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार यही कांग्रेस शासन का आधार रहे हैं। वर्तमान कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी रणदीप सुरजेवाला ने भाजपा को वोट देने वाले मतदाताओं को राक्षसी प्रवृत्ति का बताना कांग्रेस के चरित्र में निहित अहंकार को ही उजागर करता है। इतना ही नहीं, सुरजेवाला का वह भाषण, जिसमें वह देश की बेटियों को गाली देकर अपमान कर रहे हैं, घोर आपत्तिजनक है। वास्तव में, कांग्रेस गरीब, पिछड़े, किसान, महिला आदि सभी की विरोधी है और व्यापक अर्थों में उसका चरित्र ही भारत विरोधी है। भाजपा की प्रदेश कार्यसमिति यह संकल्प लेती है कि हम आगामी चुनाव में कांग्रेस के वास्तविक चरित्र को जनता के समक्ष पूरी प्रतिबद्धता के साथ लेकर जायेंगे । जनता को आगाह करेंगे और कांग्रेस के वास्तविक चरित्र की याद दिलायेंगे।

हमारा विजय संकल्प

भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश की यह वृहद प्रदेश कार्यसमिति केंद्र और राज्य में अपने गौरवशाली नेतृत्व के आत्मविश्वास से भरी हुई है। हमारे पास डबल इंजन की सरकारों की गौरवपूर्ण उपलब्धियां हैं। सरकारों की जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों का स्नेह है। जनता का आशीर्वाद साथ है। उत्साहपूर्ण वातावरण में संगठन के लक्ष्य, चुनाव में पूर्ण विजय का संकल्प लेकर आगे बढ़ रही है। हम सामूहिक रूप से यह संकल्प करते हैं कि भाजपा की सेवाभावी, विकासपरक, प्रभावी और पूर्ण बहुमत की कल्याणकारी सरकार पुनः बनाएंगे।

!! जय हिन्द...... भारत माता की जय..... वंदे मातरम् !! ▪

प्रदेश कार्यसमिति बैठक को मुख्यमंत्री, प्रदेश प्रभारी, प्रदेश अध्यक्ष ने संबोधित किया

विजय संकल्प लेकर निकलें कार्यकर्ता - शिवराज सिंह चौहान

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जो संकल्प लिया था, वह सारे संकल्प और स्वप्न प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों पूरे हो रहे हैं।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और पं. दीनदयाल जी ने राष्ट्र को आगे ले जाने के लिए जो स्वप्न देखा था और भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जो संकल्प लिया था, वह सारे संकल्प और स्वप्न प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के हाथों पूरे हो रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी केवल भारत के ही नेता नहीं बल्कि विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। उनके नेतृत्व में हम मध्यप्रदेश को आगे ले जा रहे हैं। 2003 के पहले चंबल के बीहड़ों में डकैत रहते थे। भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते ही एक साल के भीतर डाकुओं का सफाया किया और नक्सलवाद की कमर तोड़ी। कांग्रेस के समय प्रदेश में सिमी का नेटवर्क था, जिसे ध्वस्त करने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया है। गरीब कल्याण हमारा संकल्प है, इस संकल्प पर हमारी सरकार चल रही है, कांग्रेस ने कभी गरीबों के घर नहीं बनाए, यह भाजपा की सरकार है, जिसने गरीबों को पक्के मकान दिए, पेसा एक्ट लागू करने का काम भी भाजपा ने किया। हमने समाज के हर वर्ग का कल्याण किया है।

प्रदेश में जब सवा साल कांग्रेस की सरकार रही, तो उन्होंने जनकल्याण की सारी योजनाएं बंद कर दी थी, भाजपा कार्यकर्ताओं पर झूठे मुकदमे दर्ज कर उन्हें प्रताड़ित किया, यहां तक की घरों पर बुलडोजर चलवा दिये, जबकि हमने माफियाओं और गुंडों के घरों पर बुलडोजर चलाकर 23 हजार एकड़ जमीन खाली करवाई, जहां गरीबों के मकान बन रहे हैं। प्रधानमंत्री के रूप में हमें फिर से मोदी जी को लाना है, तो इसके लिए 2023 में मध्यप्रदेश में भाजपा की सरकार बनाना है, डबल इंजन की सरकार होगी तो हम दुगनी ताकत के साथ आगे बढ़ेंगे।

51 प्रतिशत वोट लाना हैं - मुरलीधर राव

मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी के पास श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे, राजमाता जी, प्यारेलाल खंडेलवाल जैसे संगठन मनीषियों का आशीर्वाद हैं। कार्यकर्ता को चुनाव का अनुभव है। गत तीन वर्ष में पार्टी ने जो काम किए हैं उसे आगे बढ़ाते हुए हमने बूथ को मजबूत किया है। विस्तारक अभियान और विजय संकल्प अभियान के माध्यम से बूथ सशक्त है।

लाभार्थियों के साथ संवाद और संपर्क के साथ अन्य कार्यक्रम होंगे। हमें बूथ लेवल पर माइक्रो मैनेजमेंट कर और प्लानिंग के साथ काम करना है। पिछली बार हमें विधानसभा और लोकसभा में 40 प्रतिशत वोट मिले थे, हमें हर विधानसभा में 10 प्रतिशत वोट बढ़ाते हुए 51 प्रतिशत तक ले जाना है, इस वोट वृद्धि से हमारी जीत सुनिश्चित हो जाएगी।

ऐतिहासिक जीत का इतिहास बनाएंगे - विष्णुदत्त शर्मा

एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंत्योदय के विचार को यहां पर संपादित किया था और अटल जी और राजमाता जी की कर्मभूमि ग्वालियर की धरती है। सब कार्यकर्ताओं ने श्री अमित शाह जी के समक्ष प्रदेश संगठन को और मजबूत बनाने संकल्प लिया है। 2023 विधानसभा चुनाव और 2024 लोकसभा चुनाव मोदी जी के नेतृत्व में होने जा रहा है। सभी को कार्यसमिति में जो मार्गदर्शन मिला, उससे हम संकल्प लेकर प्रत्येक बूथ पर जाएंगे ओर प्रत्येक बूथ को मजूबत करने का संकल्प लेंगे। हम सभी श्री अमित शाह जी को कार्यसमिति बैठक में आश्वस्त करते है कि उनके मार्गदर्शन में प्रदेश में केवल चुनाव नहीं जीतना बल्कि प्रत्येक बूथ पर 51 प्रतिशत वोट का संकल्प लेकर आगे बढ़ना है और आगामी 2023 चुनाव में ऐतिहासिक बहुमत के साथ जीत का इतिहास बनाएंगे। प्रदेश के एक-एक कार्यकर्ता सभी बूथों पर संकल्प को सिद्धि की ओर ले जाने का काम करें।

श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में सदस्यता अभियान का शुभारंभ हुआ है। ''मध्यप्रदेश के मन में मोदी और मोदी के मन में मध्यप्रदेश'' इस संकल्प को लेकर प्रत्येक कार्यकर्ता एक-एक बूथ पर जाएं और प्रत्येक बूथ पर चुनाव जीतकर इतिहास बनाएं। ▪

सागर, मध्य प्रदेश में विकासात्मक परियोजनाओं के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री

रविदास जी की शिक्षाएं एकजुट करती रहेंगी

प्रेरणा और प्रगति, जब एक साथ जुड़ते हैं तो एक नए युग की नींव पड़ती है। हमारा देश, हमारा एमपी इसी ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है।

संत रविदास स्मारक और संग्रहालय की ये नींव एक ऐसे समय में पड़ी है, जब देश ने अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं।

सागर की धरती, संतों का सानिध्य, संत रविदास जी का आशीर्वाद, और समाज के हर वर्ग से, हर कोने से सागर में समरसता का महासागर उमड़ा हुआ है। देश की इसी साझी संस्कृति को और समृद्ध करने के लिए संत रविदास स्मारक एवं कला संग्रहालय की नींव पड़ी है। संत रविदास स्मारक एवं संग्रहालय में भव्यता भी होगी, और दिव्यता भी होगी। ये दिव्यता रविदास जी की उन शिक्षाओं से आएगी जिन्हें इस स्मारक की नींव में जोड़ा गया है, गढ़ा गया है। समरसता की भावना से ओतप्रोत 20 हजार से ज्यादा गांवों की, 300 से ज्यादा नदियों की मिट्टी आज इस स्मारक का हिस्सा बनी है। एक मुट्ठी मिट्टी के साथ-साथ एमपी के लाखों परिवारों ने समरसता भोज के लिए एक-एक मुट्ठी अनाज भी भेजा है। इसके लिए जो 5 समरसता यात्राएं चल रही थीं, उनका भी सागर की धरती पर समागम हुआ है। और मैं मानता हूँ कि ये समरसता यात्राएं यहाँ खत्म नहीं हुई हैं, बल्कि, यहाँ से सामाजिक समरसता के एक नए युग की शुरूआत हुई है।

प्रेरणा और प्रगति, जब एक साथ जुड़ते हैं तो एक नए युग की नींव पड़ती है। हमारा देश, हमारा एमपी इसी ताकत के साथ आगे बढ़ रहा है।

संत रविदास स्मारक और संग्रहालय की ये नींव एक ऐसे समय में पड़ी है, जब देश ने अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं। अब अगले 25 वर्षों का अमृतकाल हमारे सामने है। अमृतकाल में हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपनी विरासत को भी आगे बढ़ाएँ, और अतीत से सबक भी लें। एक राष्ट्र के रूप में हमने हजारों वर्षों की यात्रा की है। इतने लंबे कालखंड में समाज में कुछ बुराइयाँ आना भी स्वभाविक है। ये भारतीय समाज की ही शक्ति है कि इन बुराइयों को दूर करने वाला समय-समय पर कोई महापुरूष, कोई संत, कोई औलिया इसी समाज से निकलता रहा है। रविदास जी ऐसे ही महान संत थे। उन्होंने उस कालखंड में जन्म लिया था, जब देश पर मुगलों का शासन था। समाज, अस्थिरता,

उत्पीड़न और अत्याचार से जूझ रहा था। उस समय भी रविदास जी समाज को जागृत कर रहे थे, समाज को जगा रहे थे, वो उसे उसकी बुराइयों से लड़ना सीखा रहे थे। संत रविदास जी ने कहा था-

जात पांत के फेर महि,
उरझि रहई सब लोग।
मानुष्ता कुं खात हई,
रैदास जात कर रोग॥

अर्थात्, सब लोग जात-पात के फेर में उलझे हैं, और ये बीमारी मानवता को खा रही है। वो एक तरफ सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ बोल रहे थे, तो दूसरी तरफ देश की आत्मा को झकझोर रहे थे। जब हमारी आस्थाओं पर हमले हो रहे थे, हमारी पहचान मिटाने के लिए हम पर पाबन्दियाँ लगाई जा रहीं थीं, तब रविदास जी ने कहा था, उस समय मुगलों के कालखंड में, ये हिम्मत देखिए, ये राष्ट्रभक्ति देखिए, रविदास जी ने कहा था- **पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत। रैदास पराधीन सौ, कौन करेहे प्रीत।।**

यानी, पराधीनता सबसे बड़ा पाप है। जो पराधीनता को स्वीकार कर लेता है, उसके खिलाफ जो लड़ता नहीं है, उससे कोई प्रेम नहीं करता। एक तरह से उन्होंने समाज को अत्याचार के खिलाफ लड़ने का हौसला दिया था। इसी भावना को लेकर छत्रपति वीर शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज्य की नींव रखी थी। यही भावना आजादी की लड़ाई में लाखों लाख स्वाधीनता सेनानियों के दिलों में थी। और, इसी भावना को लेकर आज देश गुलामी की मानसिकता से मुक्ति के संकल्प पर आगे बढ़ रहा है। रैदास जी ने अपने एक दोहे में कहा है -

ऐसा चाहूं राज मैं,
जहां मिलै सबन को अन्न।
छोट-बड़ों सब सम बसै,
रैदास रहै प्रसन्न॥

यानी, समाज ऐसा होना चाहिए, जिसमें कोई भी भूखा न रहे, छोटा-बड़ा, इससे ऊपर उठकर सब लोग मिलकर साथ रहें। आज आजादी के अमृतकाल में हम देश को गरीबी और भूख से मुक्त करने के लिए प्रयास कर रहे हैं। आपने देखा है, कोरोना की इतनी बड़ी महामारी आई। पूरी दुनिया की व्यवस्थाएं चरमरा गई, ठप्प पड़ गई। भारत के गरीब तबके के लिए, दलित-आदिवासी के लिए हर कोई आशंका जता रहा था। कहा जा रहा था कि सौ साल बाद इतनी बड़ी आपदा आई है, समाज का ये तबका कैसे रह पाएगा। लेकिन, तब मैंने ये तय किया कि चाहे जो हो जाए, मैं मेरे गरीब भाई-बहन को खाली पेट सोने नहीं दूँगा। दोस्तों मैं भली-भांति जानता हूं कि भूखे रहने की तकलीफ क्या होती है। मैं जानता हूं कि गरीब का स्वाभिमान क्या होता है। मैं तो आपके ही परिवार का सदस्य हूं, आपका सुख-दुख समझना मुझे किताबें नहीं ढूंढनी पड़ती। इसलिए ही हमने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना शुरू की। 80 करोड़ से ज्यादा लोगों को मुफ्त राशन सुनिश्चित किया। और आज देखिए, हमारे इन प्रयासों की तारीफ पूरी दुनिया में हो रही है।

आज देश गरीब कल्याण की जितनी भी बड़ी योजनाएँ चला रहा है, उसका सबसे बड़ा लाभ दलित, पिछड़े आदिवासी समाज को ही हो रहा है। आप सब अच्छे से जानते हैं, पहले की सरकारों के समय जो योजनाएँ आती थीं वो चुनावी मौसम के हिसाब से आती थीं। लेकिन, हमारी सोच है कि जीवन के हर पड़ाव पर देश दलित, वंचित, पिछड़े, आदिवासी, महिलाएं इन सबके साथ खड़ा हो, हम उनकी आशाओं-आकांक्षाओं को सहारा दें। आप देखिए जरा योजनाओं पर नजर करेंगे तो पता चलेगा बच्चे के जन्म का समय होता है तो मातृवंदना योजना के जरिए गर्भवती माता को 6 हजार रुपए दिए जाते हैं ताकि माँ-बच्चा स्वस्थ रहें। आप भी जानते हैं कि जन्म के बाद बच्चों को बीमारियों का, संक्रामक रोगों का खतरा होता है।

गरीबी के कारण दलित-आदिवासी बस्तियों में इनकी सबसे ज्यादा मार होती थी। आज नवजात बच्चों की पूरी सुरक्षा के लिए मिशन इंद्रधनुष चलाया जा रहा है। बच्चों को सभी बीमारियों से बचने के लिए टीका लगें, ये चिंता सरकार करती है। मुझे संतोष है कि बीते वर्षों में साढ़े 5 करोड़ से अधिक माताओं और बच्चों का टीकाकरण किया जा चुका हैं।

आज हम देश के 7 करोड़ भाई-बहनों को सिकल सेल अनीमिया से मुक्ति के लिए अभियान चला रहे हैं। देश को 2025 तक टीबी मुक्त बनाने के लिए काम हो रहा है, काला जार और दिमागी बुखार का प्रकोप धीरे-धीरे कम हो रहा है। इन बीमारियों से सबसे ज्यादा दलित, वंचित, गरीब परिवार वो ही इसके शिकार होते थे। इसी तरह, अगर इलाज की जरूरत होती है तो आयुष्मान योजना के जरिए अस्पतालों में मुफ्त इलाज की व्यवस्था की गई है। लोग कहते है मोदी कार्ड मिल गया है, 5 लाख रूपये तक अगर कोई बीमारी को लेकर के बिल चुकाना है तो ये आपका बेटा कर देता है।

जीवन चक्र में पढ़ाई का बहुत महत्व है। आज देश में आदिवासी बच्चों की पढ़ाई के लिए अच्छे स्कूलों की व्यवस्था हो रही है। आदिवासी क्षेत्रों में 700 एकलव्य आवासीय स्कूल खोले जा रहे हैं। उन्हें सरकार पढ़ाई के लिए किताबें देती है, स्कॉलरशिप देती है। मिड-डे मील की व्यवस्था को बेहतर बनाया जा रहा है ताकि बच्चों को अच्छा पोषण वाला खाना मिले। बेटियों के लिए सुकन्या समृद्धि योजना शुरू की गई है, ताकि बेटियाँ भी बराबरी से आगे बढ़े। स्कूल के बाद हायर एजुकेशन में जाने के लिए SC, ST, OBC युवा-युवतियों के लिए अलग से स्कॉलरशिप की व्यवस्था की गई है। हमारे युवा आत्मनिर्भर बनें, अपने सपनों को पूरा कर सकें, इसके लिए मुद्रा लोन जैसी योजनाएँ भी शुरू की गई हैं। मुद्रा योजना के अब तक जितने लाभार्थी हैं, उनमें बड़ी संख्या में SC-ST समाज के ही मेरे भाई-बहन हैं। और सारा पैसा बिना गांरटी दिया जाता है।

SC-ST समाज को ध्यान में रखकर हमने स्टैंडअप इंडिया योजना भी शुरू की थी। स्टैंडअप इंडिया के तहत SC-ST समाज के युवाओं को 8 हजार करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता मिली है, 8 हजार करोड़ रूपए, ये हमारे SC-ST समाज के नव-जवानों के पास गए हैं। हमारे बहुत से आदिवासी भाई-बहन वन सम्पदा के जरिए अपना जीवन यापन करते हैं। उनके लिए देश वनधन योजना चला रहा है। आज करीब 90 वन उत्पाद को MSP का लाभ भी मिल रहा है। इतना ही नहीं, कोई भी दलित, वंचित, पिछड़ा बिना घर के न रहे, हर गरीब के सर पर छत हो, इसके लिए प्रधानमंत्री आवास भी दिये जा रहे हैं। घर में सभी जरूरी सुविधाएं हों, इसके लिए बिजली कनेक्शन, पानी कनेक्शन भी मुफ्त दिया गया है। इसका परिणाम है कि SC-ST समाज के लोग आज अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं। उन्हें बराबरी के साथ समाज में सही स्थान मिल रहा है।

सागर एक ऐसा जिला है, जिसके नाम में तो सागर है ही, इसकी एक पहचान 400 एकड़ की लाखा बंजारा झील से भी होती है। इस धरती से लाखा बंजारा जैसे वीर का नाम जुड़ा है। लाखा बंजारा ने इतने वर्ष पहले

पानी की अहमियत को समझा था। लेकिन, जिन लोगों ने दशकों तक देश में सरकारें चलाईं, उन्होंने गरीबों को पीने का पानी पहुंचाने की जरूरत भी नहीं समझी। ये काम भी जलजीवन मिशन के जरिए हमारी सरकार जोरों पर कर रही है। आज दलित बस्तियों में, पिछड़े इलाकों में, आदिवासी क्षेत्रों में पाइप से पानी पहुँच रहा है। ऐसे ही, लाखा बंजारा की परंपरा को आगे बढ़ाते हुये हर जिले में 75 अमृत सरोवर भी बनाए जा रहे हैं। ये सरोवर आजादी की भावना का प्रतीक बनेंगे, सामाजिक समरसता का केंद्र बनेंगे।

आज देश का दलित हो, वंचित हो, पिछड़ा हो, आदिवासी हो, हमारी सरकार इन्हें उचित सम्मान दे रही है, नए अवसर दे रही है। न इस समाज के लोग कमजोर हैं, न इनका इतिहास कमजोर है। एक से एक महान विभूतियाँ समाज के इन वर्गों से निकलकर आई हैं। उन्होंने राष्ट्र के निर्माण में असाधारण भूमिका निभाई है। इसीलिए, आज देश इनकी विरासत को भी गर्व के साथ सहेज रहा है। बनारस में संत रविदास जी की जन्मस्थली पर मंदिर का सौंदर्यीकरण किया गया। मुझे खुद उस कार्यक्रम में जाने का सौभाग्य मिला। यहाँ भोपाल में जो ग्लोबल स्किल पार्क बन रहा है, उसका नाम भी संत रविदास के नाम पर रखा गया है।

बाबा साहब के जीवन से जुड़े प्रमुख स्थानों को भी पंच-तीर्थ के रूप में विकसित करने का जिम्मा हमने उठाया है। इसी तरह, आज देश के कई राज्यों में जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास को अमर करने के लिए म्यूजियम्स बन रहे हैं। भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन को देश ने जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की परंपरा शुरू की है। मध्य प्रदेश में भी हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम गोंड समाज की रानी कमलापति के नाम पर रखा गया है। पातालपानी स्टेशन का नाम टंट्या मामा के नाम पर किया गया है।

आज पहली बार देश में दलित, पिछड़ा और आदिवासी परंपरा को वो सम्मान मिल रहा है, जिसके ये समाज के लोग हकदार थे। हमें 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, और सबका प्रयास', के इसी संकल्प को लेकर आगे बढ़ना है। मुझे भरोसा है, देश की इस यात्रा में संत रविदास जी की शिक्षाएं हम सब देशवासियों को एकजुट करती रहेंगी। हम साथ मिलकर, बिना रुके भारत को विकसित राष्ट्र बनाएँगे। ▪

बुंदेलखंड की तस्वीर और तकदीर बदलेगी

शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश, बुंदेलखंड और सागर के लिए सौभाग्य का दिन है। संत शिरोमणि रविदास जी का भव्य, दिव्य और अलौकिक मंदिर इस धरती पर बनने वाला है। सागर के बड़तूमा में संत रविदास जी का भव्य मंदिर बनाया जाएगा। संत रविदास जी महाराज भारत को जोड़ने वाले संत थे कोई जात-पात नहीं, कोई ऊँचा-नीचा नहीं, कोई छोटा-बड़ा नहीं। भक्ति कैसे करें, कर्म कैसे करें इसका संदेश देने वाले संत रविदास जी महाराज उनके जीवन और दर्शन पर आधारित यह भव्य स्मारक बनेगा और आने वाली पीढ़ियां भी संत रविदास जी को जानेंगी और उनके बताएं मार्ग पर चलेगीं। जल्द ही यह भव्य मंदिर हमें मिलेगा जो बुंदेलखंड की प्रतिष्ठा को और बढ़ायेगा।

संत रविदास जी ने कहा था **''ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न''** आज 80 करोड़ बहनों भाइयों को निःशुल्क अन्न की व्यवस्था प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने की है। और केवल अन्न ही नहीं जनता की जिंदगी की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने का काम मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार कर रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम में गरीबों को पक्के मकान, उज्ज्वला रसोई गैस कनेक्शन और शौचालय बनाकर बहनों को सम्मान देने का काम, आयुष्मान भारत योजना बनाकर गरीबों का इलाज कराना और कोविड वैक्सीन बनाकर 140 करोड़ भारतीयों की जान बचाने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी संत रविदास जी के मार्ग पर चलकर सरकार चला रहे हैं। मोदी जी के आशीर्वाद से और उनके बताए मार्ग पर चलकर मध्य प्रदेश भी आगे बढ़ रहा है। 1 करोड़ 30 लाख लोग गरीबी से मध्यप्रदेश में भी बाहर निकले हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने ऐसे फैसले लिए हैं जो बुंदेलखंड की तस्वीर और जनता की तकदीर बदल देंगे। बीना रिफाइनरी पर आधारित पेट्रो केमिकल्स उत्पाद पर 50 हजार करोड़ का निवेश आने वाला है। तो वहीं बुंदेलखंड की धरा पर केन-बेतवा परियोजना का काम जल्दी प्रारंभ होने वाला है। इस परियोजना से बुंदेलखंड हरा भरा होगा, जिससे बुंदेलखंड की धरती फसल उत्पादन के मामले में पंजाब और हरियाणा को भी मात देगी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में एक नए भारत का उदय हो रहा है।

संत रविदास जी का मंदिर और कला संग्रहालय भव्य होगा, जो श्रद्धा, आस्था और भक्ति का अभूतपूर्व स्थल होगा। दार्शनिक और अध्येता और जिज्ञासु भी देश-विदेश से आएंगे। संत रविदास जी का कृतित्व, व्यक्तित्व और दर्शन पूरी दुनिया के लिए प्रेरक बनेगा। ▪

आत्मनिर्भर भारत हर देशवासी का अभियान है

याद नहीं पड़ता कि कभी सावन के महीने में, दो-दो बार 'मन की बात' का कार्यक्रम हुआ, लेकिन, इस बार, ऐसा ही हो रहा है। सावन यानि महाशिव का महीना, उत्सव और उल्लास का महीना। चंद्रयान की सफलता ने उत्सव के इस माहौल को कई गुना बढ़ा दिया है। चंद्रयान को चन्द्रमा पर पहुँचे, तीन दिन से ज्यादा का समय हो रहा है। ये सफलता इतनी बड़ी है कि इसकी जितनी चर्चा की जाए, वो कम है। जब आपसे बात कर रहा हूँ तो एक पुरानी मेरी कविता की कुछ पंक्तियां याद आ रही हैं...

आसमान में सिर उठाकर
घने बादलों को चीरकर
रोशनी का संकल्प ले
अभी तो सूरज उगा है।
दृढ़ निश्चय के साथ चलकर
हर मुश्किल को पार कर
घोर अंधेरे को मिटाने
अभी तो सूरज उगा है।
आसमान में सिर उठाकर
घने बादलों को चीरकर
अभी तो सूरज उगा है।

23 अगस्त को भारत ने और भारत के चंद्रयान ने ये साबित कर दिया है कि संकल्प के कुछ सूरज चाँद पर भी उगते हैं। मिशन चंद्रयान नए भारत की उस spirit का प्रतीक बन गया है, जो हर हाल में जीतना चाहता है, और हर हाल में, जीतना जानता भी है।

इस मिशन का एक पक्ष ऐसा भी रहा जिसकी आप सब के साथ विशेष तौर पर चर्चा करना चाहता हूं। आपको याद होगा इस बार मैंने लाल किले से कहा है कि हमें Women Led Development को राष्ट्रीय चरित्र के रूप में सशक्त करना है। जहां महिला शक्ति का सामर्थ्य जुड़ जाता है, वहाँ असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। भारत का मिशन चंद्रयान, नारी शक्ति का भी जीवंत उदाहरण है। इस पूरे मिशन में अनेकों Women Scientists और Engineers सीधे तौर पर जुड़ी रही हैं। इन्होंने अलग-अलग systems के project director, project manager ऐसी कई अहम जिम्मेदारियां संभाली हैं। भारत की बेटियां अब अनंत समझे जाने वाले अंतरिक्ष को भी चुनौती दे रही हैं। किसी देश की बेटियाँ जब इतनी आकांक्षी हो जाएं, तो उसे, उस देश को, विकसित बनने से भला कौन रोक सकता है! हमने इतनी ऊंची उड़ान इसलिए पूरी की है, क्योंकि आज हमारे सपने भी बड़े हैं और हमारे प्रयास भी बड़े हैं। चंद्रयान-3 की सफलता में हमारे वैज्ञानिकों के साथ ही दूसरे सेक्टर्स की भी अहम भूमिका रही है। तमाम पार्ट्स और तकनीकी जरूरतों को पूरा करने में कितने ही देशवासियों ने योगदान दिया है। जब सबका प्रयास लगा, तो सफलता भी मिली। यही चंद्रयान-3 की सबसे बड़ी सफलता है। मैं कामना करता हूँ कि आगे भी हमारा Space Sector सबका प्रयास से ऐसे ही अनगिनत सफलताएँ हासिल करेगा।

भारत का मिशन चंद्रयान, नारी शक्ति का भी जीवंत उदाहरण है। इस पूरे मिशन में अनेकों Women Scientists और Engineers सीधे तौर पर जुड़ी रही हैं। इन्होंने अलग-अलग systems के project director, project manager ऐसी कई अहम जिम्मेदारियां संभाली हैं।

भारत की बेटियां अब अनंत समझे जाने वाले अंतरिक्ष को भी चुनौती दे रही हैं। किसी देश की बेटियाँ जब इतनी आकांक्षी हो जाएं, तो उसे, उस देश को, विकसित बनने से भला कौन रोक सकता है!

सितम्बर का महीना, भारत के सामर्थ्य का साक्षी बनने जा रहा है। अगले महीने होने जा रही G-20 Leaders Summit के लिए भारत पूरी तरह से तैयार है। इस आयोजन में भाग लेने के लिए 40 देशों के राष्ट्राध्यक्ष और अनेक Global Organisations राजधानी दिल्ली आ रहे हैं। G-20 Summit के इतिहास में ये अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी होगी। अपनी presidency के दौरान भारत ने G-20 को और ज्यादा inclusive forum बनाया है। भारत के निमंत्रण पर ही African Union भी G-20 से जुड़ी और अफ्रीका के लोगों की आवाज दुनिया के इस अहम प्लेटफार्म (platform) तक पहुंची।

पिछले साल, बाली में भारत को G-20 की अध्यक्षता मिलने के बाद से अब तक इतना कुछ हुआ है, जो हमें गर्व से भर देता है। दिल्ली में

बड़े-बड़े कार्यक्रमों की परंपरा से हटकर, हम इसे देश के अलग-अलग शहरों में ले गए। देश के 60 शहरों में इससे जुड़ी करीब-करीब 200 बैठकों का आयोजन किया गया। G-20 Delegates जहां भी गए, वहां लोगों ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। ये Delegates हमारे देश की diversity देखकर, हमारी vibrant democracy देखकर, बहुत ही प्रभावित हुए। उन्हें ये भी एहसास हुआ कि भारत में कितनी सारी संभावनाएं हैं।

G-20 की हमारी Presidency, People's Presidency है, जिसमें जनभागीदारी की भावना सबसे आगे है। G-20 के जो ग्यारह Engagement Groups थे, उनमे Academia, Civil Society, युवा, महिलाएं, हमारे सांसद, Entrepreneurs और urban Administration से जुड़े लोगों ने अहम भूमिका निभाई। इसे लेकर देशभर में जो आयोजन हो रहे हैं, उनसे, किसी न किसी रूप से डेढ़ करोड़ से अधिक लोग जुड़े हैं। जनभागीदारी की हमारी इस कोशिश में एक ही नहीं, बल्कि दो-दो विश्व रिकॉर्ड (record) भी बन गए हैं। वाराणसी में हुई G-20 Quiz में 800 स्कूलों के सवा लाख स्टूडेंट्स (Students) की भागीदारी एक नया विश्व रिकॉर्ड बन गया। वहीं, लंबानी कारीगरों ने भी कमाल कर दिया। 450 कारीगरों ने करीब 1800 Unique Patches का आश्चर्यजनक Collection बनाकर, अपने हुनर और Craftsmanship का परिचय दिया है। G-20 में आए हर प्रतिनिधि हमारे देश की Artistic Diversity को देखकर भी बहुत हैरान हुए। ऐसा ही एक शानदार कार्यक्रम सूरत में आयोजित किया गया। वहां हुए 'साड़ी Walkathon' में 15 राज्यों की 15,000 महिलाओं ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम से सूरत की Textile Industry को तो बढ़ावा मिला ही, (Vocal for Local) 'वोकल फॉर लोकल' को भी बल मिला और लोकल के लिए ग्लोबल होने का रास्ता भी बना। श्रीनगर में G-20 की बैठक के बाद कश्मीर के पर्यटकों की संख्या में भारी बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। आइए, मिलकर G-20 सम्मलेन को सफल बनाएं, देश का मान बढ़ाएं।

'मन की बात' के Episode में हम अपनी युवा पीढ़ी के सामर्थ्य की चर्चा अक्सर करते रहते हैं। आज, खेल-कूद एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ हमारे युवा निरंतर नई सफलताएँ हासिल कर रहे हैं। 'मन की बात' में, एक ऐसे Tournament की बात करूंगा जहाँ हाल ही में हमारे खिलाड़ियों ने देश का परचम लहराया है। कुछ ही दिनों पहले चीन में World University Games हुए थे। इन खेलों में इस बार भारत की Best Ever Performance रही है। हमारे खिलाड़ियों ने कुल 26 पदक जीते, जिनमें से 11 Gold Medal (गोल्ड मेडल) थे। आपको ये जानकर अच्छा लगेगा कि 1959 से लेकर अब तक जितने World University Games हुए हैं, उनमें जीते सभी Medals को जोड़ दें तो भी ये संख्या 18 तक ही पहुँचती है। इतने दशकों में सिर्फ 18, जबकि इस बार हमारे खिलाड़ियों ने 26 Medal जीत लिए। इसलिए, World University Games में Medal जीतने वाले कुछ युवा खिलाड़ी, विद्यार्थी इस समय Phone Line (फोन लाइन) पर मेरे साथ जुड़े हुए हैं। मैं सबसे पहले इनके बारे में आपको बता दूँ। यूपी की रहने वाली प्रगति ने Archery (आर्चरी) में Medal जीता है। असम के रहने वाले अम्लान ने Athletics (एथलेटिक्स) में Medal जीता है। यूपी की रहने वाली प्रियंका ने Race Walk (रेस वाक) में Medal जीता है। महाराष्ट्र की रहने वाली अभिदन्या ने Shooting (शूटिंग) में Medal जीता है।

मोदी जी- मेरे प्यारे युवा खिलाड़ियो नमस्कार।

युवा खिलाड़ी- नमस्ते सर।

मोदी जी- मुझे आप से बात करके बहुत अच्छा लग रहा है। मैं सबसे पहले भारत की Universities में से Select की गई Team, आप लोगों ने जो भारत का नाम रोशन किया है, इसलिए मैं आप सबको बधाई देता हूँ। आपने World University Games में अपने प्रदर्शन से हर देशवासी का सिर गर्व से ऊँचा कर दिया है। तो सबसे पहले तो मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

प्रगति, मैं इस बातचीत की शुरुआत आपसे कर रहा हूँ। आप सबसे पहले मुझे बताइए कि दो Medal जीतने के बाद आप जब यहाँ से गई तब ये सोचा था क्या? और इतना बड़ा विजय प्राप्त किया तो महसूस क्या हो रहा है?

प्रगति- सर बहुत Proud Feel कर रही थी मैं, मुझे इतना अच्छा लग रहा था कि मैं अपने देश का झंडा इतना ऊँचा लहरा के आई हूँ कि एक बार तो ठीक है कि Gold Fight में पहुंचे थे उसको lose किया था तो Regret हो रहा था। पर दूसरी बार ये ही था दिमाग में कि अब कुछ हो जाए ये इसको नीचे नहीं जाने देना है। इसको हर हाल में सबसे ऊँचा लहरा के ही आना है। जब हम Fight को Last में जीते थे तो वही Podium पे हम लोगों ने बहुत अच्छे से Celebrate किया था। वो moment बहुत अच्छा था। इतना Proud Feel हो रहा था कि मतलब हिसाब नहीं था उसका।

मोदी जी- प्रगति आपको तो Physically बहुत बड़े Problem आए थे। उसमें से आप उभर करके आईं। ये अपने आप में देश के नौजवानों के लिए बड़ा Inspiring हैं। क्या हुआ था आपको?

प्रगति- सर 5 मई, 2020 में, मुझे सर Brain Haemorrhage हुआ था। मैं Ventilator पे थी। कुछ Confirmation नहीं थी कि मैं बचूंगी की नहीं और बची तो कैसे बचूंगी! But इतना था कि हाँ, मुझे अन्दर से हिम्मत थी कि मैंने जाना है वापिस Ground पर खड़े होना है, Arrow चलाने। मेरे को, मेरी जिन्दगी बचाई है तो सबसे बड़ा हाथ भगवान का, उसके बाद डॉक्टर का फिर Archery का।

हमारे साथ अम्लान भी है। अम्लान, जरा बताइये आपकी Athletics के प्रति इतनी ज्यादा रूचि कैसे Develop की !

अम्ला- जी नमस्कार सर।

मोदी जी- नमस्कार! नमस्कार।

अम्लान- सर Athletics के प्रति तो पहले उतनी रूचि नहीं थी। पहले हम Football में थे ज्यादा। But जैसे-जैसे मेरे भाई का एक दोस्त है, तो उन्होंने मेरे को बोला कि अम्लान तुम्हें Athletics में, Competition में जाना चाहिये। तो मैंने सोचा चलो ठीक है तो पहला जब मैंने State Meet खेला तो मैं हार गया उसमें। तो हार मुझे अच्छी नहीं लगी। तो ऐसे करते-करते मैं Athletics में आ गया। फिर ऐसे ही धीरे-धीरे अभी मजा आने लग रहा है। तो वैसे ही मेरा रूचि बढ़ गया।

मोदी जी- अम्लान जरा बताइए ज्यादातर Practice कहाँ की !

अम्लान- ज्यादातर मैंने हैदराबाद में Practice की है, साई रेड्डी सर के Under फिर उसके बाद में भुबनेश्वर में Shift हो गया तो उधर से मेरा Professionally Start हुआ सर।

अच्छा हमारे साथ प्रियंका भी है। प्रियंका, आप 20 किलोमीटर Race Walk Team का हिस्सा थीं। सारा देश आज आपको सुन रहा है, और वे इस Sport के बारे में जानना चाहते हैं। आप ये बताइए कि इसके लिए किस तरह की Skills की जरुरत होती है। और आपकी Career कहाँ-कहाँ से कहाँ पहुँची?

प्रियंका- मेरे जैसे Event में मतलब काफी Tough है क्योंकि हमारे पांच Judge खड़े होते हैं। अगर हम भाग भी लिए तो भी वो हमें निकाल देंगे या फिर थोड़ा रोड से अगर हम उठ जाते हैं Jump आ जाती है तो भी वो हमें निकाल देते हैं। या फिर हमने Knee Bend किया तो भी हमें

निकाल देते हैं और मेरे को तो Warning भी दो आ गई थी। उसके बाद मैंने अपनी Speed पे इतना Control किया कि कहीं न कहीं मुझे Team Medal तो At least यहाँ से जीतना ही है। क्योंकि हम देश के लिए यहाँ पे आए हैं और हमें खाली हाथ यहाँ से नहीं जाना है।

मोदी जी- जी, और पिताजी, भाई वगैरा सब ठीक हैं?

प्रियंका- हां जी सर, सब बढ़िया, मैं तो सबको बताती हूँ कि आप, मतलब इतना motivate करते हैं हम लोग को, सच में सर, बहुत अच्छा लग रहा है, क्योंकि World University जैसे खेल को, India में इतना पूछा भी नहीं जाता है, लेकिन अब इतना Support मिल रहा है ना इस game में भी मतलब हम Tweet भी देख रहे हैं, कि हर कोई Tweet कर रहा है कि, हमने इतने Medal जीते हैं, तो काफी अच्छा लग रहा है कि Olympics की तरह, इसको भी, इतना बढ़ावा मिल रहा है।

मोदी जी- चलिए प्रियंका, मेरी तरफ से बधाई है। आपने बड़ा नाम रोशन किया है, आईये हम अभिदन्या से बात करते हैं।

अभिदन्या- नमस्ते सर।

मोदी जी- बताइये अपने विषय में।

अभिदन्या- सर मैं proper कोल्हापुर, महाराष्ट्र से हूँ, मैं shooting में 25m sports pistol और 10m air pistol दोनों event करती हूँ। मेरे माता-पिता दोनों एक High School Teacher हैं, तो मैंने, 2015 में shooting start किया। जब मैंने shooting start किया तब उधर कोल्हापुर में उतनी facilities नहीं मिलती थी Bus से travel करके वडगांव से कोल्हापुर जाने के लिए डेढ़ घंटा लगता है, तो वापस आने के लिए डेढ़ घंटा, और चार घंटे की training, तो ऐसे, 6-7 घंटे तो आने जाने में और training में जाते थे, तो मेरी school भी miss होती थी, तो फिर Mummy-Papa ने बोला कि बेटा एक काम करो, हम आपको, Saturday-Sunday को ले के जायेंगे shooting range के लिए, और बाकी times आप दूसरे games करो। तो मैं बहुत सारे games करती थी बचपन में, क्योंकि मेरे मम्मी-पापा दोनों को, खेल में काफी रूचि थी, लेकिन, वो कुछ कर नहीं पाए, Financial Support उतना नहीं था और उतनी जानकारी भी नहीं थी, इसलिए मेरी माताजी का बड़ा सपना था कि देश को represent करना चाहिए और फिर देश के लिए medal भी जीतना चाहिए। तो मैं उनकी dream complete करने के लिए बचपन से काफी खेल-कूद में रूचि लेती थी और फिर मैंने Taekwondo भी किया है, उसमें भी, black belt हूँ, और Boxing, Judo और fencing और discuss throw जैसे बहुत सारे games करके फिर मैं 2015 में shooting में आ गयी। फिर 2-3 साल मैंने बहुत struggle किया और first time मेरा University Championship के लिए Malaysia selection हो गया और उसमें मेरा Bronze Medal आया, तो, उधर से actually मुझे push मिला। फिर मेरे school ने मेरे लिए एक shooting range बनवाई, फिर मैं उधर training करती थी और फिर उन्होंने मुझे पुणे भेज दिया training करने के लिए। तो यहां पर Gagan Narang Sports Foundation है Gun for Glory तो मैं उसी के under training कर रही हूँ, अभी गगन सर ने मुझे काफी support किया और मेरे game के लिए बढ़ावा दिया।

मोदी जी- अच्छा आप चारों मुझसे कुछ कहना चाहते हो तो मैं सुनना चाहूँगा। प्रगति हो, अम्लान हो, प्रियंका हो, अभिदन्या हो। आप सब मेरे साथ जुड़े हुए हैं तो कुछ कहना चाहते हैं तो मैं जरुर सुनूंगा।

अम्लान- सर, मेरा एक सवाल है सर।

मोदी जी- जी।

अम्लान- आपको सबसे अच्छा sports कौन सा लगता है सर?

मोदी जी- खेल की दुनिया में भारत को बहुत खिलना चाहिए और इसलिए मैं इन चीजों को बहुत बढ़ावा दे रहा हूँ, लेकिन Hockey, football, कबड्डी, खो-खो, ये हमारी धरती से जुड़े हुए खेल हैं, इसमें तो हमें, कभी, पीछे नहीं रहना चाहिए और मैं देख रहा हूँ कि archery में हमारे लोग अच्छा कर रहे हैं, shooting में अच्छा कर रहे हैं। और दूसरा मैं देख रहा हूँ कि हमारे youth में और even परिवारों में भी खेल के प्रति पहले जो भाव था वो नहीं है। पहले तो बच्चा खेलने जाता था तो रोकते थे, और अब, बहुत बड़ा वक्त बदला है और आप लोगों ने जो Success लेते आ रहे हैं न, वो, सभी परिवारों को, Motivate करती है। हर खेल में जहाँ भी हमारे बच्चे जा रहे हैं, कुछ न कुछ देश के लिए करके आते हैं। और ये खबरें आज देश में प्रमुखता से दिखाई भी जाती हैं, बताई जाती हैं और School, College में चर्चा में भी रहती हैं।

मेरे परिवारजनों, इस बार 15 अगस्त के दौरान देश ने 'सबका प्रयास' का सामर्थ्य देखा। सभी देशवासियों के प्रयास ने 'हर घर तिरंगा अभियान' को वास्तव में 'हर मन तिरंगा अभियान' बना दिया। इस अभियान के दौरान कई Record भी बने। देशवासियों ने करोड़ों की संख्या में तिरंगे खरीदे। डेढ़ लाख Post Offices के जरिए करीब डेढ़ करोड़ तिरंगे बेचे गए। इससे हमारे कामगारों की, बुनकरों की, और खासकर महिलाओं की सैकड़ों करोड़ रुपए की आय भी हुई है। तिरंगे के साथ Selfie Post करने में भी इस बार देशवासियों ने नया Record बना दिया। पिछले साल 15 अगस्त तक करीब 5 करोड़ देशवासियों ने तिरंगे के साथ Selfie Post की थी। इस साल ये संख्या 10 करोड़ को भी पार कर गई है।

इस समय देश में 'मेरी माटी, मेरा देश' देशभक्ति की भावना को उजागर करने वाला अभियान जोरों पर है। सितंबर के महीने में देश के गाँव-गाँव में, हर घर से मिट्टी जमा करने का अभियान चलेगा। देश की पवित्र मिट्टी हजारों अमृत कलश में जमा की जाएगी। अक्टूबर के अंत में हजारों अमृत कलश यात्रा के साथ देश की राजधानी दिल्ली पहुँचेंगे। इस मिट्टी से ही दिल्ली में अमृत वाटिका का निर्माण होगा। मुझे विश्वास है, हर देशवासी का प्रयास, इस अभियान को भी सफल बनाएगा।

इस बार मुझे कई पत्र संस्कृत भाषा में मिले हैं। इसकी वजह यह है कि सावन मास की पूर्णिमा, इस तिथि को विश्व संस्कृत दिवस मनाया जाता है।

सर्वेभ्यः विश्व-संस्कृत-दिवसस्य हार्द्याः शुभकामनाः

आप सभी को विश्व संस्कृत दिवस की बहुत-बहुत बधाई। हम सब जानते हैं कि संस्कृत दुनिया की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसे कई आधुनिक भाषाओं की जननी भी कहा जाता है। संस्कृत अपनी प्राचीनता के साथ-साथ अपनी वैज्ञानिकता और व्याकरण के लिए भी जानी जाती है। भारत का कितना ही प्राचीन ज्ञान हजारों वर्षों तक संस्कृत भाषा में ही संरक्षित किया गया है। योग, आयुर्वेद और philosophy जैसे विषयों पर research करने वाले लोग अब ज्यादा से ज्यादा संस्कृत सीख रहे हैं। कई संस्थान भी इस दिशा में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। जैसे कि Sanskrit Promotion foundation, Sanskrit for Yog, Sanskrit for Ayurveda औरSanskrit for Buddhism जैसे कई Courses करवाता है। 'संस्कृत भारती' लोगों को संस्कृत सिखाने का अभियान चलाती है। इसमें आप 10 दिन के 'संस्कृत संभाषण शिविर' में भाग ले सकते हैं। मुझे खुशी है कि आज लोगों में संस्कृत को लेकर जागरूकता और गर्व का भाव बढ़ा है। इसके पीछे बीते वर्षों में देश का विशेष योगदान भी है। जैसे तीन Sanskrit Deemed Universities को 2020 में Central Universities बनाया गया। अलग-अलग शहरों में संस्कृत विश्वविद्यालयों के कई कॉलेज और संस्थान भी चल रहे हैं। IITs

और IIMs जैसे संस्थानों में संस्कृत केंद्र काफी Popular हो रहे हैं।

अक्सर आपने एक बात जरूर अनुभव की होगी, जड़ों से जुड़ने की, हमारी संस्कृति से जुड़ने की, हमारी परम्परा का बहुत बड़ा सशक्त माध्यम होती है- हमारी मातृभाषा। जब हम अपनी मातृभाषा से जुड़ते हैं, तो हम सहज रूप से अपनी संस्कृति से जुड़ जाते हैं। अपने संस्कारों से जुड़ जाते हैं, अपनी परंपरा से जुड़ जाते हैं, अपने चिर पुरातन भव्य वैभव से जुड़ जाते हैं। ऐसे ही भारत की एक और मातृभाषा है, गौरवशाली तेलुगू भाषा। 29 अगस्त तेलुगू दिवस मनाया जायेगा।

अन्दरिकी तेलुगू भाषा दिनोत्सव शुभाकांक्षलु।

आप सभी को तेलुगू दिवस की बहुत-बहुत बधाई। तेलुगू भाषा के साहित्य और विरासत में भारतीय संस्कृति के कई अनमोल रत्न छिपे हैं। तेलुगू की इस विरासत का लाभ पूरे देश को मिले, इसके लिए कई प्रयास भी किये जा रहे हैं।

मेरे परिवारजनों, 'मन की बात' के कई Episodes में हमने Tourism पर बात की है। चीजों या स्थानों को साक्षात खुद देखना, समझना और कुछ पल उनको जीना, एक अलग ही अनुभव देता है।

कोई समंदर का कितना ही वर्णन कर दे लेकिन हम समंदर को देखे बिना उसकी विशालता महसूस नहीं कर सकते। कोई हिमालय का कितना ही बखान कर दे, लेकिन हम हिमालय को देखे बिना उसकी सुन्दरता का आकलन नहीं कर सकते। इसलिए ही मैं अक्सर आप सभी से ये आग्रह करता हूँ कि जब मौका मिले, हमें अपने देश की Beauty अपने देश की Diversity उसे जरूर देखने जाना चाहिए। अक्सर हम एक और बात भी देखते हैं हम भले ही दुनिया का कोना-कोना छान लें लेकिन अपने ही शहर या राज्य की कई बेहतरीन जगहों और चीजों से अनजान होते हैं।

कई बार ऐसा होता है कि लोग अपने शहर के ही ऐतिहासिक स्थलों के बारे में ज्यादा नहीं जानते। ऐसा ही कुछ धनपाल जी के साथ हुआ। धनपाल जी, बेंगलुरु के Transport Office में driver का काम करते थे। करीब 17 साल पहले उन्हें Sightseeing wing में जिम्मेदारी मिली थी। इसे अब लोग बेंगलुरु दर्शिनी के नाम से जानते हैं। धनपाल जी पर्यटकों को शहर के अलग-अलग पर्यटन स्थलों पर ले जाया करते थे। ऐसी ही एक trip पर किसी tourist ने उनसे पूछ लिया, बेंगलुरु में tank को सेंकी टैंक क्यों कहा जाता है। उन्हें बहुत ही खराब लगा कि उन्हें इसका जवाब पता नहीं था। ऐसे में उन्होंने खुद की जानकारी बढ़ाने पर focus किया। अपनी विरासत को जानने के इस जुनून में उन्हें अनेक पत्थर और शिलालेख मिले। इस काम में धनपाल जी का मन ऐसा रमा - ऐसा रमा, कि उन्होंने epigraphy (एपिग्राफी) यानि शिलालेखों से जुड़े विषय में Diploma भी कर लिया। हालाँकि अब वे retire हो चुके हैं, लेकिन बेंगलुरु के इतिहास खंगालने का उनका शौक अब भी बरकरार है।

मुझे Brian D. Kharpran (ब्रायन डी खारप्रन) के बारे में बताते हुए बेहद खुशी हो रही है। ये मेघालय के रहने वाले हैं और उनकी Speleology (स्पेलियो-लॉजी) में गजब की दिलचस्पी है। सरल भाषा में कहा जाए तो इसका मतलब है-गुफाओं का अध्ययन। वर्षों पहले उनमें यह Interest तब जगा, जब उन्होंने कई Story Books पढ़ी। 1964 में उन्होंने एक स्कूली छात्र के रूप में अपना पहला Exploration किया। 1990 में उन्होंने अपने दोस्त के साथ मिलकर एक Association की स्थापना की और इसके जरिए मेघालय की अनजान गुफाओं के बारे में पता लगाना शुरू किया। देखते ही देखते उन्होंने अपनी Team के साथ मेघालय की 1700 से ज्यादा गुफाओं की खोज कर डाली और राज्य को World Cave Map पर ला दिया। भारत की सबसे लंबी और गहरी गुफाओं में से कुछ मेघालय में मौजूद हैं। Brian Ji और उनकी Team ने Cave Fauna यानि गुफा के उन जीव-जंतुओं को भी Document किया है, जो दुनिया में और कहीं नहीं पाए जाते हैं। मैं इस पूरी Team के प्रयासों की सराहना करता हूं, साथ ही मेरा यह आग्रह भी है कि आप मेघालय के गुफाओं में घूमने का Plan जरुर बनाएं।

मेरे परिवारजनों, आप सभी जानते हैं कि Dairy Sector, हमारे देश के सबसे important sector में से एक है। हमारी माताओं और बहनों के जीवन में बड़ा परिवर्तन लाने में तो इसकी बहुत अहम भूमिका रही है। कुछ ही दिनों पहले मुझे गुजरात की बनास डेयरी के एक Interesting Initiative के बारे में जानकारी मिली। बनास Dairy, एशिया की सबसे बड़ी Dairy मानी जाती है। यहां हर रोज औसतन 75 लाख लीटर दूध Process किया जाता है। इसके बाद इसे दूसरे राज्यों में भी भेजा जाता है। दूसरे राज्यों में यहां के दूध की समय पर Delivery हो, इसके लिए अभी तक Tanker या फिर Milk Trains (ट्रेनों)का सहारा लिया जाता था। लेकिन इसमें भी चुनौतियां कम नहीं थीं। एक तो यह कि loading और unloading में समय बहुत लगता था और कई बार इसमें दूध भी खराब हो जाता था। इस समस्या को दूर करने के लिए भारतीय रेलवे ने एक नया प्रयोग किया। रेलवे ने पालनपुर से न्यू रेवाड़ी तक Truck-on-Track की सुविधा शुरू की। इसमें दूध के ट्रकों को सीधे ट्रेन पर चढ़ा दिया जाता है। यानि transportation की बहुत बड़ी दिक्कत इससे दूर हुई है। Truck-on-Track सुविधा के नतीजे बहुत संतोष देने वाले रहे हैं। पहले जिस दूध को पहुँचाने में 30 घंटे लग जाते थे, वो अब आधे से भी कम समय में पहुँच रहा हैं। इससे जहाँ ईंधन से होने वाला प्रदूषण रुका है, वहीं ईंधन का खर्च भी बच रहा है। इससे बहुत बड़ा लाभ ट्रकों के ड्राईवरों को भी हुआ है, उनका जीवन आसान बना है।

Collective Efforts से आज हमारी dairies भी आधुनिक सोच के साथ आगे बढ़ रही है। बनास डेयरी ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी किस तरह से कदम आगे बढ़ाया है, इसका पता सीडबॉल वृक्षारोपण अभियान से चलता है। Varanasi Milk Union हमारे dairy farmers की आय बढ़ाने के लिए manure management पर काम कर रही है। केरला की मालाबार Milk Union Dairy का प्रयास भी बेहद अनूठा है। यह पशुओं की बिमारियों के इलाज के लिए Ayurvedic Medicines विकसित करने में जुटी है।

आज ऐसे बहुत से लोग हैं, जो dairy को अपना कर इसे Diversify कर रहे हैं। राजस्थान के कोटा में dairy farm चला रहे अमनप्रीत सिंह के बारे में भी आपको जरूर जानना चाहिए। उन्होंने डेयरी के साथ Biogas पर भी focus किया और दो biogas plants लगाये। इससे बिजली पर होने वाला उनका खर्च करीब 70 प्रतिशत कम हुआ है। इनका यह प्रयास देशभर के dairy farmers को प्रेरित करने वाला है। आज कई बड़ी dairies, biogas पर focus कर रही हैं। इस प्रकार के Community Driven Value addition बहुत उत्साहित करने वाले हैं। मुझे विश्वास है कि देशभर में इस तरह के trends निरंतर जारी रहेंगे।

मेरे परिवारजनों, मन की बात में आज बस इतना ही। अब त्योहारों का मौसम भी आ ही गया है। आप सभी को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं। पर्व-उल्लास के समय हमें Vocal for Local के मंत्र को भी याद रखना है। 'आत्मनिर्भर भारत' ये अभियान हर देशवासी का अपना अभियान है। और जब त्योहार का माहौल है तो हमें अपनी आस्था के स्थलों और उसके आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ तो रखना ही है, लेकिन हमेशा के लिए। ▪

आज सिन्धु में ज्वार उठा है

अटल बिहारी वाजपेयी

आज सिन्धु में ज्वार उठा है,
नगपति फिर ललकार उठा है,
कुरुक्षेत्र के कण-कण से फिर,
पांचजन्य हुँकार उठा है।

शत-शत आघातों को सहकर,
जीवित हिन्दुस्थान हमारा,
जग के मस्तक पर रोली-सा,
शोभित हिन्दुस्थान हमारा।

दुनिया का इतिहास पूछता,
रोम कहाँ, यूनान कहाँ है?
घर-घर में शुभ अग्नि जलाता,
वह उन्नत ईरान कहाँ है?

दीप बुझे पश्चिमी गगन के,
व्याप्त हुआ बर्बर अँधियारा,
किन्तु चीरकर तम की छाती,
चमका हिन्दुस्थान हमारा।

हमने उर का स्नेह लुटाकर,
पीड़ित ईरानी पाले हैं,
निज जीवन की ज्योति जला,
मानवता के दीपक बाले हैं।

जग को अमृत का घट देकर,
हमने विष का पान किया था,
मानवता के लिये हर्ष से,
अस्थि-वज्र का दान दिया था।

जब पश्चिम ने वन-फल खाकर,
छाल पहनकर लाज बचाई,
तब भारत से साम-गान का
स्वर्गिक स्वर था दिया सुनाई।

अज्ञानी मानव को हमने,
दिव्य ज्ञान का दान दिया था,
अम्बर के ललाट को चूमा,
अतल सिंधु को छान लिया था।

साक्षी है इतिहास, प्रकृति का,
तब से अनुपम अभिनय होता
पूरब से उगता है सूरज,
पश्चिम के तम में लय होता।

विश्व-गगन पर अगणित गौरव के,
दीपक अब भी जलते हैं

कोटि-कोटि नयनों में स्वर्णिम,
युग के शत सपने पलते हैं।

किन्तु आज पुत्रों के शोणित से,
रंजित वसुधा की छाती,
टुकड़े-टुकड़े हुई विभाजित,
बलिदानी पुरखों की थाती।

कण-कण पर शोणित बिखरा है,
पग-पग पर माथे की रोली
इधर मनी सुख की दीवाली,
और उधर जन-धन की होली।

मांगों का सिन्दूर, चिता की भस्म,
बना हा-हा खाता है,
अगणित जीवन-दीप बुझाता,
पापों का झोंका आता है।

तट से अपना सर टकराकर,
झेलम की लहरें पुकारती,
यूनानी का रक्त दिखाकर,
चन्द्रगुप्त को है गुहारती।

रो-रोकर पंजाब पूछता,
किसने है दोआब बनाया,
किसने मंदिर-गुरुद्वारों को,
अधर्म का अंगार दिखाया?

खड़े देहली पर हो,
किसने पौरुष को ललकारा,
किसने पापी हाथ बढ़ाकर,
माँ का मुकुट उतारा?

काश्मीर के नंदन वन को,
किसने है सुलगाया,
किसने छाती पर,
अन्यायों का अम्बार सजाया?

आंख खोलकर देखो!
घर में भीषण आग लगी है,
धर्म, सभ्यता, संस्कृति खाने,
दानव क्षुधा जगी है।

हिन्दू कहने में शरमाते,
दूध लजाते, लाज न आती,
घोर पतन है, अपनी माँ को,
माँ कहने में फटती छाती।

जिसने रक्त पिला कर पाला,
क्षण-भर उसका वेष निहारो,
उसकी सूनी मांग निहारो,
बिखरे-बिखरे केश निहारो।

जब तक दु:शासन है,
वेणी कैसे बंध पायेगी,
कोटि-कोटि संतति है,
माँ की लाज न लुट पायेगी।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

प्राचीन साहित्य में कहीं-कहीं जहाँ राजा का वर्णन किया गया है और राज्यधर्म का उसको उपदेश दिया गया है, वहाँ उसे अत्यन्त महत्वशाली अवश्य बताया गया है। यह शायद इसलिए कि उसे अपने कर्तव्य का भान रहे, अपने दायित्व की जानकारी रहे। वह संपूर्ण समाज जीवन के ऊपर प्रभाव डालने वाला व्यक्ति है। उसे अपने ऊपर पूरा ध्यान देना चाहिए। महाभारत में भीष्म ने यही बात कहीं। राजा काल का कारण है अथवा काल राजा का कारण? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने बिल्कुल निश्चयात्मक रूप से बतलाया। **राजा कालस्य कारणम् कि** राजा ही काल का कारण है। अब इसमें से कुछ लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि उन्होंने राजा को ही सर्वोपरि माना है, परन्तु यह बात सत्य नहीं है। भीष्म ने राजा को इतना महत्व देते हुए भी विधि से ऊपर नहीं बताया। राजा का प्रभाव होता है सत्य है और राजा, समाज में धर्म रहे, इस बात को देखने की जिम्मेदारी लेकर चलता है, यह भी सत्य है। किन्तु राजा धर्म का निर्माण करने वाला नहीं होता। धर्म का लोग पालन करें यही बात वह देखने वाला है। यानि एक प्रकार से कहा जाय तो राजा का स्थान उतना ही है, जितना आज के समय में कार्यपालिका का होता है।

जिम्मेदार कार्यपालिका

कार्यपालिका आज भी कानून नहीं बनाती, परन्तु राज्य ठीक प्रकार से चले यह जिम्मेदारी कार्यपालिका पर होती है। अगर कार्यपालिका ठीक न चले तो कानून की कैसी धज्जियां उड़ती हैं, वह आज हम अच्छी तरह से देख रहे है। आज भी हम कह सकते हैं कार्यपालिका **कालस्य कारणम् कि** आज जो बुराइयाँ चल रही हैं उसमें कार्यपालिका की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आखिर नशाबन्दी क्यों असफल हो गई है? यहाँ उसके लिए कौन जिम्मेदार है? जिन लोगों पर इस बात का दायित्व डाला गया कि नशाबन्दी चलेगी कहाँ से? उसके लिए जिम्मेदारी कार्यपालिका पर आती है। इसी जिम्मेदारी के रूप में भीष्म की उपर्युक्त सर्वप्रभुता संपन्न माना है। अगर ऐसा होता तो फिर अत्याचारी राजा वेण को राज्यसिंहासन से हटाकर पृथु को गद्दी पर बिठाने का काम ऋषियों ने न किया होता। ऋषियों के इस कार्य को किसी भी शास्त्र ने, किसी भी इतिहास ने बुरा नहीं कहा, बल्कि अच्छा ही कहा। धर्म की प्रभुता स्वीकार करने पर ही ऋषियों को अधर्मी राजा को हटाने का अधिकार प्राप्त होता है, अन्यथा राजा को हटाना अवैध माना जाता। यदि राजा अपने कर्तव्य का पालन न करे तो राजा को हटाना धर्म है। किन्तु पश्चिम में एक राजा को दूसरे राजा ने संघर्ष करके हटाया या जनता ने उस समय हटाया जब उन्होंने तत्वतः राजपद्धति को अमान्य कर दिया। वहाँ राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है और किसी भी परिस्थिति में नहीं हटाया जा सकता।

समाज व्यवस्था में अनेक संस्थायें

राजा या राज्य सर्वोपरि तो है ही नहीं, वह एकमेव संस्था भी नहीं है। समाज की व्यवस्था तथा उसके जीवन का नियमन करने वाली, समाज की व्यवस्था देखने वाली, अनेक संस्थायें हैं। उनका प्रादेशिक और व्यवसायिक दोनों आधारों पर गठन हुआ है। पंचायतें और जनपद सभायें हमारे यहाँ रही है। बड़े-से-बड़े चक्रवर्ती सार्वभौम राजा ने कभी पंचायतों को समाप्त नहीं किया। इसी प्रकार व्यवसायिक संगठन भी रहे हैं। उन्हें भी किसी ने समाप्त नहीं किया, अपितु उनकी स्वायात्तता को स्वीकार किया गया। अपने-अपने क्षेत्र में उन्होंने नियम बनाये। जाति की पंचायतें, श्रेणियाँ, निगम, ग्राम पंचायतें, जनपद सभायें आदि संस्थायें नियम बनाती थीं। राज्य का काम यही था कि इन नियमों का पालन होता है कि नहीं, यह देखें। राज्य ने कभी उनके मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। इस प्रकार हमारे यहाँ राज्य तो जीवन के थोड़े से हिस्से को ही छूता था।

इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी अनेक संस्थाएं जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से हमें आज कुछ अर्थव्यवस्था का भी विचार करना पड़ेगा। अर्थव्यवस्था कैसी हो? हमें ऐसी व्यवस्था चाहिए जो हमारे मानवत्व को विकसित कर सके, हमारे मानव्य को समाप्त न करें, उसके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव न डाले और जिसके द्वारा हम मानव से ऊँचे उठकर देवत्व को प्राप्त कर सकें। क्योंकि हमारे यहाँ पर मानव जीवन का पूर्ण विकास उसका देवत्व के रूप में आविर्भाव ही माना गया। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अर्थव्यवस्था की क्या मर्यादायें होनी चाहिए, इसका विचार करें।

अर्थव्यवस्था की मर्यादायें

लोगों के भरणपोषण के लिए, जीवन के विकास के लिए और राष्ट्र की धारणा और विकास के लिए जिन मौलिक साधनों की आवश्यकता होती है उनका उत्पादन अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होना चाहिए। न्यूनतम मर्यादा के बाद और अधिक समृद्धि एवं सुख के लिए अर्थोत्पादन करना चाहिए या नहीं, यह स्वाभाविक प्रश्न पैदा होता है। पश्चिम का अर्थशास्त्र तो इच्छाओं को बराबर समझता है। इस विषय में उसकी कोई अधिकतम मर्यादा नहीं है। सामान्यतयाः तो पहले इच्छा होती है और फिर उसकी पूर्ति के साधन जुटाये जाते है, उसके उपयोग हो इसके लिए लोगों में इच्छा पैदा की जाती है। बाजार के लिए माल पैदा करने के स्थान पर पैदा किये हुए के लिए बाजार ढूँढना, न मिले तो बाजार पैदा करना आज की अर्थनीति का प्रमुख अंग बन गया है। आरंभ में उत्पादन उपभोग का अनुसरण करता था, अब उपभोग उत्पादन का अनुचर है।

हम चाय का ही उदाहरण लें। चाय की माँग थी, इसलिए चाय नहीं पैदा की गई। किन्तु चाय पैदा की गई और इसलिए हमें पीना सिखाई गई। हम जब

चाय पीते हैं। वह हमारे जीवन का एक अंग बन गई है। इसी प्रकार हम आजकल वनस्पति तेल का उपभोग कर रहे हैं। क्या हमने कभी इसकी माँग की थी? वास्तव में वनस्पति पैदा किया गया और फिर हमें उसका उपभोग सिखाया गया। जो कुछ पैदा होता है यदि उसका उपभोग न करें तो वहाँ पर मन्दी आ जावेगी। 1930-32 की मन्दी का जमाना हमें याद होगा। उस समय माल तो था पर उसकी खपत नहीं थी, इसलिए धड़ाधड़ कारखाने बन्द होते जाते थे। दिवाले निकल रहे थे तथा बेकारी बढ़ती जाती थी। इसलिए आज महत्व की वस्तु यह हो गई है कि पैदा माल की खपत हो जाय।

अंग्रेजी के साप्ताहिक ऑर्गनाइजर के संपादक कुछ वर्ष पूर्व अमरीका गये थे। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने एक मजेदार घटना बताई। वहाँ आलू छीलने का चाकू बनाने का एक कारखाना है। उस कारखाने का उत्पादन इतना बढ़ गया कि लोगों की आवश्यकता से ज्यादा पैदा करने लगा। अतः प्रश्न पैदा हुआ कि लोग चाकू अधिक संख्या में खरीदें इसका कोई तरीका ढूंढा जाए। कारखाने के सेल्समेनों की बैठक हुई। एक सुझाव रखा गया कि यदि चाकू के बेंटे का रंग आलू के छिलके जैसा ही बनाया जाय तो आलू छीलने क बाद छिलके के साथ चाकू को भी कूड़े की टोकरी में फेंकने की संभावना बढ़ जाएगी। इस प्रकार माल की अधिक खपत होगी। चाकू को आकर्षक बनाने के लिए सुन्दर पैकिंग की भी व्यवस्था की गई। अब यह अर्थव्यवस्था उपभोग प्रधान न होकर विनाशोन्मुख है। पुराना फेंको और नया खरीदों। नया खरीदने की चाह उपभोक्ता में पैदा करना, मांग पूरी करना नहीं, मांग पैदा करना यही आज अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हो गया है।

प्रकृति की मर्यादा न भूलें

किन्तु उत्पादन का संबंध प्राकृतिक साधनों से भी है। यदि अन्धाधुन्ध उत्पादन बढ़ाते गए तो ये प्राकृतिक साधन कब तक साथ देंगे? कुछ लोग यह कहकर समाधान कर देते हैं कि यदि एक प्रकार के साधन समाप्त हो गए तो दूसरी प्रकार की वस्तुओं की खोज हो जाएगी। नये इंस्टीट्यूट ढूँढे जा सकते हैं। उनके इस तर्क में निहित बल को स्वीकार करने के बाद भी यह कहना पड़ेगा कि प्रकृति की सम्पदा अपार होने पर भी उसकी मर्यादा है। यदि बड़ी तेजी के साथ आवश्यक रूप से हम उसका खर्च करते गए तो एक दिन हमें पछताना पड़ेगा।

प्रकृति से उच्छृंखलता

प्रकृति की संपदा की मर्यादा की चिन्ता न भी करें तो कम से कम इतना तो हमें मानना ही पड़ेगा कि प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं के बीच एक परस्परावलंबी सबन्ध हैं। एक-दूसरे के सहारे खड़ी तीन लकड़ियों में से यदि हम एक की स्थिति में परिवर्तन कर दें तो शेष दो अपने आप गिर जाएंगी। आज की अर्थव्यवस्था और उत्पादन की पद्धति इस सामंजस्य को बड़ी तेजी से बिगाड़ती जा रही है। परिणामतः जहाँ एक ओर हम नये-नये प्रश्न हमारी संपूर्ण सभ्यता और मानवता को समाप्त करने के लिए पैदा होते जा रहे है।

हम प्रकृति से उतना तथा इस प्रकार लें कि वह उस कमी को स्वयं पुनः पूरित कर ले। पेड़ से फल लेने में उसकी हानि नहीं होती, लाभ होता है। पर भूमि से अधिक फसल लेने के लोभ में हम ऐसे उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं जिनसे कुछ दिनों के बाद उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है। आज अमरीका मे लाखों एकड़ भूमि इस प्रकार की खेती के कारण ऊसर हो चुकी है। यह विनाशलीला कब तक चलती रहेगी?

कारखानेदार मशीन आदि के लिए घिसाई-निधि की व्यवस्था करता है। परन्तु प्रकृति के इस कारखाने के लिए हम किसी भी घिसाई निधि की चिन्ता न करें, यह कैसे हो सकता है, इस दृष्टि से विचार किया जाए तो कहना होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य अमर्यादा उपभोग नहीं अपितु संयमित उपभोग होना चाहिए। सोद्देश्य, सुखी, विकासमान जीवन के लिए जिन भौतिक साधनों की आवश्यकता है वे अवश्य ही प्राप्त होने चाहिए। भगवान की सृष्टि का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उतनी व्यवस्था उसने की है। किन्तु जब हम यह समझ कर कि भगवान ने मनुष्य को केवल उपभोग प्रवण प्राणी बनाया है और उसके लिए अन्धाधुन्ध उपभोग के लिए ही अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करें, तो यह ठीक नहीं। इंजिन को चलाने के लिए कोयला चाहिए। किन्तु कोयला खाने के लिए इंजिन नहीं बनाया गया।

प्रत्युत हमारा प्रयत्न तो यही रहता है कि कम से कम ईंधन से ज्यादा से ज्यादा शक्ति कैसे पैदा हो। यह बचत का दृष्टिकोण है। मानव जीवन के उद्देश्य का विचार करके हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वह न्यूनतम ईंधन से अधिकतम गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकें। यह अर्थव्यवस्था माननी होगी। यह मानव के एक पहलू का विचार न कर उसके पूर्ण जीवन का तथा अन्तिम उद्देश्य का विचार करेगी। यह संहारात्मक न होकर सृजनात्मक होगी। यह प्रकृति के शोषण पर निर्भर न रहकर उसके पोषण पर निर्भर रहेगी। शोषण नहीं, दोहन हमारा आधार होना चाहिए था। प्रकृति का स्तन्य हमारे लिए जीवनदायी हो, यही व्यवस्था करनी चाहिए।

पश्चिम के घातक आर्थिक नारे

अर्थव्यवस्था का यह मानवी उद्देश्य रहा तो आर्थिक प्रश्नों की ओर देखने की हमारी दृष्टि बदल जायेगी। पश्चिम की अर्थव्यवस्था में, वह पूंजीवादी हो या समाजवादी, मूल्य को अत्यन्त महत्व का एवं केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। उसके चारों ओर ही संपूर्ण आर्थिक विचार चक्कर लगाता रहता है। एक नैयायिक की दृष्टि से मूल्य सबन्धी विश्लेषण का चाहे जो महत्व हो किन्तु उसके आधार पर जो जीवनदर्शन बने हैं वे बहुत ही अधूरे, अमानवीय एवं कुछ अंशों में नीति-विहीन भी हैं। एक उदाहरण लें। आजकल का नारा लगाया जाता है कमाने वाला खाएगा। सामान्यतया यह नारा कम्यूनिस्ट लगाते हैं, किन्तु पूंजीवादी भी इस नारे के मूल में निहित सिद्धान्त से असहमत नहीं। यदि दोनों में झगड़ा है तो इसी बात का कि कौन कितना कमाता है। पूंजीवादी साहस और पूँजी को महत्व देते हैं और इसलिए खाने में उनका प्रमुख भाग रहा तो उसे वे उचित ही मानते हैं। दूसरी ओर कम्यूनिस्ट श्रम को ही निर्माण मानते हैं, इसलिए वे श्रमिक को ही खाने का अधिकार देते हैं।

ये दोनों ही विचार ठीक नहीं हैं। वास्तव में तो हमारा नारा होना चाहिए 'कमाने वाला खिलायेगा' तथा जन्मा सो खायेगा। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। कमाने की पात्रता शिक्षा से आती है। समाज में जो कमाते नहीं वे भी खाते हैं। बच्चे, बूढ़े, रोगी, अपाहिज सबकी चिन्ता समाज को करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज इस कर्तव्य का निर्वाह करता है। मानव की सामाजिकता और संस्कृति का मापदण्ड इस कर्तव्य के निर्वाह की तत्परता ही है। इस कर्तव्य के निर्वाह की क्षमता पैदा करना ही अर्थव्यवस्था का काम है। अर्थशास्त्र इस कर्तव्य की प्रेरणा का विचार नहीं कर पाता। काम तो मनुष्य अपने इस कर्तव्य के निर्वाह के लिए करता है, अन्यथा जिनकी भूख मिट गई है वे काम ही नहीं करेंगे।

न्यूनतम स्तर

मानव के नाते भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है। रोटी, कपड़ा और मकान मोटे रूप में इन आवश्यकताओं की अभिव्यंजना करते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति को समाज के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए सक्षम बनाना भी समाज का आधारभूत दायित्व है। और किसी भी प्रकार के अस्वास्थ्य की दशा में व्यक्ति को स्वस्थ्य बनाने की व्यवस्था करना तथा उसके निर्वाह की व्यवस्था करना भी समाज का काम है। इतना कम से कम जिस राज्य में हो वही धर्मराज्य है, नहीं तो अधर्म राज्य है। ▪

मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रदेश संगठन महामंत्री जी ने स्वतंत्रता दिवस पर प्रदेश कार्यालय में ध्वजारोहण किया।

मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष व संगठन महामंत्री जी ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी जी की जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की।

संसद के बाहर स्थित राष्ट्रपिता जी की प्रतिमा के समक्ष प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने वंशवाद, परिवारवाद व तुष्टिकरण के विरूद्ध प्रर्दशन किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने अटल कुंज रीवा में रीवा एवं शहडोल संभाग की संभागीय बैठक को संबोधित किया।

राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग की संभागीय बैठक को संबोधित किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने रीवा के सिरमौर मे कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया।

केंद्रीय कृषि मंत्री एवं चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी ने उज्जैन में संभागीय बैठक को संबोधित किया।

मोदी
सदस्यता
अभियान 2023
भाजपा से जुड़ने के लिए
7000 230 230
पर मिस्ड कॉल करें